प्रथम पुष्प

समस्त हिन्दू समाज में प्रचलित, गणगीतों एवं भारतीय राष्ट्रीय विचार - धारा से ओत-प्रोत अनुपम कविताओं का संग्रह

सम्पादक:

साहित्यालङ्कार

प्रकाशक- देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, देहली

शंख नाद

समस्त हिन्दू समाज में प्रचलित, गणगीतों एवं भारतीय राष्ट्रीय विचार धारा से ओत-प्रोत अनुपम कविताओं का संग्रह

सम्पादक

रघुवीर शरण बंसल

साहित्यालंकार

प्रकाशक

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाज़ार देहली

प्रथम संस्करण   सम्वत २००७   मूल्य १॥)

प्राप्ति स्थान
राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल
चावड़ी बाजार, दिल्ली।

भारत भर के प्रत्येक ग्राम तथा नगर में प्रति दिन
गाए जाने वाले गीतों तथा गणगीतों का
अनुपम संग्रह।

जय घोष

(सम्पादक—श्री रामेश्वर 'अशांत')

द्वितीय संशोधित, सुसज्जित तथा परिवर्द्धित संस्करण।

पुस्तक मंगाने का पता—
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार दिल्ली।

मुद्रक—
लोकमान्य प्रेस
दरिया गंज, दिल्ली।

जिसने हमें ज्योति दिखाई

(परम पूजनीय आद्य सर संघ चालक—
डा० केशवराव बालीराम हेडगेवार)

हम सभी का जन्म तव, प्रतिबिम्ब सा बन जाय।
और अधूरी साधना, चिरपूर्ण बस हो जाय॥

हे ! मेरे आराध्य देव ।

(परमपूजनीय माधवराव सदाशिव गोलवलकर 'गुरूजी')

तुमको जयमाल समर्पित है, तुमको वनमाल समर्पित है ।
और तुम्हें क्या दे मेरा कवि, अन्तर्ज्वाल समर्पित है ।

—वसल

आज जिनके प्रति देश एक आशा लगा कर बैठा
है, जिनके दर्शन मात्र से, सभी व्यक्ति
एक नवीन उत्साह प्राप्त करते हैं,
जिनके इंगित पर प्राणों
को बाजी लगाने
वाले करोड़ों.
बाल तरुण
वृ द्ध
उत्सुक
हैं
उन्ही भारतीय नौका के केवट
श्री 'गुरू जी' को 'शंखनाद'
समर्पित

(. ११. ६४८

भूमिका

हमारे देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति हो गयी है, परन्तु हम अंग्रेजी प्रभाव को अपने सामाजिक और राजनीतिक जीवन के किसी भी पहलू से पृथक नहीं कर सके हैं। डेढ़ शताब्दी की अंग्रेजी पराधीनता ने वस्तुतः हमारी उतनी राजनीतिक क्षति नहीं की जितनी सांस्कृतिक अंग्रेजों की पराधीनता का जुआ अपने कन्धों से उतार फेंकने के पश्चात भी हमारा मन अंग्रेजी आदर्श, परम्परा, रीति रिवाज, भाव, भाषा, वेश आदि का इतना अधिक दास बना हुआ है कि हमारे नेता तक अपना एक एक पग उठाने से पूर्व पश्चिम की ओर देखना आवश्यक मानते हैं। अतः आज हमारे देश की जनता में राष्ट्रीयता, भारतीयता और आत्माभिमान आदि के भावों का उद्बोधन करने की जितनी आवश्यकता है उतनी शायद देश की पराधीनता के समय भी नहीं थी।

प्रस्तुत पुस्तिका 'शंखनाद' ऐसे गीतों और कविताओं का एक चयन है जो उक्त भावों से ओत-प्रोत हैं। यह मानी हुई बात है कि अच्छे गीत और कवितायें जनता में किसी भी भाव का प्रचार करने का प्रबल और सफल साधन होते हैं। निरक्षर और अशिक्षित लोग भी उनके द्वारा आकृष्ट हो जाते हैं और बहुधा बिना विशेष प्रयास के उन्हें कण्ठस्थ कर लेते हैं। इस पुस्तिका में संगृहीत गीतों में से अनेक गीत पहले ही देश के कई भागों में प्रचलित और लोकप्रिय हैं। कई गीतों का प्रचार तो इतना व्यापक हो चुका है कि उनके रचयिताओं का नाम तक किसी किसी को ही ज्ञात है। यह गीत या कवितायें अब केवल लेखक और प्रकाशक की वस्तु न रह कर जन-साधारण की सम्पत्ति बन चुके हैं। इस पर भी सम्पादक ने यत्न किया है कि गीतों और कविताओं का चयन करते हुए उनके रचयिताओं का नाम तथा परिचय भी साथ साथ दे दिया जाय। वह सब रचनाओं के विषय में ऐसा नहीं कर सका। उसे स्वयं ही अनेकों गीतों के रचयिताओं के नामादि ज्ञात नहीं थे।

संगृहीत गीतों और कविताओं में अनेक गीत ऐसे हैं जिन को लोकप्रिय बनाने में राष्ट्रीय-स्वयंसेवक-संघ का तथा उसके कार्यकर्ताओं का बहुत हाथ रहा है। परन्तु वैसा करते हुए उनका लक्ष्य केवल संघ के किसी प्रयोजन की सिद्धि नहीं था, अपितु वे जिन भावनाओं को राष्ट्र के लिए उपयोगी मानते थे, उन को भारतीय जनता में प्रचार करना मात्र था। प्रस्तुत संग्रह से उन विचारों' भावनाओं और आदर्शों का प्रचार होने में कुछ और सहायता मिल सकेगी।

अनेक गीतों और कविताओं में, विशुद्ध राष्ट्रीयता के अतिरिक्त हिन्दुत्व अथवा हिन्दुराष्ट्रीयता के भाव अन्तर्निहित हैं। कुछ लोगों का इन से मत-भेद हो सकता है। परन्तु मुझे निश्चय है कि देश की जनता का बहुत बड़ा भाग, बिना किसी सूक्ष्म तर्क-जाल में उलझे, इन भावों को न केवल पसन्द ही करता, इन से उत्साहित तथा अनुप्रमाणित भी होता है। अन्ततोगत्वा भारत की राष्ट्रीयता भारत की परम्पराओं' भारत के इतिहास, भारत की संस्कृति और भारत की भूत तथा वर्तमान परिस्थितियों से सर्वथा विच्छिन्न होकर नहीं रह सकती। अतएव हिंदु राष्ट्रीयता कोई अस्वाभाविक या अनिष्ट वस्तु नहीं है। हां, वह इतनी संकीर्ण अवश्य नहीं होनी चाहिये कि उसमें नये विचारों को अपनाने का सामर्थ्य नष्ट हो जाय अथवा वह प्रत्येक अहिंदू से घृणा या द्वेश करने लगें। प्रस्तुतः गीतों में ऐसा कोई दोष नहीं है। और इसीलिये ये भारतीय जनता में वे भाव जागृत कर सकेंगे जिन की उसे आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

इन गीतों के सम्पादक श्री रघुवीरशरण बन्सल स्वयं कवि और भावुक तथा कर्मठ युवक हैं। उन्होंने बीच बीच में अपने गद्य-वाक्यों द्वारा भी भारत-माता के प्रति अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं। उन से पुस्तिका की शोभा और भी बढ़ गयी है। आशा है भारतीय जनता इस संग्रह को उत्साह पूर्वक अपनायेगी।

नया बाजार
२० मार्च, सन् ५०

रामगोपाल विद्यालंकार

दो शब्द

— संपादक

लिखना किसी के लिए वैसे भी कठिन है और खास तौर से अपनों के लिए। बंसल को मैंने जब से देखा, अपनापन पाया। और देखा कि नयी पीढ़ी के इस साहित्यकार की रचनाओं में नया खून है, नया जोश है, नये विचार हैं।

उनके विचारों से मेरा स्वयं का मतभेद है, लेकिन उसकी स्पष्टता से इनकार नहीं किया जा सकता। उस स्पष्टता में विश्वास है और विश्वास में जोर।

देश की जवानी आज के धर्म, समाज और दुनिया से ऊब चुकी है—बंसल भी उनमें एक है।

आज का साहित्यकार चौराहे पर खड़े दिशा-निर्देशक की स्थिति में न होकर भूले पथिक की स्थिति में है, और राहों की भूल भुलैयों में उसका विश्वास डगमगा जाता है।

पर मैं विश्वास करता हूँ कि बंसल में चौराहे तक पहुँचते-दिशा-ज्ञान और विचारों में प्रौढ़ता आ जायगी।

मैं अध्ययन शील, श्रमिशील और चिंतनशील नयी पीढ़ी के इस नये साहित्यकार का राष्ट्रभाषा के मन्दिर में हृदय से स्वागत करता हूँ।

मतवाला-कार्यालय,
दिल्ली १४ । ३ । ५०

शैलेन्द्रकुमार पाठक

काव्य और उसकी उपयोगिता

कविता के साथ मेरा एक अपना और कुछ कुछ आश्चयजनक सम्बन्ध है। जीवन संघर्ष जब अत्यन्त कटु हुआ है और जी चाहता है कि आत्महत्या कर ली जाय तब मैं अपना प्रिय काव्य संग्रह उटाता और कुछ मिनिटों में ही उनके अदृश्य परन्तु परिपूर्ण रस-सागर में डूब जाता रहा हूं। ब्रह्मानन्द सहोदर के उस अनिर्वचनीय स्पर्श ने मेरे अन्तर की पुंजीभूत ग्लानि अनायास ही दूर की है और एक नई रणा, एक नवीन आलोक एवं उसके निकट तक पहुंचने की एक प्रबल शक्ति दी है।

मुझे ऐसा जान पड़ता है कि हमारे भारत राष्ट्र के अधिकांश निवासी आज आत्महत्या की स्थिति में हैं। कुछ का जीवन संग्राम इतना विकराल हो गया है कि उनके अन्तर से अपने पड़ोसी के सुख दुख प्रभावित होने वाली चेतना तक लुप्त हो गई है। कुछ ऐसे हैं कि उनके अन्तर में ऐश्वर्य की तृष्णा अपनी असख्य लोल जिह्वाओं के साथ जाग्रत हो गई है, वे ससागरा धरा को उदरस्थ कर जाने के बाद भी डकार नहीं लेना चाहते। वे मदिरा को रस मान बैठे हैं और अपनी उद्भ्रान्तावस्था में राष्ट्रीय जीवन को नित नये कदाचारों से कलुषित कर रहे हैं। पहली श्रेणी के लोग यदि जीवन को जंजाल समझने के लिए विवश हो रहे हैं तो दूसरी श्रेणी के लोग गर्व के साथ अपना ही गला काट रहे हैं!

यदि हम मनुष्य हैं, चराचर जगत् के साथ हमारी कोई आत्मीयता है, ऐसी आत्मीयता है जिसकी अनुपस्थिति में हमारा मानव-जन्म ही व्यर्थ हो जाता है और यह जगत् भी सौंदर्य का अक्षय भण्डार न रह कर परमाणु के विस्फोट से ध्वस्त ऐसा भू भाग बन जाता है जिस पर विकलांग प्राणियों की किंभूताकिमाकार सृष्टि होती है तो हमें इस

आत्मघाती स्थिति से बाहर आना ही पड़ेगा। अपने अनुभव के आधार पर मेरा विश्वास है कि जीवन को रस-सिक्त करने वाली कविता हमारा निश्चित उद्धार कर सकती है।

इसी विश्वास के साथ मैं अपने प्यारे भाई बंसल जी के इस संग्रह का स्वागत करता हूँ। बंसल जी को अत्यन्त निकट से देखने और उनके साथ काम करने का अवसर मुझे मिला है। उनके अन्तर में एक प्रचंड लगन है, एक अदम्य कर्मठता है जो मिट्टी की धरती पर सोने का स्वर्ग खड़ा करती है। संग्रह की रचनाएं यद्यपि संग्रहीत हैं, फिर भी उनके साथ पारखी की अपनी रुचि सम्मिलित हो गई है और संग्रह उसके अपने अन्तरका प्रतिबिम्ब बन गया है। जिस साहित्यकार के जीवन और साहित्य में एक रूपता नहीं है उस पर विशेष श्रद्धा रखने की शक्ति मैं अब तक संचित नहीं कर सका। जिस साहित्यकार की रचना में उसका अन्तर ही प्रफुल्लित हुआ है, वही अपने पाठक के साथ तादात्म्य स्थापित करता है, उसी की रचना से साहित्य का वास्तविक अर्थ सफल होता है। बंसल जी की रुचि और दृष्टिकोण से मतभेद हो सकता है परन्तु खरे सोने की चमक तो सदा ही प्रसन्न करती है। संग्रह की रचनाओं में देश प्रेम एवं उसके लिए त्याग तथा बलिदान की जो भावनामयी त्रिवेणी मिलती है, उसमें अवगाहन करना भी आजकी सबसे बड़ी आवश्यकता है।

मेरा अनुरोध है कि भाई बंसल जी अपने इस सद् प्रयत्न को अग्रसर करते रहें और रचनाओं का मानदण्ड उत्तरोत्तर उन्नत होता रहे।

अमर भारत कार्यालय, दिल्ली।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २००७

उपाध्यक्ष, दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी साहित्य
सम्मेलन दिल्ली।

भारत माता की वंदना—

"शंखनाद" नाम की इस पुस्तक के कुछ पन्ने मैंने छपे हुए देखे। कुछ कवितायें मैंने पढ़ीं। भारत माता की वन्दना हमारी राष्ट्रीयता का पहिला पाठ है, जिसकी कि आज हमें राष्ट्रधर्म में दीक्षित होने के लिये सबसे अधिक आवश्यकता है। देश की स्वतन्त्रता का मोर्चा तो हमने जीत लिया, किन्तु उसकी रक्षा करते हुए उसके निर्माण का जो महान कार्य हमें करना है, वह वैसे कई मोर्चों को जीतने से भी कहीं अधिक बड़ा, महान और गुरुतर है। इसी लिए भारतमाता की वन्दना की हमें पहिले से भी कहीं अधिक आवश्यकता है।

हिंदू को एक राष्ट्र तो मिल गया; किन्तु राष्ट्रीय भावना अभी यथेष्ट रूप में उदीप्त नहीं हो सकी। अनेक धर्म ग्रन्थों, अनेक धार्मिक सम्प्रदायों, अनेक धार्मिक विश्वासों, अनेक धार्मिक नारों और अनेक प्रकार के आचार-विचार-मूलक सामाजिक जीवन में उलझे हुए हिन्दू में एकसम राष्ट्रीय दृष्टि, राष्ट्रीय-भावना और राष्ट्रीय आकांक्षा कैसे पैदा की जा सकती है? केवल एक ही उपाय से। वह यह कि वह भारत माता की दिव्य मूर्ति को अपनी आराध्य देवी मान ले, उसकी वंदना को अपने लिए सर्वोच्च कर्म काण्ड स्वीकार कर ले, उसके प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा को अपना सबसे बड़ा धर्म समझ लें और उस स्तुतिपाठ को अपने लिए सबसे बड़े धर्मग्रन्थ के रूप में ग्रहण कर ले। यह संग्रह इस प्रेरणा, स्फूर्ति और अनुभूति को जगाने में सहायक हो सकता है—इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। यही इसकी उपादेयता और उपयोगिता है। इसलिए इसके सम्पादक और प्रकाशक हार्दिक बधाई के अधिकारी हैं।

प्रधान सम्पादक 'अमर भारत'
दिल्ली।

सत्यदेव विद्यालंकार

राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल

— की —

स्थापना क्यों ?

हमने अपने मण्डल के आधीन, प्रत्येक मास भारतीय संस्कृति, एव राष्ट्रीय विचार धारा से ओत-प्रोत साहित्य को जनता के हाथ, कम से कम मूल्य पर देने का निश्चय किया है। मण्डल ने अभी तक जितनी भी पुस्तकें प्रकाशित की हैं, वह सब हिन्दी साहित्य में ऊंचा स्थान रखती हैं। राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल का एक मात्र उद्देश्य, भारतीय जनता के हाथों में अधिक से अधिक लाभप्रद साहित्य देना है, उससे केवल धनोपार्जन करना नहीं।

आशा है, जिस प्रकार आप अब तक राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल को अपना समझ कर इसके साथ सहयोग करते रहे हैं, भविष्य में भी सहयोग देते रहेंगे।

आपका

मूलचन्द गुप्ता

संचालक

राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल

चावडी बाजार

दिल्ली

मंघ भवन के दो मुख्य स्तम्भ

सर कार्यवाह

(अ० भा० निधी प्रमुख)

(श्री भय्या जी दाणी)

(श्री बालासाहिब देवरस)

जिनके गुण गाती है दिल्ली। (अ० भा० शारीरिक प्रमुख)

(श्री वसन्त कृष्ण ओक एम० ए०)

भूतपूर्व दिल्ली प्रांत प्रचारक। अब आप अ० भा० कार्यकर्त्ता हैं।

अपनी बात

मनुष्य कभी कुछ सोचकर काम करता है और उस का रूप कुछ अन्य ही हो जाता है। मैं श्री मूलचन्द्र जी संस्थापक देहाती पुस्तक भण्डार से अपनी कविता जो 'जयघोष' में प्रकाशित हुई है, अशुद्ध प्रकाशित होने पर शिकायत करने गया था किन्तु वहां पर लडाई तो दूर एक जिम्मेदारी मेरे सिर पर आ पडी।

उस उत्तरदायित्व को मैंने कहां तक निभाया है, इसका निर्णय पाठक स्वय करेंगे। पुस्तक 'शंखनाद' आपके हाथों में है भली या बुरी आपकी ही वस्तु है, जिसे प्रेमसे आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा।

पुस्तक में जितने भी कोरस हैं, उनका आज की परिस्थति में संशोधन करना परमावश्यक जान पडा। जिन ओजस्वी कविताओं को हम ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के लिये लिखा था उन में उनका सुधार करना आज के युग में परम आवश्यक था। जिन कवियों के नाम मुझे मालूम हो सकते थे, उनको देने का तथा उनके परिचय को मैंने अवश्य प्रकाशित किया है। जिन कवियों की पुस्तक में रचनायें हैं, वह अपने नाम अवश्य देने की कृपा करें, जिनसे मैं उनकी भविष्य में अधिक सेवा कर सकूं।

जहां तक पुस्तक में भाषा दोष एवं शब्द रचना का प्रश्न है। यह मेरे लिये कठिन वस्तु हैं। आलोचक गण पुस्तक में यदि

काव्य दोष को देखेंगे तब पुस्तक अधिक रुचिकर नहीं होगी इस में तो केवल यही है:-

मेरे गीत, तड़प बिजली की
हिला - हिला देते पाषाण।
छन्द कला सब व्यर्थ, कि जब
बरबस फूटे प्राणों से गान।

हो सकता है कि पढ़ने वाले इन गीतों को हिंसा वादी कह कर पुकारे और मुझे भी यही समझें। आज अहिंसा का युग है किन्तु सच्ची अहिंसा को स्थापित करने के लिये प्रथम हिंसात्मक वृतियों को अपनाना ही पडता है। इतिहास इसका साक्षी है और आज के युग में कांटे को कांटे से ही निकाला जा सकता है।

अन्त में,

मैं अपने गुरूजनों, जिन्होंने मुझे पत्रकार कला में एक नवीन निर्देशन दिया और इस पुस्तक की भूमिका लिखकर मेरा साहस बढ़ाया, पं० रामगोपाल जी विद्यालंकार, तथा अन्य पूज्यनीय आदरणीय भाई सत्यदेव जी विद्यालंकार, श्री माधव एवं तरुण कवि पं० शैलेन्द्र कुमार पाठक का हृदय से आभारी हूं। आशा है वह मुझे आगे भी इसी प्रकार उत्साह देते रहेंगे।

पुस्तक को आपके हाथों अर्पित करता हूं।

'अमर भारत' देहली
वर्ष प्रतिपदा स० २००७

(हस्ताक्षर)

अनुक्रमणिका

कवितायें

गीत संख्या	शीर्षक	

गीत संख्या	शीर्षक	पृष्ठ
४७	चेतक को लड़ते देखा	१२४
४८	हिंदूपन की ज्वाला हो	१२५
४६	भारत	१२६

सामयिक गणगान

२८	प्रबुद्ध शुद्ध भारती	१२६
२६	जाग उठा फिर	१३०
३०	विजय पराजय से क्या	१३१
३१	वंदनीय है भारत भूमि	१३२
३२	वही पुरातन गान	१३२
३३	होता उसीका नाश है	१३३
३४	चले चलो जवान	१३३
३५	अभिमान है हिन्दू	१३५
३६	राष्टनाश का प्रतीक	१३६
३७	शिवराज बनाना है	१३८
३८	कर सकते क्या	१४०
३६	चलने का वर दे दो	१४१
४०	ताज बन कर जी	१४२
४१	हमको आगे बढ़ना है	१४३
४२	कदम कदम बढ़े चलो	१४३
४३	बसी नई एक दुनिया है	१४४
४४	संघ चाहता है	१४५
४५	हिन्दी हिन्दू हिदूस्थान	१४६
४६	हिंदू निजको पहिचान	१४७
४७	फिर जाग उठी वह सुप्त ज्वाल	१४८
४८	वही है भारत की संतान	१४६

भारत माता के प्रति

मातृ - मातेश्वरी !

जननी के दूध ने केवल शरीर का पालन पोषण किया, परन्तु तेरी रजसे हम सभी भारतियों का शरीर बढ़ा, सम्पन्न हुआ। तेरे अंक में ही हम खेले और कूदे, अपने को इस योग्य बनाया कि आज विश्व में महान कहला रहे हैं। तेरे उपकारों का वर्णन मेरी क्षुद्र लेखनी तो क्या—देश के सभी व्यक्ति अपनी वाणी और लेखनी से नहीं कर सकते। मर्यादा-पुरुषोत्तम्-महामानव राम ने भी केवल यही कहा है।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"।

तेरे बारे में भारतीय पुत्रों ने सरस्वतीका कण्ठ लेकर जो गान किया है, इन सभी पुष्पों को तेरी सेवा में चरणों पर चढ़ा रहा हूँ। मां ! इस कार्य में मेरा कोई श्रेय नहीं, मैं तो उपवनके पुष्पों को एकत्रित ही कररहा हूँ, पुष्पों के निर्मातातो अन्यही हैं जिन्हों-ने तेरे लिये कुछ लिख कर, अपने जीवन को सफल बनाया।

माँ !

मन्दिर के द्वार तक पुजारी आगया है, भेंट स्वीकार करो या नहीं। यह आपका काय है।

तेरा

तेरे सुतों में से ही एक

(signature)

(गीत १)

माँ विजय, वर दे !

तोड़ पाप की अक्षय कारा,
पुण्य धरा कर दे।
मिटे दुसह संताप विश्व का,
शांति सुधा भर दे।
मां बिजय वर दे।
युग युग से संचित कलिमष का
मिटं बिंदु शुभदे !
मानव, मानवता अपनाए,
दानवता चर दे !
मां विजय वर दे !

(गीत २)

वंदहू श्री भरत भूमि सर्व सेव्य माता।

चन्दन सम ताप हरनि, शस्य पूर्ण श्याम बरनि
त्रिपुल सुजल सुफल धरनि, धवल सुयश ख्याता
हिमगिरि के तुंग शृंग,
किरीट मुकुट उत्समंग,
युगल बाहु कच्छ बंग,
अभय वर प्रदाता ॥
सिन्धु ब्रह्मपुत्र भेष,
लहरें युग और केश,
बृदंरावन मन सुवेश,
विमल बुद्धि दाता ॥

(गीत ३)

भारत धरणी शस्य श्यामला हारी

वन्दे जननी भारत धरणी शस्य श्यामला वारी ।
नम नमो सब जग की जननी तीस कोटि सुत वारी ॥
सुन्दर भाल हिमालय उन्नत—हिममय मुकुट विराजे उन्नत ।
चरण पखारे विमल सिन्धु जल, श्यामल अचंल धारी ॥
गंगा यमुना सिन्धु नर्वदा—देती पुन्य पियूष सर्वदा
मथुरा द्वारा पुरी पुन्यदा—विचरे जहां मुरारी ॥
कल्याणी तू जग की मित्रा—नैसर्गिक सुषमा सविचित्रा ।
तेरी लीला सुभग पवित्रा—सब सुर नर जन वारी ॥
मंगल कारिणी संकट हारिणी दरिद्र हर विज्ञान वितरणी ।
कवि मुनि सूर जनों की धरती हरती भ्रमतम भारी ॥
शक्ति शालिनी दुर्गा तू है—विभव पालनी लक्ष्मी तू है ।
बुद्धि दायिनी विद्या तू है—सब सुर सिरजन हारी ॥
जग मे तेरे लिये जियेगें—तेरा प्रेम पियूष पियेगें ।
तेरी सेवा सदा करेगें—तेरे सुत बल धारी ॥

गीत ४

मातृ भूमि वन्दन।

जन्म भूमि वन्दना मातृ भूमि वन्दना ।
राग भूमि, त्याग भूमि, भाग भूमि अर्चना ॥

विश्व में उठा हिमाद्रि का विशाल भाल है।
सिन्धु ब्रह्मपुत्र गंग मन्जु कंठ माल है ॥
है समुद्र धो रहा, सदैव पांव चूमता ।
फूल है चढ़ा सुगन्ध, पा समीर फूलता ॥

चांदनी हंसी खिली ।
वायु प्राण सी मिली ॥
हा तुझे निहार, स्वर्ग की समस्त कल्पना—
जन्म भूमि बन्दना........॥१॥

धाम मेह धार शीत और हेम अन्त है ।
पत्र झाड़ फूल गूथता हुआ बसन्त है ॥
है गम्भीर गर्जना कभी सहस फुंकार है ।
चंचला चमक कहीं, सुरज इन्द्र धार है ॥
आरती उतारती,
वेश को सवारती ।
मूर्तिमान हो गई जहां स्वरूप कामना—
जन्म भूमि बन्दना........॥२॥

देश में अनेक वर्ण, वर्ग जाति धर्म है ।
भाव है अनेक, बोल है अनेक कर्म है ॥
कोटि कोटि रूप में, किन्तु प्राण एक है ।
मान एक ज्ञान एक, ध्यान एक गान है ॥
एक आज शक्ती है,
एक भाव भक्ती है ।
कोटि कोटि प्राण की विभिन्न आज भावना—
जन्म भूमि बन्दना........॥३॥

आज कोटि २ को जिसे कि बाहुबल मिला ।
कौन कह रहा कि आज वीरभूमि निर्मला ॥
आज जागरण हुआ, तुम सदा स्वतन्त्र हो ।
आज लोक स्वकार्य ही मन्त्र-मन्त्र यन्त्र हो ॥

आज एक कल्पना,
आज एक चिन्तना।
आज गर्जना यही समस्त-सिद्धि साधना—
जन्म भूमि बन्दना... .....॥४॥

गीत ५

धन्य हे भारत भूमि !

धन्य है भरत भूमि, लोक लोक में तेरी धूम॥
सिर अभिमान से ऊंचा करके बडा हिमालय तेरा।
तेरे तपोवन ऋषि मुनि, सब बैठे डाले डेरा॥
कहीं पै बिखरा गंगाजल है, कहीं पै यमुना डोले—
हरी भरी धरती का अंचल, नयनों से रस घोले।
प्रेम से झुककर धरती तेरी-ली आकाश ने चूम॥१॥
तुझमें बसे हैं गोकुल मथुरा बृन्दाबन और काशी।
स्वर्ग के रहने वाले जिनके दर्शन के अभिलाषी॥
राम रूप में कृष्ण रूप में, स्वयं परमेश्वर आये।
तेरी गोद में जन्म लिया, तेरे सपूत कहलाये॥
तू जननी है मेरी माता नमो नमो शत भूम॥२॥
भामाशाह समान वैश्य हो, करे देश हित दान।
शूद्र बने रैदास भक्त से, कबीर से मति मान॥
सावित्री. सीता, दमयन्ती फिर से प्रकटे आन।
दुर्गावती, लक्ष्मीबाई की फिर चमके कृपाण॥
बालक ध्रुव, प्रहलाद सहसहो धरे तुम्हारा ध्याम।
बीर हकीकत सम हो जावे, धर्म हेतु बलिदान॥३॥

गीत ६

माता के चरणों में

ए मां तेरा भगवा ध्वज हम ऊंचा उठा देंगे।
कहते हैं नहीं माता, करके भी दिखा देंगे॥
जीवन के नजारों को, जीवन की बहारों को।
ए माता तेरे बचनों पर हर चीज लुटा देंगे॥
मत भूल हमारी मां, ऐ जान से प्यारी मां।
ऋण तेरा है सर पर जो सर देके चुका देंगे॥
ए मां न निराशा हो ध्वज तेरा है ऊंचा जो।
ऊंचा ही रहेगा वह झुकने न जरा देंगे॥

गीत ७

तन मन धन मेरा काम में आवे

मातृभूमि के हित के लिये प्रभु तन मन धन मेरा काम में आवे।
बन्धनों से मुक्त है भूमि हमारी. भारत मेरा उन्नत होवे॥
देश हमारा दुश्मन ने घेरा, आन जमाया फूट ने डेरा।
प्यारे धर्म की नैया भवंर में संघ हमारा पार हो जाये॥
शेर थे हम तो शेर रहेंगे–कहने से उनके न श्वान बनेंगे।
पूज्यनीय डाक्टर साहब का कहना–हर एक हिन्दू संघमें आये॥
शेरे शिवाने धर्म बचाया–लाखों ही वीरों ने शीश कटाया।
विश्व में झण्डा अपना लहराया–हिन्दू क्यों उसको दिलसे भुलाये॥
आओ वीरो हम सब मिलकर–प्यारे गुरू के सामने झुककर।
संघ को अपने बढ़ायेंगे ऐसा शांति विश्व में जिससे हो जाये॥

(गीत ८)

भारत माँ तेरी जय हो विजय हो

तु बुद्ध तु शुद्ध तु प्रेमागार तेरा विजय सूय माता उदय हो।
आवे पुनः कृष्ण देखे दशा तेरी सरिता सरोवर में बहता प्रणयहो ॥
तेरेलिये जेलहो स्वर्ग का द्वार बेडीकी झनझनमें बीणाकी लय हो
मेरा यह संकल्प पूरा करो ईश राणा शिवाजी का फिरसे उदयहो ॥

सरस्वती बन्दना

मम हंस पै, हंस विराजनी बैठ,
अरि रसना, रस घोलती आ
उर ज्ञान के बन्ध हटा करके
नव ज्ञान के बन्धन खोलती आ
अक्षय भण्डार भरा हुआ है
वर्ण सुवर्ण सी तोलती आ
कविता सुर सरिता सी बहे मां !
मैं लिखता चलूं तू बोलती आ

भारत के प्रति

मेरे पावन स्वदेश !

विश्व के अध्यात्मिक गुरू ! मानव जीवन का अध्यन करने एवं कराने वाले आदिऋषि ! संसार में अपने कला-कौशल विज्ञान साहित्य का प्रभाव डालने वाले ब्रह्मा ! अपने में ही अपूर्ण पूर्ण शिवशंकर ! आज तू पुनः एक बार अगड़ाई लेकर जागा है। सुप्त निद्रा से परकीय दासता में तेरी बुद्धि एवं शरीर दोनों ही कलुषित हो चुके हैं। अब इस वृत्ति को छोड़ और पुनः विश्व में अपने तत्वों को, मानवता दानवता का भेद बता कर, भारतीय संस्कृति के रूप में प्रसारित कर। आज हम तेरे इंगित की प्रतीक्षा में कर्मवीर सैनिक बनकर खड़े हैं, आदेश पालन करने वाले कर्मवीर क्या करें ?

तीर बन कर हम चलेंगे,
हाथ में शर चाप ठाओ।
शत्रु का मर्दन करेंगे,
पाँचजन्य तुम बजाओ ॥

—सम्पादक

अ० भा० प्रचारक

श्री उमाकान्त आप्टे

संघ भवन के स्तम्भ

भूतपूर्व सरकार्यवाह

श्री अप्पाजी जोशी

महाराष्ट्र के प्रांत नायक

प्रातीयसंघ चालक

(श्री काशीनाथ राव लिमिये)

प्रांतीयप्रचारक

(श्री बाबासाहिब भिडे)

(गीत ६)

प्यारा हिन्दुस्थान

शोभित शीश हिमाचल शृङ्गा ।
वक्षस्थल पर यमुना गङ्गा ।
सिंचित युक्त - बिहार अरु बङ्गा ।

हरे भरे मदान !
प्यारा हिन्दोस्थान !!

सागर चरण पखार रहा है ।
हिमगिरि भी ललकार रहा है ।
रवि, आरती उतार रहा ।

जय गौरव-गुण-खान !
प्यारा हिन्दोस्थान !!

मलयानिल क पंखे चलते ।
चन्द्र-सूर्य के दीपक जलते ।
ग-पग हीरे लाल निकलते ।

है रत्नों की खान !
प्यारा हिन्दोस्थान !!

यहीं राम अवतार लिया था ।
कंस, कृष्ण ने मार .दिया था ।
बुद्ध विश्व उद्धार किया था ।

घर-घर हैं भगवान !
प्यारा हिन्दोस्थान !!

(गीत १०)

हमारा प्रियतम भारत देश

हिमगिरि की चोटी से चलकर,
साथ परम पावन जल भर कर,

सरितायें आतुर सी बहती,
मिलते नाथ महेश ॥१॥ हमारा प्रियतम......

हरित धरा का वेश सुहाता,
मन्द अनिल, यों बहता आता,
गोधन लेकर चले गोप गण,
सज कर नाना वेश ॥२॥ हमारा प्रियतम......

देश हमारा स्वतन्त्र हुआ फिर,
हिन्दु बन्धु एकत्रित होकर,
तन मन धन निज करे निछावर,
भूले सारा द्वेष ॥३॥ हमारा प्रियतम......

एक मार्ग हो एक ही नेता,
भगवे ध्वज के नीचे ममता
पा सकते मन में यदि दृढ़ता,
मिले वही परमेश ॥४॥ हमारा प्रियतम......

इस जीवन में इन आंखो से,
सौख्य पूर्ण मां देखे ऐसे
शक्ति शक्ति दे यही प्रार्थना,
प्रभु जी दो आदेश ॥५॥ हमारा प्रियतम......

(गीत ११)

मेरे स्वदेश !

जय मातृभूमि, जय कर्म भूमि,
जय पुण्य भूमि पावन स्वदेश।
सुर–दुर्लभ, भव्य—भूमि—भारत,
जग बन्दनीय महिमा अशेष ॥

सुर—सरिता—सुधा—सार—सिंचित,
अक्षय अखण्ड बल वीर्य कोष।
जग के प्रांगण के निर्विकार,
निर्भय, निशंक, निर्भीक ओष।

वर—विद्या—वारिद, वरद वेश,
वसुधा भर के सौभाग्य रूप।
प्रिय भरत खण्ड, भारत अखण्ड,
भुजबल प्रचण्ड सब विधि अनूप।

अजेय—अजन्मा—जन्म—भूमि,
विश्वेश विष्णु के तृषित धाम।
अवतार भूमि उस ईश्वर की,
पावन पुनीत भारत ललाम।

ओ वीर प्रसविनी! वीर भूमि!
सौजन्य सभ्यता शक्ति सार।
विद्या—वैभव के केन्द्र रूप,
अनुदार विश्व को भी उदार।

साठ कोटि हाथों वाली,
मेरी मां युग से निर्भय हो।
ओ विश्वगुरू भारत तेरी जयहो—
जय हो, तेरी जय हो।

(गीत १२)

जय जय हिन्दुस्थान महान

तेरे कण कण में जीवन है,
मूर्तिमान तू नव यौवन है,

प्रलय भरी तेरी चितवन है
तू आंधी, है तू तूफान ॥ १ ॥
तेरी उन्मुक्त रक्त निशानी,
वज्र घोष है तेरी वाणी,
तेरी तलवारों का पानी,
तृप्त कर रहत प्राण ॥ २ ॥
तेरी गौरवमयी कहानी,
प्राणों में भर रही जवानी,
बलि पथ पर बन कर दीवानी,
जाती है तेरी सन्तान ॥ ३ ॥

(गीत १२)

हिमालय के प्रति

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !
साकार, दिव्य, गौरव विराट,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल ।
मेरी जननी के हिम - किरीट,
मेरे भारत के दिव्य भाल ।
मेरे नगपति ! मेरे विशाल ॥१॥
युग-युग अजेय, निबंध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान !
निस्सीम व्योम में तान रहे,
युग से किस महिमा का वितान ?
कैसी अखंड यह चिर - समाधि,
यतिवर ! कैसा यह अमर ध्यान !
किस जटिल समस्या का निदान ?

उलझन का कैसा विषम जाल,
मेरे नगपति ! मेरे विशाल ॥२॥

ओ मौन तपस्यालीन यती,
पल भर तो कर नयनोन्मेष;
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल,
है तड़प रहा तेरा स्वदेश !
सुख - सिन्धु - पंचनद, ब्रह्मपुत्र
गङ्गा, यमुना की अमिय धार—
जिस पुण्य भूमि की ओर बही,
तेरी विगलित करुणा उदार !
किसके द्वारों पर खड़े क्रांत,
सीमापति ! तूने की पुकार ।
"पद - दलित इसे पीछे करना,
पहिले लो मेरा सिर उतार" ।
उस पुण्य भूमि पर आज यती !
रे ! आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे,
दारुण दुख - ज्वाला में विहाल;
मेरे नगपति ! मेरे विशाल ॥३॥

कितनी मणियां लुट गयीं, मिटा—
कितना मेरा वैभव अशेष !
तू ध्यान - मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश !
कितनी द्रुपदा के बाल खुले,
कितनी कलियों का अन्त हुआ !
कह हृदय खोल चित्तौड़ ! यहां,
कितने दिन ज्वाल - वसंत हुआ !

पूछो, सिकता - कण से हिमपति,
तेरा यह राजस्थान कहां ?
बन - बन स्वतंत्रता - दीप लिये,
फिरने वाला प्रताप कहां ?
तू पूछ अवध से राम कहां ?
वृन्दा बोलो घनश्याम कहां ?
ओ मगध ! कहां मेरे अशोक,
वह चन्द्रगुप्त बल - धाम कहां ?
पैरों पर ही है पड़ी हुई,
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी ।
तू पूछ कहां इसने खोयीं,
अपनी अनन्त निधियां सारी ?
री कपिलवस्तु ! कह बुद्धदेव
के वे मङ्गल - उपदेश कहां ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन
तक गये हुए संदेश कहां ?
वैशाली के भग्नावशेष से,
पूछ लिच्छवी - शान कहां ?
ओ री उदास गण्डकी बता !
विद्यापति कवि के गान कहां ?
तू तरुण देश से पूछ अरे,
गूंजा यह कैसा ध्वंस राग ?

अम्बुन - अन्तस्तल - बीच छिपा
यह सुलग रही है कौन आग
प्राची के प्रांगण - बीच देख
जल रहा स्वर्ण-युग अग्नि-ज्वाल !
तू सिंहनाद कर जाग यती,
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

रे ! रोक युधिष्ठिर को न यहां,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर ।
पर फिरा हमें - गांडीव, गदा,
लौटा दे अर्जुन, भीम वीर !
कह दे शंकर से आज करें,
वे प्रलय नृत्य फिर एक बार ।
सारे भारत में गूंज उठे,
'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार !
ले अंगड़ाई उठ, हिले धरा,
कर निज विराट स्वर में निनाद ।
तू शैलराट् ! हुंकार भरे,
फट जाय कुहा, भागे प्रमाद !
तू मौन त्याग कर सिंहनाद,
रे तपी ! आज तप का न काल,
नवयुग - शंख - ध्वनि जगा रही,
तू जाग, जाग, मेरे विशाल !
मेरी जननी के हिम - किरीट,
मेरे भारत के दिव्य भाल !
नवयुग - शंख - ध्वनि जगा रही;
जागो नगपति ! जागो विशाल ।

गीत १४)

जाग सोये देश

आत्म हंता अब न सो तू,
जागरण के बीज बो तू,
मरण बनकर भीरु वरजय,
वीर क़ा धर वेश ॥ जाग सोये..... ॥१॥

सो रहे देशाभिमानी,
खो रहे अपनी जवानी,
आज जीवन ज्योति तेरी,
हो रही है शेष ॥ जाग सोये...... ॥२॥

विशुध बन्धन में बिवश है,
केशरी होकर अवश है,
जाग भर हुंकार कदिया,
छिन्न हो अवशेष ॥ जाग सोये...... ॥३॥

दलित के अरमान जग हे,
विजय वे बलिदान जग हे।
जाग मुक्ति प्रभाव भव के,
शेष हो सब क्लेश ॥ जाग सोये......॥४॥

पूर्व के अपवर्ग नग हे,
विश्व के श्रेष्ठतम गुरु हे।
दो हमें श्री कृष्ण जी के,
वह आ[illegible] सन्देश ॥ जाग सोये.....॥५॥

(गीत १५)

जय भारत

जय भारत जिसकी कीर्ति सुरों ने गाई ।
हम हैं भारत संतान करोड़ों भाई ॥
हां गूंज उठे आकाश, अनिल के द्वारा,
अगणित करों से बहे रक्त की धारा ।
कह दो पुकार कर सुने चराचर सारा,
है भारत हिन्दुस्थान अखण्ड हमारा ॥
अब तक भी कुल कीर्ति हमारी छाई ।
जय भारत जिसकी कीर्ति सुरों ने गाई ॥ १ ॥

पृथ्वी तक का पशु भाव हताश हुआ था,
मानव कुल में मनुपत्व विकाश हुआ था,
तब हमसे जीवन की ज्योति जगत में पाई ॥
जय भारत जिसकी कीर्ति सुरों ने गाई ॥२॥

सब बातों में हम सदा रहे आगे हैं,
शत्रु के डर से कभी नहीं भागे हैं,
जयकार यही है सारे जग में छाई ॥
जय भारत जिसकी किर्ती सुरों ने गाई ॥३॥

(गीत १६)

हमारा भारत

सागर से जो तीन ओर से घिरा हुआ ।
उत्तर ओर हिमालय जिसकी, रक्षा के हित खड़ा हुआ ॥

मान सरोवर झील यहां है, चंदन का बन न्यारा है।
सारी दुनियां में प्रसिद्ध, यह देश हमारा प्यारा है ॥
गंगा यमुना सरस्वती का, सगंम जहां प्रयाग बसा।
सरयू नदी जहां पर पावन, अवध पुरी का नगर बसा ॥
जहां जन्म ले रामचन्द्र ने, लोक धर्म दर्शाया है।
पित्र भक्ति आज्ञापालन का, अनुपम पाठ पढ़ाया है ॥
जहां भरत लक्ष्मण ने अपनी मातृ भक्ति दर्शाई है।
यही देश वह कृष्ण ने, गीता सुना सनाथ किया
इस के वैभव के गौरव, का रक्षा का व्रत ठान लिया।

हिन्दूका हिन्दू स्थान जगे

(गीत १७)

वह बाल हकीकत जाग उठे,
पी पी करके-विषका प्याला।
चित्तौड दुर्ग में धधक उठे फिर,
महापद्मनी की ज्वाला।
अकबर का मान घटाने को,
हल्दीघाटी मैदान जगे।
हिन्दू का हिन्दूस्थान जगे ॥१॥
गुरु तेग बहादुर गुरु अर्जुन,
जागे फिर मोहित ललकारे।
शत्रु दल को दहला देवे,
लख बंदा की खूनी धारे।

हिंदू जाति के कर्णधार,

गुरु गोविन्द तेरी शान जगे।

हिन्दू का हिन्दुस्थान जगे ॥२॥

जागे बुन्देला छत्रसाल,

शिवराज जगे मां का प्यारा।

जागे प्रलयकर रूप लिये,

वह शीश गन्ज का गुरुद्वारा ॥

दिवारों में चुने गये सिंहो का,

शौर्य महान जगे।

हिन्दू का हिन्दुस्थान जगे ॥३॥

(गीत १८)

नयन का तारा हिन्दूस्थान

रख सुख में सदा भगवान, हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।

नयन का तारा हिन्दुस्थान ॥

जहां हरिश्चन्द्र सत्यवादी, कर्ण से दानी महान।

जहां हुए नृप दशरथ के सुत रामचन्द्र भगवान।

चौदह वर्ष सहे दुख बन में, पितु की आज्ञा मान ॥

योगी राज श्री कृष्ण हुए जहां,

भीम अर्जुन बलवान ॥

हमारा प्यारा.........।

राणा वीर प्रताप शिवा जी पृथ्वीराज चौहान।
तेगबहादुर गुरु गोविन्द सिंह।
धर्म नीति गुणवान ॥
चुनी गई दीवारों में थीं,
जिनकी वीर सन्तान ॥
हमारा प्यारा.........

(गीत १६)

तन मन इस पर वारेंगे।

भारत प्यारा देश हमारा तन मन इस पर वारेंगे।
गंगा यमुना पानी भरती।
फूल फलों से लदी है धरती।
इस धरती पर जन्म लिया है माता उसे पुकारेंगे ॥१॥
श्वांस श्वांस में पवन है जिसकी।
रोम रोम में अग्नि है जिसकी।
उसका हम पर इतना उपकार सब मिल कर गुण गायेंगे ॥२॥
तीस कोटि हैं जिसके वासी।
फिर क्यों छाई आज उदासी?
कांप उठेंगे शत्रु सारे मिल कर जब ललकारेंगे ॥३॥
सागर जिसके चरण है धोता।
मुकुट हिमालय शोभा देता।
ऐसे भारत पर प्राणों की सब मिल बाजी वारेंगे।४॥

(गीत २०)

हिन्दू के हिन्दुस्थान जाग ।

ओ आर्यों के अभिमान जाग, हिन्दू के हिन्दुस्थान जाग।
हिन्दू उठ कर देख लगी तेरे घर में विकट आग।
तू अब भी सोया निद्रा में, तेरा उजड़ा सब्ज बाग ॥

सत्य अहिंसा के भक्तो, देखो श्रद्धा का परिणाम।
अपने ही सम्मुख माता का किया गया है काम तमाम।
तब भी पुत्र राग रंग डूबे, रंग रलिया खेले अभिराम।
जिसका फल श्मसान बन गये, 'लाहौर' और 'गुरुग्राम'।
जिसको हमने भाई समझा, उसने ही दी गोली दाग।

ओ आर्यो के अभिमान जाग........

कोने कोने से आता है, बहिनों का रोदन चीत्कार।
आंखें खोलो देखो जलता है तेरा हिन्दू वंश विहार।
गंगा यमुना की धारों से सुप्त ज्वालामुखी जाग ॥

ओ आर्यो के अभिमान जाग........

लुट गई तेरी रावलपिंडी, लुट गईं तुम्हारी ललनायें।
लुट गया तुम्हारा गुजरांवाला, कटती तेरी गऊ मातायें।
जलरहे तुम्हारे गुरुद्वारे ओ गोविन्द की सन्तान जाग ॥

ओ आर्यो के अभिमान जाग......

श्रद्धांजलि

राष्ट्र पुरुष !

अपने व्यक्तित्व को समाज सेवा हितार्थ नष्ट कर सुदृढ़ शरीर को राष्ट्र-चिन्ता में गलाने वाले दधीचि ! भारतीय धारा को पुनः परकीय संस्कृति के दुर्गम पाषाणों से निकाल कर समतल पर लाने वाले दलीप !

हम सभी तेरी बाट निहार रहे हैं। सैनिक का कार्य तो पद चिन्हों पर चलना ही है, उसने तो तेरे चरणों में प्रथम मिलन पर ही अपना सब कुछ वार दिया था।

आज भी सैनिक अपने शेष अशेष को तेरे लिए समर्पित करने आया है।

क्या आशा पूर्ण न हो सकेगी ? क्या भिक्षुक, भावना कल्पना का स्वर्ग बना कर, अपने कर से ही नष्ट करेगा। नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा, उसने तो केवल यही मन्त्र सीखा है:—

सेनानी का संकेत मिला,
चल पड़ा आज मैं उसी ओर।
तूफानों तुम्हें चुनौती हैं,
करके दिखलाओ तनिक जोर॥

—बन्सल

(गीत २१)

तुम सदा महान हो !

डोलती वसुन्धरा,
कांप उठी है धरा,
तुम स्वतन्त्र देश की
रक्षा के विधान हो !
तुम सदा महान हो !

मृत्यु सामने खड़ी,
भाग्य के लिए अड़ी,
देश-हित शरीर का
बूंद बूंद दान हो
तुम सदा महान हो !

एक स्वप्न हो गया,
एक रत्न खो गया,
बीन झनझना उठी
आजविकल प्राणहो !
तुम सदा महान हो !

मलय-यान तू बता,
देशभक्त का पता ?
क्षितिज पार झांकता
स्वर्णमय विहान हो !
तुम सदा महान हो ।

(गीत २२)

ओ मुक्ति के अग्रदूत !

ओ भारतके भावी विधान
हे मुक्ति के अग्रदूत,

★ ★ ॐ ★ ★

ओ देशभक्ति के पुण्यपन्थ
ओ राष्ट्रशक्ति के गुरु महन्त
किसने तुम्हें पढ़ाया, जननी जन्मभूमि का मन्त्र।
ओ मुक्ति के अग्रदूत........

ओ युवक वर्ग के हृदय रूप,
ओ सघ शक्ति के बल अनूप,
प्रथम तुम्ही से प्रकट हुआ था, मातृभूमि का तन्त्र।
ओ मुक्ति के अग्रदूत......

जब तुम्ही बढ़े विश्रान्ति हीन
मन ध्येय रूप में कर मलीन
तुम्हारे पीछे निकल पड़ेंगे नवयुवकों के पुंज।
ओ मुक्ति के अग्रदूत......

ओ वृद्ध देश की एक आश
ओ नृप जीवन के सुख निवास
क्या मां का दुख सुनने वाले तुम्ही एक हो पूत ?
ओ मुक्ति के अग्रदूत......

[२३]

क्या भेंट चरणों में चढ़ाऊं

देवता तुम राष्ट्र के क्या भेंट चरणों में चढाऊ ?
हम अभी तक सो रहे थे,
आत्म गौरव खो रहे थे।
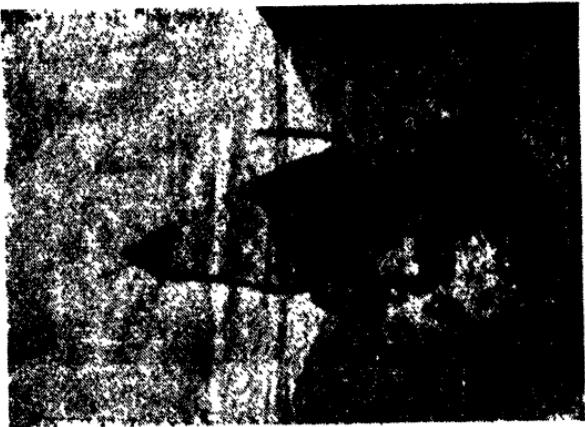
महाराष्ट्र के प्रान्त नायक

नागपुर प्रान्तप्रचारक

(श्री राजा भाऊ पुतरकर)

सह प्रान्तप्रचारक

(श्री मोरोपंत पिंगले)

हमारे नेता

श्री बच्छराज व्यास
नगर कार्यवाह, नागपुर

[राजस्थान जिनके गुण आज भी गा रहा है ।]

श्री के० वी० नारायण

आन्ध्र प्रांत के प्रमुख कार्यकर्ता

बन किरण तुम ने जगाया क्या सुमन बन खिल न जाऊँ

देवता तुम राष्ट्र के......

आत्म बल तुम ने जगाया,

प्राण का कल्मिष भगाया।

ज्योतिर्मय किस ज्योति से मैं आरती अपनी सजाऊँ

देवता तुम राष्ट्र के......

पा तुम्हारे ही इशारे,

बढ़ रहे हैं पग हमारे।

दो हमें बल युग चरण में युग चरण अपने बढ़ाऊँ

देवता तुम राष्ट्र के......

मातृ मन्दिर आज जगमग,

जागरण का पर्व पग पग।

वन्दना के गीत गाओ मैं उसी में स्वर मिलाऊँ

देवता तुम राष्ट्र के......

ले चलो जयमाल तुम जब,

गूँथ लो उसमें मुझे तब।

मां चरण में शरण पाकर आमरण मंगल मनाऊँ

देवता तुम राष्ट्र के......

नयन बन जीवन हमारे,

हो चुके कब से तुम्हारे।

तन समर्पित मन समर्पित मैं कहो क्या भेंट लाऊँ ?

देवता तुम राष्ट्र के......

(गीत २४)
मेरी आरती लो

भव्य भारत के तरुण स्वरकार ! मेरी आरती लो ।

दासता की घन-कुहा में, ले प्रलय-पथ के तराने,
प्राण का दीपक जला तुम, चल पड़े नव ज्योति लाने,
मुक्ति-पुर के ओ नवल पथकार ! मेरी आरती लो

तुम अमा की गोद से, उठते उषा का गान सुन्दर
दासता के इस महा-अभिशाप, के वरदान सुन्दर,
अश्रुओं में हास के श्रृंगार ! मेरी आरती ल' ।

मातृ-नयनों की निराशा, की तुम्हीं साकार आशा,
आज चालिस कोटि के, उर-प्राण की तुम मूर्त भाषा,
मूक युग के कंठ के उद्‌गार ! मेरी आरती लो

तोड़कर तरुणी-दृगों के, फूल से सुकुमार बन्धन,
तुम चले 'निर्वाण'-पथ पर, बांटने जन-मुक्ति कंचन,
ध्वस में अमिताभ के अवतार ! मेरी आरती लो ।

तिमिरमय जन-पलक में, ओ हँस उठे नव ज्योति सपने,
काल-पट पर लिख दिये हो, रक्त से इतिहास अपने
ओ सनातन काव्य के आधार ! मेरी आरती लो

मुक्त भारत के हृदय-सम्राट्, तुम युग-देव मेरे,
लक्ष-लक्ष तरुण-हृदय के, गान हैं 'दो शब्द' मेरे,
मुक्ति के ओ प्रथम क्रान्ति-कुमार ! मेरी आरती लो

राष्ट्र के शत-शत 'नखत' थीं, हो रही थी मौन कारा
घोर जन-जीवन-निशा. में तुम हँसे बन प्रात—सारा,
तुम तिमिर-वन में किरण-गुंजार ! मेरी आरती लो
कोटि जन-मन-तार पर, नवमुक्ति के ओ महागायक,
तुम प्रकृति से 'बंध' पर-छोड़, गये चिर-ज्योति-शायक'
मृत्यु में अमरत्व की झंकार ! मेरी आरती लो
भव्य भारत के नमन स्वरकार ! मेरी आरती लो

(गीत ७५)

नवल सुफल शुभ क्षण यह आया
मानव ! तव स्वागत को अतुलित
जन-समुदाय उमड़ कर आया । नवल......
स्वागत ! त्याग-तेज के दिनकर !
कमल सदृश हम सब के अन्तर,
किरण तुम्हारी ही तो पाकर,
विकसित होकर आज इन्होंने—
स्वागत का यह अवसर पाया । नवल......
शांति दया सुख का यह निर्झर,
धर्म हमारा संस्कृति भी वर,
आज भूलते से जाते नर,
किन्तु तुम्हारे-सम मुनियों ने—
नवआशा का अंकुर उपजाया । नवल......

दिव्य दीप की एक शिखा यह,
करती अगणित दीप प्रभा वह,
अटल, वायु झोंके भी सह,
धीरे-धीरे दशों दिशा में—
स्निग्ध प्राणमय प्रकाश छाया । नवल.

कीर्ति-प्रशंसा-विरत तुम सदा,
पुष्पहार भी थे न प्रिय कदा,
स्वागत कैसे करें हम तदा ?
स्वीकृति हो प्रभु ! भाव सुमन का—
हार गूँथ हम सबने लाया । नवल.

(गीत २६)

राष्ट्र मन्दिर के अमर पुजारी

ओ नागपुर के अमर सन्त ! राष्ट्र मन्दिर के अमर पुजारी ।
ऊषा बन कर, झलक रही है, केशव ! कीर्ति तुम्हारी ॥
आज तुम्हारी ज्योति विलय ने, देकर अद्भुत आशा ।
विस्मृत होने कभी न देती, हिन्दू की परिभाषा ॥
देव ! तुम्हारे एक दीप से, ज्योतित दीपावलियां ।
पूजन करतीं 'राष्ट्र ध्वजा' का, अगणित जीवन कलियां ॥
देव ! तुम्हारे अन्तर की यह, हिन्दूपन की लहरी ।
खींच गई है अमिट शिला पर, भावुक रेखा गहरी ॥

पूज्य ! तुम्हारे अन्तस्थल से, निकली बहती गोरी ।
धधक रही है कितने उर में, बन कर विप्लव कारी ॥
जिस मन्दिर की नीवों में, भरदी निज शोणित धारा ।
जिस देव मूर्ति पै चढ़ा देव ! ये जीवन सुमन तुम्हारा ॥

आज उसी का अर्चन करने, कितनी ही नव कलियां ।
झिलमिल करती रहती चढ़ती जीवन दीपावलियां ॥
देव ! तुम्हारी स्मृति रेखा रोम रोम फड़का कर ।
पथ दिखलाती रहती निशि दिन नील मलय से आकर ॥

(गीत २७)

युवक प्रवर रहे

विश्व गगन में युवक प्रवर हे, गरज उठो गम्भीर ध्वनि से
जाग उठे हैं आज हमारे, अन्तर के सब तार ॥
गौरव से फहरावे जग में, राष्ट्र ध्वजा एक बार ॥
निज संस्कृति और विजय शक्ति से, हुई प्रकाशित सर्व दिशाये—
एक ध्येय आधार ॥—
एक एक बिन्दु से सिन्धु, उमडे, क्षुब्ध अपार ॥
एक दीप से जले दूसरा, ब्रह्म तेज और क्षात्र तेज से होवे पुनरुद्धार
पुण्य भूमि के राष्ट्र भवन में, उठी एक झंकार
कितने युग से बन्द पड़े थे, खुले सकल ही द्वार
हिन्द राष्ट्र के सुप्त हृदय में, आज हो रहा दिशा दिशा से—
जीवन का संचार ॥

बढ़ते जाते-बढ़ते जाते, देखो हम बढ़ते जाते

उज्ज्वलतर उज्ज्वलतम होती
महा संगठन की ज्वाला :
प्रतिपल बढ़ती ही जाती है
चण्डी के मुण्डों की माला ॥

ये नागपुर से लगी आग
ज्योतित भारत मां का सुहाग ।
केशव के जीवन का पराग ॥
भगवे ध्वज का संदेश त्याग
जन-विजन क्लांत नगरी अशांत ।

पंजाब सिंधु संयुक्त प्रांत
कौशल कर्नाटक और विहार ॥
कर चला पार संगठन राग
हिन्दू - हिन्दू मिलते जाते ।
देखो हम बढ़ते...

ये पावन गंगा स्त्रोत्र महान
केशव के भगीरथ प्रयत्न ॥
लाये भू पर आजीवन तर कर
कोटि कोटि भारत मां के सुत ।
मृत सुत निगडित जडित दलित
भूलुंठित पाते जन्मदान ॥

ये माधव अथवा महादेव; निज
जटाजूट में धारण कर।
मस्तक पर झर झर निर्झर,
पुलकित तन मन प्राण प्राण॥
पुलकित कुसुमित गान-गान
लो नागपुर से हुआ प्रातः।
दिशि-दिशि किरणोंसे चले बाण
हिन्दू ने निजको पहिचाना॥
बन्धुत्व प्रेम स्वर सधाना
ध्येय दूर संसार कर।
मद मत्त चूर जीवन दुकूल
जननी के पगकी तनिक धूल।
सर पर धर चल दिये सभी
आज हम मद माते॥
देखो हम बढते....

अनूठा मन्दिर

दशों दिशाये गूंजी टन टन टनन टनन टकारों से।
कानों शब्द न आ पाता है भक्तों की जयकारों से॥
यह वह मन्दिर है जिसमें नित्य समय का मेला है।
प्रतिपल आता जय जय गाता सब भक्तों का रेला है॥
जब यह मन्दिर बना न पाया वह ईंट चूना गारा।

इसी बनाने के हेतू निर्माता ने तन मन वारा ।
अस्थि जाल का चूर्ण वहीं पर चूना गया बनाया था ।
उसको गीला करने के हेतु अपना रक्त मिलाया था ।
निज तन मन धन देकर हमने आज बनाया अपना घर ।
ईंटों के स्थान पर अपने हाथों पे ले अपना सर ॥
भवन बना है उसी भांति से ईंट न चूना पानी से ॥

इस मन्दिर में धर्म देव का पूजन युग युग से होता ।
इस की वेदी पर बहता है अविरल लहू का सोता ॥

यहां पुजारी धूप दीप या अक्षत रोली नहीं लाते ।
जो आते हैं अपने हाथों अपना ही सर ले आते ॥
इस देवल की फेरी अपने है तनकी कुर्बानी से ।
सुरभित प्राण प्रसूनों से उष्ण रक्त के पानी से ॥
फिर भी इसका पूजन होता निशदिन वन्दन होता है ।
इस पर आ मरने का ताता कभी बन्द न होता है ॥

इस मन्दिर में एक नियम है जो भी इसमें आता है ।
राष्ट्र देव के पद कमलों में जीवन भेंट चढ़ाता है ॥

यह भी स्वयं देव बन कर इस वल में आदर पाता है ।
और दूसरे आने वालों से निशदिन पूजा जाता है ॥
आवो तुम्हें दिखायें मन्दिर प्रतिमा इन वीरों की ।
धर्म देव के मस्त दिवाने राजा और फकीरों की ॥

रण-यात्रा

(र० महाकवि पं० श्याम नारायण पाण्डेय)

उक्त कविता श्रीयुत पाण्डेय द्वारा रचित, महाकाव्य हल्दी-घाटी से ली गई है। "हल्दी घाटी काव्य भारत के मध्य-कालीन युग का एक स्वर्ण पृष्ठ है जो आज के युग में भी वीरत्व का संचार करता है। कवि, और उनका काव्य राष्ट्र के प्रत्येक युग में लाभ प्रद रहेगा, ऐसी हमारी आशा है।

—सम्पादक

गणपति के पावन पांव पूज, वाणी-पद को कर नमस्कार।
उस चण्डी को, उस दुर्गा को, काली पद को कर नमस्कार॥
उस कालकूट पीने वाले के नयन, याद कर लाल-लाल।
डग-डग ब्रह्माण्ड हिला देना, जिसके ताण्डव का ताल-ताल॥
ले महाशक्ति से शक्ति-भीख, व्रत रख वनदेवी रानी का।
निर्भय होकर लिखता हूं मैं, ले आशीर्वाद भवानी का॥
मन भर लोहे का का कवच पहन, कर एकलिङ्ग को नमस्कार।
चल पड़ा वीर, चल पड़ी साथ जो कुछ सेना थी लघु-अपार॥
घन-घन-घन-घन-घन गरज उठे रण-वाद्य सूरमा के आगे।
जागे पुश्तैनी साहस-बल, वीरत्व वीर-उर के जागे॥
सैनिक राणा के रण जागे, राणा प्रताप के प्रण जागे।
जौहर के पावन क्षण जागे, मेवाड़-देश के व्रण जागे॥
जागे शिशोदिया के सपूत, बप्पा के वीर-बबर जागे।
बरछे जागे, भाले जागे, खन-खनन तलवार तबर जागे॥

कुम्भल गढ़ से चलकर राणा, हल्दी घाटी पर ठहर गया।
गिरि अरावली की चोटी पर, केसरिया-झण्डा फहर गया॥

प्रणवीर अभी आया ही था रिपु के साथ खेलने को होली।
तबतक पर्वत-पथ से उतरा पुँजा ले भीलों की टोली॥
भैरव-रव से जिनके आगे रण के बजते बाजे आये।
इंगित भर मर मिटने वाले वे राजे-महाराजे आये॥

सुनकर बम हर-हर सैनिक-रव, वह अचल अचानक जाग उठा।
राणा को उर से लगा लिया चिर-निद्रित जग अनुराग उठा॥
नभ की नीली चादर ओढ़े युग-युग से गिरिवर सोता था।
तरु-तरु के कोमल पत्तों पर मारुत का नर्तन होता था॥
चलते-चलते जब थक जाता दिन कर करता आराम वहीं।
अपनी तारक-माला पहने हिमकर करता विश्राम वहीं॥
गिरि-गुहा-कन्दरा के भीतर अज्ञान-सदृश था अन्धकार।
बाहर पर्वत का खण्ड-खण्ड था ज्ञान-सदृश उज्ज्वल अपार॥
वह भी कहता था अम्बर से, मेरी छाती पर रण होगा।
जननी-सेवक-उर-शोणित से पावन मेरा कण-कण होगा॥

पाषाण हृदय भी पिघल-पिघल आंसू बनकर गिरता झर-झर।
गिरिवर भविष्य पर रोता था जग कहता था उसको निर्झर॥
वह लिखता था चट्टानों पर राणा के गुण अभिमान सजल।
वह सुना रहा था मृदु-स्वर से सैनिक को रण के गान सजल॥

वह चला चपल निर्झर झर-झर वसुधा-उर-ज्वाला खोने को।
या थके प्रताप राणा-पद को पर्वत से उतरा धोने को॥

लघु-लघु लहरों में ताप विकल दिनकर दिनभर मुख धोता था।
निर्मल निर्झर जल के अन्दर हिमकर रजनी भर सोता था॥
राणा पर्वत-छवि देख रहा था, उन्नत कर अपना भाला।
थे विपट खड़े पहनाने को लेकर मृदु कुसुमों की माला॥
लाली के साथ निखरती थी पल्लव - पल्लव की हरियाली।
डाली - डाली पर बोल रही थी कुहू - कुहू कोयल काली॥
निर्झर की लहरें चूम - चूम फलों के वन में घूम—घूम।
मलयानिल बहता मन्द - मन्द बौरे आमों में झूम - झूम॥
जब तुहिन - भार से चलता था धीरे-धीरे मारुत - कुमार।
तब कुसुम—कुमारी देख-देख, उस पर हो जाती थीं निसार॥
उड़-उड़ गुलाब पर बैठ-बैठ करते थे मधु का पान मधुप।
गुन-गुन-गुन-गुन-गुन कर करते राणा के यश का गान मधुप॥
लोनी लतिका पर झूल - झूल, बिखराते कुसुम - पराग प्यार।
हँस-हँसकर कलियां झांक रही थीं खोल पँखुरियों के किवार॥
तरु-तरु पर बैठे मृदु स्वर से गाते थे स्वागत-गान शकुनी।
कहते यह ही बलि-वेदी है इस पर कर दो बलिदान शकुनी॥
केसर-से निर्झर - कूल लाल फूले पलास के फूल लाल।
तुम भी वैरी-सिर काट-काट कर दो, शोणित से धूल लाल॥
तुम गरजो-गरजो वीर, रखो अपना गौरव अभिमान यहीं।
तुम गरजो-गरजो सिंह, करो रण-चण्डी का आह्वान यहीं॥
खग-रव सुनते ही रोम-रोम, राणा - तन के फरफरा उठे।
जरजरा उठे सैनिक अरि पर, पत्ते-पत्ते थरथरा उठे॥

तरु के पत्तों से, तिनकों से बन गया वहीं पर राजमहल।
उस राजकुटी के वैभव से, अरि का सिंहासन गया दहल॥
बस गये अचल पर राजदूत, अपनी-अपनी रख ढाल प्रबल।
जय बोल उठे राणा की रख, बरछे - भाले - करवाल प्रबल॥
राणा प्रताप की जय बोले, अपने नरेश की जय बोले।
भारत-माता की जय बोले, मेवाड़ देश की जय बोले॥
जय एकलिङ्ग, जय एकलिङ्ग, जय प्रलयंकर शंकर हर हर।
जय-हर हर गिरि का बोल उठा, कंकड़-कंकड़, पत्थर-पत्थर।
देने लगा महाराणा दिन - रात समर की शिक्षा।
फूँक - फूँक भेरी की, करने लगा प्रतीक्षा॥

* अमूल्य रज *

वीरता एवं क्षात्र धर्म की प्रत्येक युग में आवश्यकता रहती है। जब कभी भी भारत से क्षात्र धर्म को नष्ट किया गया उसी क्षण हम कायर बन गये। बुद्धकाल के उपरान्त भारत खण्डित होगया था, ह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

— सम्पादक

वह गरिमामय सुंदर स्वदेश

(ले० श्री सोहनलाल द्विवेदी)

[तथाकथित गान्धी युग के प्रसिद्ध कवि श्री सोहन लाल द्विवेदी जी की अनुपम राष्ट्रीय कृति पाठकों के सम्मुख है। सभी पाठक आप से परिचित हैं। —सम्पादक]

वह महिमा मय अपना भारत, वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश।
युग-युग से जिसका उन्नत शिर है, किये खड़ा हिमगिरि नगेश।।

जिसके मन्दिर के शंखों से, गूँजा अजेय बन ब्रह्मनाद।
भूले नश्वर तन का प्रमाद, अमरात्मा का पाया प्रसाद।।
हैं अमर कीर्त्ति, हैं अमर प्राण, अमरों का अद्भुत अमिटदेश।
वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश।।

इतिहास-पटल पर संसृति के, जो स्वर्ण-वर्ण में लिखा नाम।।
वह है रघुपति की जन्मभूमि, वह है यदुपति का जन्म-धाम।
जिसके तृण-तृण में कण-कण में, वंशी बजती रहती अशेष।!
वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश।।

युग-युग से जो पृथ्वीतल पर, है भासमान बन-गगन-दीप।
कितने ही राष्ट्र-यान उबरे, पाकर प्रकाश जिसके समीप।।
भवसागर के अपार तट का, जो कर्णधार कौशल-निवेश।
वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश।।

रण वरण किया धर चरण सुदृढ़, तब मरण बना निज स्वर्गद्वार ॥
पुरुषों ने रण - कंकण पहना, रमणी ने जौहर का शृङ्गार।
आभरण बनाया गौरव को, आवरण हटा मुख के अशेष ॥
वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश ॥

कितने ही राष्ट्र उठे जग में, कितने ही राष्ट्र हुए विलीन।
जो महाकाल की छाती पर, आरूढ़ आज बन चिर-नवीन ॥
विश्वम्भर के करुणा बल पर, युग-युग दुर्जय देवेश देश।
वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश ॥

हे तपोभूमि, हे पुण्य प्रबल

(र०—श्री कान्तानाथ पाण्डेय 'हंस')

[श्री पं० कान्तानाथ पाण्डेय हंस, काशी के प्रसिद्ध कवि एवं पत्रकार हैं। आजकल आप सन्मार्ग दैनिक में काम कर रहे हैं। श्री पाण्डेय, हास्यरस में श्री 'चोंच' के नाम से कविता करते हैं, उन की उक्त कविता संग्रह में दी गई है—सम्पादक]

हे विश्ववन्ध भारत भूतल !
हे तपोभूमि हे पुण्य प्रबल !

लेकर हीरक हारावलियां, करता है सागर पद - वन्दन।
बरसाकर नव किसलय कलियां, द्रुमदल करते हैं अभिनन्दन ॥
स्वर्णिम किरणों से बालारुण, करता है तव शृङ्गार सघन।
राका हिमकर कमनीय तरुण, करता है तेरा नीराजन ॥

तेरा वर वेष अमित उज्ज्वल,
हे तपोभूमि हे पुण्य प्रबल ॥१॥

महिमा तेरी सुर बालाएँ, गाती हैं आनन्दित होकर ।
तेरी सुखमय श्री-सुषमाएँ, पूजित हैं सम्बन्धित होकर ॥
तेरा आलोक अमित अद्भुत, प्राचीन चिरन्तन है नूतन ।
तेरा सौन्दर्य सरल अक्षय, करता है कैसा सम्मोहन ॥

हे महामहिम, अतिशय अविचल !
हे तपोभूमि, हे पुण्य प्रबल ॥२॥

सीता-सी सतियों के स्वदेश, राघव-से पतियों के स्वदेश ।
यादव-से यतियों के स्वदेश, शुक से सद्व्रतियों के स्वदेश ॥
गङ्गा यमुना की धाराएँ, करती हैं तव अभिषेक सरल ।
मलयानिल है इतना सुरभित, पाकर तेरे यश का परिमल ॥

हे वन्दनीय, हे वीर विमल !
हे तपोभूमि, हे पुण्य प्रबल ॥३॥

तूने प्रकाश की एक किरण, दे किया विश्व-अज्ञान ध्वंस्त ।
तेरे चरणों पर बार - बार, झुकता है भूमण्डल समस्त ॥
किसका भय है ? तू है निर्भय, तू है अजेय, अनिवार्य्य-भूमि !
औदार्य्यभूमि, सत्कार्य्यभूमि, आचार्य्यभूमि, हे आर्य्यभूमि

हे अचल-मुकुट, हे मुकुट-अचल !
हे तपोभूमि, हे पुण्य प्रबल ॥४॥

लो चला पथिक

(र०—डा० श्याम मुन्दर दीक्षित)

[आगरा निवासी डा० दीक्षित स्वतन्त्र भारत के तरुण कवि है। आपने भारतीय स्वतन्त्र आन्दोलन मे सक्रिय का ' किया है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविता नीचे दी जारही हैं।

—सम्पादक]

लो चला पथिक,

लो चला पथिक।

उर में पीड़ा का भार लिए;

उजड़ा-बिखरा मंसार लिए,

टूटी बीणा के तार लिए;

भूला-भूला-सा प्यार लिए।

नित्य नयन-धार से मानस को—

लो चला पथिक,

ल चला पथिक।

क्षत-विक्षत मां का भाल देख;

लुटते जगती के लाल देख.

प्रज्वलित ईर्ष्या-ज्वाल देख;

शंकर के ताण्डव-ताल देख।

युग-युग का सचित धैर्य सकल—
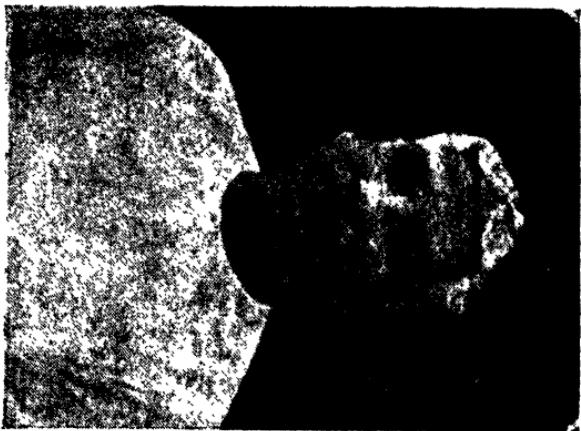
खो चला पथिक,

लो चला पथिक!

पंजाब प्रान्त के नायक

प्रांतीय संघ चालक

(ला० हंसराज जी)
दिल्ली

प्रांतीय प्रचारक

(श्री माधराव जी मूले)

सह प्रांत प्रचारक
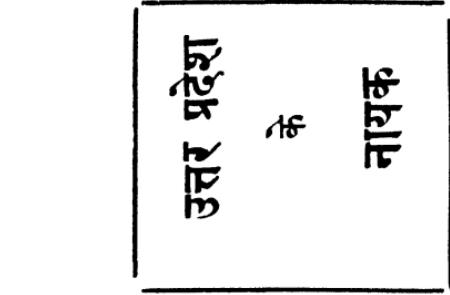
(श्री दीनदयालु जी उपाध्याय लखनऊ)

सह प्रांत प्रचारक

(श्री राजेन्द्रसिंह जी प्रयाग)

चल पड़े देश के नौजवान ;
चल पड़े वृद्ध-जन साभिमान ,

दुखियां कर उठी शीश-दान ;
गाते बालक भी अग्नि-गान ।

"भारत-मा की जय" बोल बोल—

जो चला पथिक ,
लो चला पथिक ।

दुखियों की करुण-पुकार सुना ;
निर्बल पर अत्याचार सुना ,

नर का नर से संहार सुना ;
आजादी के उद्गार सुना ।

यों क्रान्ति बीज भारत-भू में,—

बो चला पथिक,
लो चला पथिक ।

लो, सुना-सुना उसकी बोली ;
जय-जय करती आती टोली ,

वह खेल रहा प्रतिपल होली ;
लो बढ़ो और भरदो झोली

यदि करना है विनिमय-विचार-—

तो चला पथिक
लो चला पथिक ।

हो चुका देश उनका स्वतन्त्र ;
पा सत्य, अहिंसा मूल-मंत्र ,

बिखरे अरि-दल के सभी यंत्र;
जीवित हैं जग में प्रजातंत्र ।

ले प्राण-दीप निर्वाण-प्राय —
सो चला पथिक ,
लो चला पथिक ।

मेरा परिचय

(र०—श्री रघुवीरशरण बन्सल)

मैं ही ब्रह्मा मैं शिव शंकर ।

तुम भूल न जाना यह क्षण को,
मैंने जीवन का दान दिया ।
तुम भूल न जाना यह क्षण को,
मैंने ही विष का पान किया ।
किन्तु पावक को रगड़ रगड़,
जगती में आग लगा दूंगा ।
जिस हाथ बनाई सृष्टि है,
उन कर से धूरि मिला दूंगा ।
मैं सरल सौम्यता का साथी मैं ही मानव, हूं प्रलयंकर !
मैं ही ब्रह्मा हूं शिवशंकर ।।

मैंने पद चाप बढ़ाये जब,
जगतीतल में कोहराम मचा।
मैंने पद चाप हटाये जब,
जग को क्षण भर विश्राम मिला।
मैने ही अपने केशों से,
गंगा की धार निकाली है।
तुम भूल न जाना उस क्षण को,
सागर की प्यास मुखा ली है।
मैं औघट मरघट का वासी, मैं ही करता तांडव नर्तन
मैं ही ब्रह्मा हूं शिवशंकर ॥

जो भी चाहा उसने पाया,
सबके हित मेरा द्वार खुला।
भूपर ऐसा कौन मनुज,
जिसको न कभी वरदान मिला।
मैं हूं उदार, मैंने निज को,
भक्तों के कारण वार दिया।
मैंने ही तीसरा नेत्र खोल,
कामासुर का संहार किया।
मैं रौद्र रूप भवानी का, करता हूं पुष्पों से अर्चन।
मैं ही ब्रह्मा हूं शिवशंकर ॥

मैं हल्दी घाटी का रज कण

(र० — राजेन्द्र कुमार जैन)

मैं हल्दी-घाटी का रज-कण, मैं हल्दी-घाटी का रज-कण।
देखो मेरा जलता तन-मन, मैं हल्दी-घाटी का रज-कण॥

वीरों के रक्तिम शोणित से,
देखो मेरा है स्नात गात।
उस रक्त-पात की स्मृति में मैं,
जलता रहता दिवस रात।
मन्ना झाला का शौर्य और,
मम चेतक का निज प्राण-त्याग।
मेरे प्रताप की क्षत छाती,
छाती में आज लगाती आग।

'जय एकलिंग' कह चमक उठी, जब तलवारें कर झनन-झनन
मैं हल्दी-घाटी का रज-कण, मैं हल्दी घाटी का रज-कण॥

मेरी छाती पर ही जलती,
जौहर की थी रक्तिम ज्वाला।
कूदी, कर-कर शृंगार सभी,
उस ज्वाला में वे सुर-बाला।
वह गगन चूमने चली ज्वाल,
स्वामीको कहने यह सन्देश—
'रजपूती बाला ने रक्खा
रण-बाला का ले.हित सुवेश।'

केशरिया बाना पहन चले, दुष्टों का करने हनन-दलन।
मैं हल्दी-घाटी का रज-कण, मैं हल्दी का रज-कण॥

मैंने वह रक्त स्नान किया,
मैं राष्ट्रीय तीर्थ बना पावन।
मुझ पर पुत्रों के शोणित से,
अंकित बलिदानों के गायन।
अपने जलते अन्तस्तल की,
चिनगारी फेंके जाऊंगा।
हिन्दू हृदयों की बुझी आग,
मैं पुनः आज सुलगाऊंगा।

आसेतु-हिमाचल तक फैले, बस एक आग, बस एक जलन।
मैं हल्दी-घाटी का रज-कण, मैं हल्दी-घाटी का रज-कण॥

(आकाशवाणी से)

— १९ —

जीवन पथ के करूं पार

(र० डा० श्यामसुन्दर दीक्षित)

दो माता यह आशीर्वाद, नव-जीवन का पथ पार करूं।
मैं निपट कण्टकाकीर्ण राह पर, बढ़ता हूं यह भार लिए,
जलियांवाले के दाग लिए, भूखे नंगों का प्यार लिए,
मस्तक में वह उन्माद लिए, जिसमें अशान्ति कोलाहल है-
मैं रूखा गायन गाता हूं, टूटी वीणा के तार लिए।

मैं कवि हूं, भाषण रागों की, इस वसुधा में भरमार करूं।
दो माता वह अशीर्वाद, नव-जीवन का पथ पार करूं॥

मैं छोड़ चुका मधुमास सुखद, दुनिया वसन्त-सी लुटा चुका;
जितने बन्धन थे आस-पास, सारे ही झंझट हटा चुका,
आशा, उमंग, चंचलता को, सुख-दुख, निराशा, वैभव को—
मैं ख्याति, मान-अपमान सभी, तेरे चरणों पर लुटा चुका।

मैं समदृशा बन कर सवस, समता का ही व्यवहार करूं।
दो माता वह आशीर्वाद, नव-जीवन का पथ पार करूं॥

तुम सुधा-सिंचिता, पुष्पमंडिता, बैठी हो सिंहासन पर;
कर-बद्ध और नतमस्तक हों, दिक्पाल खड़े निज आसन पर,
फर-फर फहराए विजय-ध्वजा, गर्वित नरेश; हों चरणों में—
गद्गद हो सब यश गाते हों, उठ सके न उंगली शासन पर

मां! मुझे राह वह दिखलाओ, इन भावों को साकार करूं।
दो माता वह आशीर्वाद, नव-जीवन का पथ पार करूं॥

किसने यों तुझको कस-कस कर, मां जंजीरों से बांधा था?
किसने लालों की लाशों पर, लिखवाई थी तेरी गाथा?
मां! जरा बोल; अब तो मैं भी, कुछ-कुछ दुनिया को समझा हूं-
मैं नौजवान हूं, मुझसे तू कहती है क्यों तू "छौना-था"?

दे हाथ अहिंसा की कृपाण, इस बंधन से उद्धार करूं।
दो माता वह अशीर्वाद, नव जीवन का पथ पार करूं॥

क्या कहा—"तिलक पुंछ गया और मोती भी टूट चुका सिरसे;
लज्जा का रखने वाला वह, जन्मा न लाजपत भी फिर से,"

क्या कहा कि:-"वे भी थे जवान, इसलिए न मुझको भेजा था ?
"तुम नहीं चाहती बेटे को, अपने ढकेलना हिमागिरि से"।
क्या बोलो-"उचित कहां तक है, बलिवेदी पर भरमार करूं"।
दो माता वह आशीर्वाद, नव-जीवन का पथ पार करूं ॥
मां ! देख रक्त से लाल नयन, यह भीगी मसें; जवानी यह;
बलधर प्रचण्ड भुजदण्ड और गम्भीर सिंह-सी वाणी यह;
उन्नत यह वक्षस्थल विशाल, सुन्दर शरीर की देख गठन—
अभिलाषा है यश पाने की, भारत का तीखा पानी यह।
मां, कुछ न सोच, बस आज्ञा दे, बढ़ जाऊं प्रतिकार करूं।
दो माता वह आशीर्वाद, नव-जीवन का पथ पार करूं ॥

स्वतन्त्रता का मूल्य

(र०—श्री कृषिराज नौटियाल)

शिशुओं का कोमल २ तन,
युवकों का मद माता यौवन,
वृद्धों का जग देखा जीवन,
माँ बहनोंका जबतक इसमें चढ़ जाना बलिदान नहीं है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥
मचों पर भाषण से केवल
कोटि कोटि प्रण से केवल
निकलो निकलो रण से केवल

स्वतन्त्रता की रूठी रमणी, देती यौवन दान नही है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥

जबतक कफनी शीश न छोड़ो,

घरकी ममता प्रीत न छोड़ो,

कायरपन की बान न छोड़ो,

जब तक घरके प्रांगण में धधक उठे शमसान नहीं है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥

यह भीख नहीं है आजादी
यह खेल नहीं है बरबादी
जो बरवादी के हैं आदी

यह उनके चरणों की चेरी, वर्ना देती ध्यान नहीं है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥

नर मुण्ड लुडकते इस पथ पर
शोणित के बढ़ते नद निर्झर
लाशों से निर्मित प्रभ नगर

यह शिम्भु का विषपान कठिन, देवों का अमृत पान नहीं है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥

तुम उठ जाने का अभिलाषी
पर गिर पड़ने के अभ्यासी
मिथ्यावाद के विश्वासी

तुल चरण चूमते रहते तुममें, मान नहीं अभिमान नहीं है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥

अग जग का इतिहास बताता
निर्बल पग पग कुचला जाता

कवि तुमको विश्वास दिलाता
जबतक इटों के उत्तर में सम्मुख ही पाषाण नही है ॥
आजादी आसान नहीं है ॥

॥ हम भीख मांगना क्या जाने ॥

करवाल पकड़ना सीखा है, हम कर पसारना क्या जाने ?
क्या कोई हमको डरा सका
इन दारूण अत्याचारों से ?
क्या कोई हमको हटा सका
उन औरंगजेबी अत्याचारों से
गुंजार रहा है सकल विश्व, बम महादेव गुंजारों से—
हम गीता ज्ञान के साक्षी हैं, मरने से डरना क्या जाने।
हम भीख मांगना क्या जाने ?
जग जननी का सौभाग्य तिलक,
हमको प्राणों से प्यारा है।
जिसकी रक्षा के लिए सदा
मस्तक पर रहा दुधारा है।
एक बार नही, शत बार सुनो
यह भारत राष्ट्र हमारा है।
है परमपूज्य आराध्यदेव
भगवा ध्वज गुरू हमारा है।
हम एक रंग में रंगे हुए नव रंग बिरंगा क्या जाने।
हम भीख मांगना क्या जाने ?

क्रांति का सन्देश

(र०—डा० श्यामसुन्दर दीक्षित)

क्रान्ति जगमग आ रही है।
वीरता के रिक्त क्षेत्रों पर, घटा बनछा रही है ॥
कांपती है भूमि डग-डग, त्रस्त भय से मेघ-माला,
आज अंबर ने न अवनी पर, सुधा का स्रोत डाला,
भव्य तारक-वृन्द रजनी का, न स्वागत कर सके हैं—
और ऊषा ने न गूंथी, मोतियों की मंजु माला।
स्वयं मायाविनि प्रकृति यह—
दीन हो भय खा रही है।
क्रान्ति जगमग आ रही है ॥

आज लहरों में उठा, उन्माद नर्तन और कम्पन,
चल पड़े हैं उदधि, अम्बुद तोड़ सीमा और बंधन,
मुक्त-गीत से वायु ने भी, आज अंधड़ है उठाया—
चिर-प्रपीड़ित मनुज ने, निर्मित किया संसार नूतन
चपल चपला थिर हुई—
संदेश नव-नव ला रही है।
क्रान्ति जगमग आ रही है ॥

कवि प्रलय-वीणा सम्हाले, आज विप्लव-गीत गाता,
कल्पना मय सुप्त-जग के भाव-चित्रों को मिटाता,
कर युगान्त सुहासिनी का, रूपसी,प्रेयसि,सजनिका
·म नवीन, विशाल-युग की विश्वको झाँकी कराता।

सत्यं, शिव, सुन्दर तथा—

चिर-शान्ति जिसमें छा रही है।
क्रान्ति जगमग आ रही है॥

दुनिया में प्रलय मचाने को

तू हिन्दू है अन्यायों की, दुनियां में प्रलय मचाने को।
हिन्दू जाति की मानवता, तेरा दृढ़ निश्चय लाने को॥
आंख झपी तेरी पर तूने, इक सच्चा सपना देखा।
आपस में थी फूट और मस्तक पे निराशा की रेखा॥
अपनी परवशता से हां, बंगाल काण्ड होता देखा।
अबलाओं का हरण और पंजाब प्रांत जलते देखा॥
त्याग नींद अब भभक शत्रु हित, मृत्युंजय बन जाने को।
तू हिन्दू है अन्यायों की, दुनियां में प्रलय मचाने को॥

ये पश्चिम की नकल बनाते, तेरे घर दिखलाने आज।
हाय तेरा साहित्य और इतिहास, छिपाये जाते आज॥
अधिकारों का मोह स्वार्थवश, सत्ता भय दिखलाते आज।
सच्ची राष्ट्रवादिता को भी, सम्प्रदाय बतलाते आज।
माया का तम मिटा सूर्य बन जयद्रथ बध हो जाने को।
तू हिन्दू है अन्यायों की, दुनियां में प्रलय मचाने को॥

तुझको दुर्गा-चामुण्डा की, ज्योति जगानी आती है।
रण-भेरी सुन सुन कर तेरी, रही फूलती छाती है॥

राम राज्य की याद न्यायप्रियता तेरी बतलाती है।
अभिभूत है गवाह जगने मानो तेरी थाती है।
इसीलिए फिर गरज विश्व को निज परिचय बतलाने को।
तू हिन्दू है अन्यायों की दुनियां में प्रलय मचाने को॥

व्यर्थ हमारा यह जीवन

यदि काली मैय्या का खप्पर,
रिपु के शोणित से भर न सके।
यदि शंकर भी ग्रीवा माला,
मुण्डों से पूरित कर न सके।
यदि तीस कोटि होकर भी, यह नीच दासता का जीवन।
तो व्यर्थ हमारा हिन्दूपन, तो व्यर्थ हमारा यह जीवन॥
यदि अपने हित समवर्द्धन हित,
हम जग को नहीं जगा सकते।
यदि कायरता वश हो नहीं, खोल सके मां के बन्धन।
तो व्यर्थ हमारा हिन्दूपन तो व्यर्थ हमारा है जीवन॥
यदि हिन्दू होकर शस्त्रों की,
झंकारों से स्वर भर न सके।
यदि हर हर बम के नारों से,
हम समरांगण दहला न सके।
तो व्यर्थ हमारा जीवनधन, तो व्यर्थ हमारा हिन्दूपन॥

—अरे साधक साधना कर—

[लेखक :—श्री प्रकाश 'अनल']

प्रबल झंझा के थपेड़ों से निरन्तर तू लड़े जा,
यदि न देता साथ कोई, तू अकेला ही बढ़े जा,
आज अपने पंथ का केवल तुझे निर्माण करना,
क्यों पतन की ओर जाता, सीख ले उत्थान करना,
लक्ष्य तेरे पास हो या दूर, बस तू साधना कर।
अरे साधक साधना कर।

चूमता था चरण वैभव भूलता है आज क्यों तू,
मुग्ध नव-जग कल्पना में भूलता है आज क्यों तू,
ज्ञान हमने ही दिया था, ज्ञान का भण्डार भारत,
आज के भी विश्व का है अमर - आधार, भारत,
आज भी सामर्थ्य तुझ में, मत किसी से याचना कर।
अरे साधक साधना कर।

राष्ट्र ही सर्वस्व तेरा, राष्ट्र ही है प्राण तेरा,
राष्ट्र की आंखें तुम्हीं पर, राष्ट्र को अभिमान तेरा,
आज निज तिल-तिल मिटा कर राष्ट्र का निर्माण कर तू,
भग्न वीणा के स्वरों में आज फिर से गान कर तू,
राष्ट्र-मन्दिर के पुजारी राष्ट्र की आराधना कर।
अरे साधक साधना कर।

कवि व्याख्या

आज कवे हिन्दुत्व शब्द की व्याख्या कर दो।
ओ सुप्त सिन्धु सुपुनीत परम गम्भीर,
नीर के तीर स्थित महादेव है।
हिन्दु जाति की वही विशाल आवाश भूमि है।
वही भूमि है शस्य श्यामला चित्र में अंकित कर दो ॥१॥
आज कवि हिन्दुत्व........

हिन्दु शव्द से निहित हमारे अमित दीर्घ विश्वाश।
हाथ का एक विशद इतिहास, पृष्ठ कुछ उसके पढ़ दो ॥२॥
आज कवि हिन्दुत्व........

जब मानव का सुन अर्तनाद नभ कांप उठा तूफान उठा।
जब सह न सका हिन्दुत्व हुआ, ज्ञान मिटा जगजीवन का।
यह विषद परिस्थति पूर्ण विशद वृत्तान्त आज सुनादो ॥३॥
आज कवि हिन्दुत्व........

जग की स्वतन्त्रता का अनुपम शुभ पाठ पढ़ाने के निमित,
राणा प्रताप रणधीर शिवा, आये लेकर हिन्दुत्व गर्व
स्वतन्त्रवाद का मूल मन्त्र विषलेषण कर दो ॥४॥
आज कवि हिन्दुत्व........

हिन्दुत्व एक शब्द नहीं यह ब्रह्म ज्ञान सस्कृति महान देविविधान
नाम युगों के अनुभव का, परिणाम रण दे मानव का।
यह अमिट अटल सिद्धान्त विश्व को आज सुनादो ॥५॥
आज कवि हिन्दुत्व........

हिन्दुत्व शब्द के अन्तर हित, आध्यात्मिक सार्वभौम।
तत्व के अनुपम अमर स्रोत को विश्व समर से भर दो ॥६॥
आज कवि हिन्दुत्व........

जागरण-गीत

[श्री जगन्नाथ शास्त्री]

बीती रजनी, तम दूर हुआ, अब तो जागो सोने वालो !
लो ! नभ में ऊषा मुस्काई
दिशि-दिशि में फैली अरुणाई
पा मन्द-स्पर्श मलयानिल का
प्रति लतिका झूमी लहराई
कण-कण वसुधा का है पुलकित,
वन उपवन में नव छवि छाई।
तप-निरत कमल ने, बन्द हुई,
खोली पलकें कुछ अलसाई ॥
तुम मानव, फिर भी सुप्त पड़े, सोकर सब कुछ खोने वालो।
रजनी बीती तम दूर हुआ, अब तो जागो सोने वालो ॥
दृढ़ता से युगपट बन्द किये
दिन, मास, वर्ष, बीते अगर
जिनसे पावन था जगतीतल
देखो, सूखी वह मधुर धार,

इस राष्ट्र-दीप की मन्द ज्योति
है कौन! सके जो स्नेह डार?
जननी, यह पूंछ रही कब से
तुम मस्त पड़े सुध-बुध बिसार

करवट बदलो, हे कुम्भकर्ण! कुछ धैर्य धरो रोने वालो।
रजनी बीती तम दूर हुआ, अब तो जागो सोने वालो॥

जब दस्यु - दलों ने सब लूटा
तब भी तू पड़ा रहा निश्चल,
बूढ़ी मां, रोई चिल्लाई
पत्थर-दिल में न हुई हल-चल,

अपने 'सपूत' हो स्वार्थ-अन्ध
हा! फाड़ रहे मां का अंचल,
उठ सिंह! मार ललकार एक
दे-रोक उन्हें बन वीर अचल।

अपनी भूलों पर पछताएं, सब पाप बोझ ढोने वालो।
बीती रजनी तम दूर हुआ, अब तो जागो सोने वालो!

माधव का कदम महान उठा

यदि छिद भी जाये सारा तन,
हो जाये सृष्टि में शिव-नर्तन।
पर होता नहीं मान मर्दन,

प्रांतीय संघ चालक

श्री बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह कानपुर

प्रांतीय प्रचारक

श्री भाऊ राव देवरस

सह प्रांत प्रचारक

(श्री बाबासाहिब देशपांडे)

प्रांतीय कार्यवाह

(श्री धर्मवीर एम० ए०)

कब देखा अत्याचारों में ।

कह दो हिन्दू का परिवर्तन ?

पिछले युग में भी भारत में,

दानवता के अधिकार हुए।

यह आज नहीं हिन्दू पर तो,

पहले भी अत्याचार हुए।

उस यवन काल की आंधी में,

कितने ही नर संहार हुए।

औरंगजेब के शासन में,

तीखे जहरीले वार हुए ।

पर बन्दी बन्दा के उर में कब आता देखा है कम्पन।

कह दो हिन्दू का परिवर्तन ?

इतिहास बतायेगा हिन्दू के,

जीवन में संघर्ष रहा ।

शक हूणों से लोहा लेता,

यह हिन्दुस्थान स्वदेश रहा ।

घायल पौरुष बन्दी बन कर,

भी हिन्दू का आदेश रहा ।

है याद सिकन्दर विश्व विजेता,

का एक समय प्रवेश रहा ।

बन्दी तन वीर हकीकत का, क्या भुला सका है हिन्दूपन ॥

कह दो हिन्दू का परिवर्तन ॥

इस युग में भी तो देखा है,
पंजाब लुटा, निज देश बटा।
प्रतिबन्ध लगा इस अमर भावना,
के पूजक पर हाथ कड़ा।
हो भारत में अन्याय और,
क्यों हिन्दू हो यूं मौन खड़ा।
इसीलिए इस संकल्प व्रती,
माधव का कदम महान उठा

यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित

बीत चुका गोधूलि समय, मानो आया है अभी प्रलय।
बढ़ता जाता है वेग वायु का, करते वृक्षों को कम्पित।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥१॥
दूर क्षितिज में लगी हुई—मानों वर्षा जगी हुई।
ढूंढ रहा है कहीं किसी को, क्या होगा वह दया द्रवित।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥२॥
क्या इसके घर कोईभी नहीं, क्यों स्थिति ऐसी विफल हुई।
खोज रहा है क्यों निराश सा, पीछे बीता हुआ अतीत।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥३॥
क्या यह भूला है अनाथ, क्या परदेशी तृष्णा का अन्त।
अरे नहीं यहतो बागी है, जो माँ के कारणहुआ व्यथित।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥४॥

अब पता चला इसके दुखका, यह पथिक किसी दुखके पथका।
भागा भागा घूम रहा है, उस पथ पर जो संकट पूरित।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥५॥

तिरस्कार पाया जग में, घोर अपेक्षा पग पग में।
खोज रही हैं इसे बेड़ियां, जो हुई इसी से भयभीत।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥६॥

पड़ी सड़ेगी देह कहीं, हुआ अग्नि संस्कार नहीं।
अरे यही तो पुरस्कार हैं, मातृ प्रेम का तथा कथित।
यह कौन खड़ा है क्षुब्ध व्यथित ॥७॥

नमस्कार ले बार बार, अनन्त तेरा पथ अपार।
तुझको मां की गोद सहारा वहां न होगा तू वंचित।
यह कौन खड़ा हैं क्षुब्ध व्यथित ॥८॥

यह निकली मस्तों की टोली

(र०—श्रीराजेन्द्रकुमार जैन)

तूफान छिपाये अन्तर में, ओठों से विप्लव की बोली,
यह निकली मस्तों की टोली।

हाथों में तीक्ष्ण कृपाण लिए,
उर में चुभते अपमान लिए,
बलि होने का अरमान लिए,
मस्तक पर थी रक्तिम रोली।
यह निकली मस्तों की टोली।

क्यों आई मस्तों में मस्ती ?

लख कर इनको मृत्यु हंसती,

पर, हंसती मस्तों में मस्ती,

खेलेंगे जो रण में होली;

यह निकली मस्तों की टोली।

निज जन्मभूमि की चाहों पर,

मां बहिनों की कटु आहों पर,

निज पुरुषों की बलि राहों पर,

चल दिए सभी डाले झोली।

यह निकली मस्तों की टोली।

विश्व को मेरी चुनौती

(र०—श्री बच्छराज जी व्यास)

[श्री बच्छराजजी व्यास, राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघ के एक प्रतिष्ठित कार्यकर्ता है। आपने कई वर्षों तक राजस्थान में संघ कार्य किया है। कार्य अधिक होने के कारण आपको जो भी समय मिला उस में भावनायें जाग्रत हो गईं, आपकी यह कविता पाठकों के लिये स्फूर्तिकारी होगी।

—सम्पादक]

अटल चुनौती अखिल विश्व को,

भला बुरा चाहे जो माने।

डटे हुए हैं राष्ट्र धर्म पर,

विपदाओं में सीना ताने;

लाख-लाख पीढ़ियां लगी तब, हमने संस्कृति उपजाई।
कोटि कोटि सिर चढ़े तभी, इसकी रक्षा सम्भव होपाई॥

हैं असंख्य तैयार स्वयं मिट,
इसका जीवन अमर बनाने।
भला बुरा चाहे जो माने॥ १॥

देवों का है स्फूर्ति हृदयमें, आदर सुत पुरखों का चिन्तन।
परम्परा अनुपम वीरों की, अतुल साधकों के चिर-साधन।
पीड़ित शोषित दुखित बान्धवों,
के हमको हैं दुख मिटाने।
भला बुरा चाहे जो माने॥२॥

नहीं विधाता नई सृष्टि की, सीधी सच्ची स्पष्ट कहानी,
प्रेम कवचहै त्याग अस्त्र है, लगन धार आहुति हैं वाणी।
सभी सुखी हों यही स्वप्न है,
मर कर भी यह सत्य बनाने।
भला बुरा चाहे जो माने॥३॥

नहीं विरोध को रोक सकेंगे, निन्दक होवेंगे अनुगामी।
जन-जन इसकी वृद्धि करेंगे, इसकी गति थमेगी न थामी।
बस इसकी हुंकार मात्र से,
दुश्मन लगेंगे आप ठिकाने।
जुटे हुए हैं इसी लिए हम,
राष्ट्र धर्म को अमर बनाने।

डटे हुए हैं राष्ट्र धर्म पर,

विपदाओं में सीना ताने ।

भला बुरा चाहे जो माने ॥४॥

भावनाओं की शक्ति

यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ।

कठिन दुर्गम श्रृंग से क्या प्रबल सरितायें रुकी हैं ।

क्या सका है रोक कोई शलभ को लौ में जलन से ।

च्युत किया क्या यातना ने, वीर को कर्तव्य पथ से ।

लोह दुर्बल द्वार से क्या शक्तियां भी रुक सकी है ।

यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ॥१॥

यातना प्रह्लाद ने भी थी सही निज श्रेय पथ पर ।

दृढ़ रहा था वीर राणा ध्येय पर कटिबद्ध होकर ।

यातना से भावना तो स्वर्ण सम उज्ज्वल हुई है ।

यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ॥२॥

गुरु सुतों का क्या किया था याद हैं वे यातनायें ।

क्या हकीकत का किया था याद वे जलती व्यथायें ॥

दृढ़ हृदय के सामने तो यातनायें ही थकी हैं ।

यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ॥३॥

यातना उस वीर बन्दा ने सही हंसते वदन से ।

सुत कलेवर भी खिलाया ना हटा पर वीर प्रण से ।

भावनाओं से सदा ही यातना कुचली गई है।
यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ॥४॥

यातनायें ही मिली थी कंस से उस देवकी को।
भावनाओं ने दिया था जन्म भी कृष्ण जी को।
यातना से भावना में शक्तियां बढ़ती रही हैं।
यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ॥५॥

यातनायें वन्हि सम है भावनायें स्वर्ण सम हैं।
यातना यदि शस्त्र है तो भावना भी आत्मबल है।
दृढ़ व्रती की आत्मायें कब अपावन कर सकी हैं।
यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी हैं ॥६॥

जेल हमको खेल है ना यातना इसको समझते।
राष्ट्र के उत्थान हेतु यातना को पुष्प गिनते॥
यातना को यातना तो वीर गिनते ही नहीं है।
यातनाओं से किसी की भावनायें कब मिटी है ॥७॥

कौन जिसने दी चुनौती ?

(र०—प्रो० परमानंद शर्मा)

भग्न प्रतिमा पृत सुन्दर,
गगनचुम्बी कलश खंडहर,
बन्द पूजा आरती स्वर,
बन्द ताण्डव, मूक शंकर
शान्त नूपुर नाद झनझन,
शान्त झिलमिल दीप स्पन्दन,

स्तब्ध, चुप चुप, त्रस्त प्रांगण,
शान्त अणु अणु शान्त कण,
आज करता रुद्ध स्वर से,
मातृ मन्दिर मूक क्रन्दन,
खंड खंड पुकारता है,
आज दे दे नव निमन्त्रण,
कौन वह जिसके करों ने,
मातृ मन्दिर को उजाड़ा ?
नभ भेदी उच्च शिखर से,
राष्ट्रध्वज किसने उखाड़ा ?

कौन जिसने दी चुनौती,
आत्म गौरव को हमारे ?
किस निशाचर ने किये पद
दलित पावन चिह्न मारे ?
गाड़ दो उसको मही में
क्षुद्र वह पापी कहां है ?
तुम उठो, वीरो, तुम्हारा
चाप रणव्यापी कहां है ?

शत्रु-मर्दन कर करो निर्माण
फिर से मातृ-मन्दिर
दीप की लौ भी जगे फिर
और गूंजे आरती-स्वर
वन्दना मां के पदाम्बुज
की, करें मां के पदाम्बुज
एक स्वर होकर कहें सब
नित्य "जय, जननी हमारी !"

एक नेता एक पथ हो

(श्री ऋषिराज नौटियाल)

[श्री ऋषिराज नौटियाल उत्तर प्रदेश में देहरादून जिले के तरुण राष्ट्रकवि हैं जिन्होंने अपने को प्रथम एक विशेष विचारधारा में बाँधकर लिखना प्रारम्भ किया है। इस संग्रह में आपकी कई कविताये दी जा रही हैं जिनको उनके मुक्तक काव्य 'मुण्डमालिनी' से संग्रह किया गया है।—सम्पादक]

हो कार्य पद्धति,
एक सी हो पंथ की गति,
एक भाषण, एक सी मति,
एक ही ध्वज के सहारे,
एक स्वर हो, एक मत हो।
एक नेता एक पथ हो॥

आज अगणित कल्पनायें,
भिन्न पथ, मत, क्रम, सदायें,
हैं प्रगति पर शृंखलायें।
भोगता फल राष्ट्र जिनका,
आज रौरव नर्क वत हो।
एक नेता एक पथ हो।

दूर यश की कामना से,
दूर पद की भावना से,
स्वार्थमय आराधना से,

साधना विश्वास की निज,
प्राण-प्रण से अनवरत हो !
एक नेता, एक पथ हो !

रहे जब तक मातृ-बन्धन,
अश्रु, हाहाकार, क्रन्दन,
दैन्य, अत्याचार, पीड़न,

'शर्म है सुख सांस भरना,
आज फिर ऐसी शपथ हो !
एक नेता, एक पथ हो ॥

तज सभी गृह बन्धनों को,
सौख्य के अवलम्बनों को,
प्यार के अभिनन्दनों को,

पूर्ण बन त्यागी, विरागी,
अब तरुणता, राष्ट्र रत हो,
एक नेता एक पथ हो,

कह चले नेतृत्व जिसको,
जानकर बस तत्व उसको,
मान कर अमरत्व उसको,

पूर्ण निष्ठा औ लगन से,
अन्त तक पालन सतत हो।
एक नेता, एक पथ हो ॥

नारी के प्रति

श्रीमति अरुण प्रभा बन्सल

[विदुषी कवियत्री श्रीमती बंसल, दिल्ली की प्रख्यात कवियत्री है, आप उन कवियत्रों में से एक हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं को लिख कर चार दिवारों में ही बन्द कर दिया है। आप कभी भी मंच पर कविता पाठ के लिये जनता के सामने नही आई। संग्रह में सुश्री कवियत्री की प्रथम रचना उनके परिचयार्थ ही दे रहा हूँ।—सम्पादक]

हे भरत लाल की जननी,
रे पद्मा की अवतार बोल
तेरा पथ, तू किस ओर चली
निजको सम्हाल अबहू गरबोल,

तू भूल गई अपनी गाथा
चितौड कीर्ति का नही ध्यान
तूने आन निभाने को
अपने तनका नही किया मान

तेरी गाथा से भरा हुआ
राजपूतों का स्वर्णिम इतिहास
तेरे पद में छिपा हुआ
भारत का भावी विकास

तुझ में दुर्गा का राग भरा
लक्ष्मी का उल्लास भरा
मीना बाजार की रण देवी
उस किरण मयी का हास भरा
राणी से बन कर के चेरी
पाण्डव के संग बन में घूमी
बन कर के रौद्र भवानी तू
दैत्यों की लाशों पर झूमी

तेरे दोनों कर में धारे
जब शत्र विमर्दन को निकली
झांसी के मैदानों में
घोडों पर चढ़ बिजली निकली
पर भूलगई तू मान ध्यान
अपने निज गौरव का गुमान
क्या कुल को मर्यादा होती
उन वीरबली का कर ध्यान

उठ आज जगत में एक बार
भारत में प्रलय मचाने को
नारी नही अबला होती है
जग में सन्देश पहुचाने को

तेरे चरणों पर गिरे चन्द्र
पद रज पर लोटे अम्बर
तेरी पद तालों को सुनकर
झूमें विष्णु ब्रह्मा शंकर

युग-युग को याद विजयदशमी

(र० श्री शिवनाथ शैलेय)

युग-युग की याद विजय दशमी, आई नूतन उपहार लिये !
चिर बिछुड़े आज चले मिलने, उरमें संचित मनुहार लिये !

प्रतिवर्ष दशहरा आता था, दशमुख की कथा सुनाने को,
उच्छृंखल, मायावी खल के कृत्यों की याद दिलाने को,
ग्रामों में होती धूमधाम, हर नगर-नगर मेले उत्सव
दर्शन हित राम तपस्वी के उमड़ा करते नरी-नर सब,
वह सिया-हरण, वह महायुद्ध, आते रावण की हार लिये !
युग-युग की याद विजय दशमी, आई नूतन उपहार लिये !
चिर बिछुड़े आज चले मिलने, उरमें संचित मनुहार लिये !

वह शुभ कर्मों का सुपरिणाम, दुष्कर्मों की जलती ज्वाला,
जगती का काला तम हरकर, भर देती ज्योतित उजियाला।
वह आत्मतेज, वह दृढ़ निश्चय, वह अटल धैर्य, सुरसे तानी,
मर्यादा-नर-वर राम प्रभो, वह जनक-सुता सी कल्याणी।
दे जाते हैं संदेश नया, नव-नव शिक्षा हर बार लिये!
युग-युग की याद विजयदशमी, आई नूतन उपहार लिये!
चिर-बिछड़े आज चले मिलने, उर में संचित मनुहार लिये!

× × × ×

यह जीवित याद पुनः आ-आ, जाती है अविकल ठेस लगा।
जिन को सोते युग बीत गया, क्या उन्हें सकी यह कभी जगा?
इस दिन कर स्थापित अचल स्तम्भ मृतकों में फूंक गया गाथा—
वह नर-वर; सोते मचल उठे, तमतमा उठा झुकता माथा।
वे मुर्झाये वर-बदन खिले, नव अरुण स्वर्ण का ज्वार लिये!
युग-युग की याद विजयदशमी, आई नूतन उपहार लिये!
चिर बिछड़े आज चले मिलने, उर में संचित मनुहार लिये!

× × × ×

पर विजय अनुराग हुआ द्विगुणित तेरा महत्व, सम्पन्न हुई
पाकर केशव का तेज पुंज जगमगा उठी तू धन्य हुई।
तव आंगन में फल-फूल उठा, वह धीर अमर वट फलदाता
जो जग की क्षुधा-पिपासा हर, देगा छाया होगा जन-त्राता।
यह वसुधा भर में फैल चला, नव जीवन का संचार लिये,
युग-युग की याद विजयदशमी, आई नूतन उपहार लिये!
चिर बिछड़े आज चले मिलने, उर में संचित मनुहार लिये!

× × × ×

भारत का कण-कण जाग उठा अब स्वाभिमान का मतवाला,
सब तरुण तपस्वी आज बने, तज कर पद का मादक प्याला।
इस हिन्दु-राष्ट्र उज्जवल नभमें शशि उदित हुआ, अगणित तारे
फिर राम कृष्ण के तेज-अंश की गूंजी जग में हुंकारें।
अपनों ने भी होकर शंकित, पग-पग कितने प्रतिकार लिये!
युग-युग की याद विजयदशमी, आई नूतन उपहार लिये!
चिर बिछुड़े आज चले मिलने, उर में संचित मनुहार लिये!

× × × ×

पर, तुमको आज बधाई है, ऐ हिन्दुराष्ट्र के बनमाली!
विपरीत शक्ति अनुकूल हुई,' प्राची में चमकी नव लाली।
भारत के कोने कोने से अब फूट पड़ीं जय की ध्वनियां,
'हे विजय तुम हो धन्य आज, गातीं घर-घर कुल कामिनियां,
'भावी भारत का पथदर्शक तुम राम-राज्य उद्गार लिये'
युग-युग की याद विजयदशमी, आई नूतन उपहार लिये।
चिर बिछुड़े आज चले मिलने, उर में संचित मनुहार लिये!

नेता पर विश्वास अटल हो

(श्री ऋषिराज नौटियाल)

प्रश्न न हो कब तक पथ चलना,
प्रश्न न हो कब तक यूं जलना,
प्रश्न न हो क्यों अणु अणु गलना।

तन, मन, का कर पूर्ण समर्पण,
आदेशों की साध प्रबल हो।
नेता पर विश्वास अटल हो॥

युग की गति जो रोक सकेगा,
गति से सतपथ जोड़ सकेगा,
निश्चित शुभ वह सोच सकेगा,

भूत, भविष्यत, वर्तमान पर,
जय पायेगा, वह मंगल हो।
नेता पर विश्वास अटल हो॥

त्याग सभी शंकायें, विभ्रम,
शांत, संयमित, दृढ़तर, दृढ़तम,
करते जायें कठिन परिश्रम,

'आज' अगर बीते भी दुखमय,
निश्चित अपना 'कल' सुखमय हो।
नेता पर विश्वास अटल हो॥

जिसका उपवन पल-पल विकसित,
जिसका सपना क्षण क्षण निर्मित,
जिस पर जगती आज अचम्भित,

जिसके संकेतों पर प्रलयंकर-
शंकर का कोलाहल हो।
नेता पर विश्वास अटल हो॥

अन्यों के आदर्शों पर पल,
अन्यों की ही गतिविधि पर चल,
अन्यों का ही लेकर सम्बल,

अपनी उलझन सुलझ न सकती,
बढ़ न सकेंगे चरण सफल हो।
नेता पर विश्वास अटल हो।

अपनी ही गति, अपनी ही मति,
अपना ही पथ, अपनी पद्धति,
अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति,

अपने ही आदर्शों का बल,
अपने गौरव का सम्बल हो।
नेता पर विश्वास अटल हो॥

विजय निश्चय—विजय की भैरवी गाते चलो, साथी!

(श्री रमेशचन्द्र निगम)

कठिन-पथ हो मगर तुम तो सदा बढ़ते रहो साथी!
तुम्हारे रास्ते में आंधियां उठने लगें तो भी,
नहीं पीछे हटो तुम वेग से चलते रहो, साथी!
तुम्हीं को रोकने के ही लिये कांटे पड़े होंगे,
तुम्हीं को रोकने के ही लिये पर्वत खड़े होंगे,
कहां तक ईंट-पत्थर कंकड़ों पर ध्यान तुम दोगे

प्रांतीयप्रचारक

श्री दादा रावजी परमार्थ

मद्रास
के
प्रान्त नायक

प्रांतीयकार्यवाह

श्री दक्षिण मूर्ति

श्री भोलानाथ झा

बिहार प्रान्त
के
नायक

श्री गजानन राव जोशी

इन्हें तो ठोकरों से तुम निडर होकर हटा देना;
अचल पथ पर भरे साहस सबल चढ़ते रहो साथी !
तुम्हारे खून से ही देश का उत्थान होना है—
तुम्हें तो एकता और, शक्ति का ही बीज बोना है;
तुम्हें स्वाधीन-भारत में तभी सुख-श्वास लेना है,
तुम्हीं जबमोड़ मुख लोगे विचारो,क्या अरे होगा ?
कठिन पथ हो मगर तुम तो सदा बढ़ते रहो, साथी ।

एक पथ पर चल

(श्री ऋषिराज नौटियाल)

धर चरण ऐसे अडिग, जो युग-नयन विस्मित निहारें ।
वक्ष कर इतना कठिन, जो नत बनें उन्नत दुधारें ।
प्राण-तन एकीकरण कर, जो चला बन पथ—भिखारी ।
चूम ध्रुव पद-चिन्ह उसके, आरती जग ने उतारी ।
एक डग भर चल, विकट अभिलाष बन कर चल ।
कठिन अभ्यास बनकर चल, विजयकी आस बनकर चल ।
एक पथ पर चल मगर—विश्वास बन कर चल ।

× × × ×

ध्येय की एकाग्रता में—जो नयन पर छांह किंचित—
भी न जग की पड सकी तो है विजय वरदान निश्चित ।
किन्तु क्षण की मूर्छता भी, खेल दारुण खेल देगी ।
और उस असफल मरण पर, विहँस यह दुनिया पड़ेगी ।

निस्सीम सुख की खोज हित, सन्यास बन कर चल।
कठिन अभ्यास बनकर चल, विजयकी आस बनकर चल।
एक पथ पर चल, मगर विश्वास बन कर चल।
जग न इतना पंथ बाधक, मन चपल जितना स्वयं है।
फल न इतना विष निमज्जित, व्यर्थ भ्रम जितना स्वयं है।
लक्ष्य की मत चिन्तना कर, लक्ष्य साधक का पुजारी।
पंथ की मत कल्पना कर, पंथ चरणों का भिखारी।
भ्रम रहित दुर्जय अचंचल, प्यास बन कर चल।
कठिन अभ्यास बनकर चल, विजयकी आस बनकर चल।
एक पथ पर चल मगर विश्वास बन कर चल।

उदघोष

[श्री आनन्द कुमार]

ये इतिहासों की कहानियां,
कहती हैं तुम मुझे गढ़ो।
याद करो वे भूली बातें,
विजय मार्ग की ओर बढ़ो।
विपदाओं से घबरा कर
पैरों को पीछे धरना क्या?
स्वाभिमान का प्रश्न जहां हो
वहां मृत्यु से डरना क्या?

नभ का एक एक तारा,

कहता है तुम उत्थान करो ;

रविकी रश्मि रश्मि कहती है,

तन मन धन बलिदान करो।

कण कण यही बात कहते,

भारत माता के कष्ट हरो।

मेरी विजयों का महापर्व

(र०—श्री प्रताप रस्तोगी)

[श्री रस्तोगी उत्तरप्रदेश में कानपुर जिले के प्रसिद्ध कार्यकर्ता एवं पत्रकार है। आप आज कल नागपुर से प्रकाशित युगधर्म में काम कररहें है और इससे पूर्व पॉचजन्य एवं उत्थान में काम कर चुके। विशुद्ध भारतीय संस्कृति से पूर्ण आपकी रचनायें प्रत्येक पत्र में प्रकाशित होती रहती है—सम्पादक]

किसमें क्षमता ले छीन कि जो मेरी मां का सिंदूर कहीं
मेरी विजयों का महापर्व, आता ही है, दिन दूर नहीं !
पथ पर जैसे ही निकला तो असकुन सा उल्कापात हुआ
स्वजनोंने किया प्रताडित और स्वजनों से ही आघात हुआ,
चट्टानों से टकरा टकरा कर प्रतिपल जर्जर गात हुआ
तूफानों के आंचल में ही, जीवन का पुण्य प्रभात हुआ।
अपने गीतों से गतयुग का अभिमान जगाता फिरता हूं
देशानुराग का धीर-वीर भगवान जगाता फिरता हूं

पंचाली सी ललानाओं का अपमान जगाता फिरता हूं
'उत्तिष्ठत जाग्रत' मन्त्रों का मैं गान जगाता फिरता हूं

कहता हूं मुचकुन्दी निद्रा तज मागध के प्राचीर उठो !
रणपथ पर सुनो पुकार हुई जड़ता का घन तम चीर उठो !
उच्छ्वासो प्रलय समीर जगो, ओ मानवेन्द्र बलवीर उठो !
तप के अभ्यासी बनवासी राणा के अक्षय तीर उठो !

गोरी की संतति से कह दो अत्यधिक बनें अब क्रूर नहीं
नादिर चंगेजों के सपने हो रहे धूल से पूर कहीं
उनका विकास-नक्षत्र शेष होता ही है दिन दूर नहीं,
मेरी विजयों का महापर्व आता ही है दिन दूर नहीं ।

× × × ×

भूलों पर होता आया है फूलों की सुषमा का विकास,
मुरझा जाता है तभी कुसुम पत्रों पर पड़कर अनायास,
कालों से घेर सका कोई कब महाप्रकृति का मुक्तहास—
केहरि को बांध सका क्षण भी कब ही हरिणों का नागपाश ?

तजकर स्वप्नों की सुन्दरता ओ 'सोमनाथ' के प्राण चलो,
अपने ध्वंसों से भारत का करते अभिनव निर्माण चलो,
ओ 'कौशलेश' के बाण चलो; ओ गोकुलेश के त्राण चलो,
सेवा तप का परिधान पहन सन्तप्तों के कल्याण चलो !

भूलते नहीं हैं स्मृतियों से वे सतियों के बलिदान कभी,
गोरा की याद दिलाने को जीवित है राजस्थान अभी,

क्लैव्यं, दुर्बलता है महापाप; बन कर्म यशस्वी पार्थ चलो—
पौरुष को मिली चुनौती है, निज स्वाभिमान रक्षार्थ चलो !
कह दो मिटते न कभी जग में अपमानों के नासूर कहीं
नलते के [illegible] की विद्युत् यदि चमक उ[illegible] कहीं

———

स्वातन्त्र्य देवता बलिदान मांगता

(श्री ऋषिराज नौटियाल)

एक चोट, एक दर्द विद्यमान हो,
एक शपथ, एक भाव, एक आन हो,
एक पन्थ, एक ध्येय, एक ध्यान हो,
राष्ट्र आज हृदय में तूफान मांगता।
स्वान्तत्रय-देवता बलिदान मांगता।

दीप ज्योति के लिये, स्वयं प्रथम जले,
क्रूर शूल अंक में ही फूल वे पले,
सरित घोर युद्ध करे, लक्ष्य से मिले,
वरदान के लिये गरल-पान मांगता।
स्वातन्त्रय-देवता बलिदान मांगता

गंगा न बही आज तक अश्रु-धार से,
प्राप्य कब कुबेर इस भिक्षुक प्रकार से,
स्वर्ग कभी साध्य न केवल विचारसे,

घोर यत्न, त्याग के प्रमाण मांगता।
स्वातन्त्र्य-देवता बलिदान मांगता!

आज सुप्त सिन्धुओं में रोष छा रहा,
मृत्तिका की पुतलियों में प्राण आ रहा,
आज विहंग पींजड़े का छटपटा रहा,
आज बन्धनों से प्राण त्राण मांगता।
स्वातन्त्र्य-देवता, बलिदान मांगता।

एक बार पुत्र, पिता, भगिन सब चलें,
एक बार घोर नर्क-यतना सहें,
एक बार मातृ-भूमि तू अमर, कहें,
फिर चिताओं पर चिताश्मशान मांगता।
स्वातन्त्र्य- देवता बलिदान मांगता।

चलो बढ़े चलो

(श्री प्रकाशचन्द 'प्रकाश')

[विशाल राजस्थान के कवि, एवं उपदेशक श्री प्रकाशचन्द जी 'प्रकाश' अपने क्षेत्र में एक विशेष स्थान रखते हैं। आप कविता करने के लिये कविता नहीं करते अपितु उस पर साक्षात्कार करते हैं। जनता के सामने वही चीज लाते हैं जिससे जनता के जीवन में एक नया युग आये —सम्पादक]

निशंक सावधान हो बढ़े चलो बढ़े चलो।
बढ़े चलो बढ़े चलो

विपत्ति-विघ्न-जाल हो
प्रचण्ड-ज्वाल माल हो
प्रमत्त गज विशाल हो
कि केहरी कराल हो
विषाक्त बंक-व्याल हो
समक्ष खड़ा काल हो
तदापि न मन्द चाल हो
व्यथित अन्तराल हो,
मरण करो भले सुनीति-पन्थ से नहीं टलो।
बढ़े चलो बढ़े चलो

× × × ×

प्रखर किरण समूह से
पयोद छिन्न भिन्न कर
समोद चले जा रहे
प्रचण्ड भुवन—भास्कर
विटप, शिलादि ध्वंसकर
बना डगर, उमंग भर
समुद्र ओर जा रही
सवेग जान्हवी निडर,
मिले न ध्येय जब तलक, विराम तब तलक न लो।
बढ़े चलो बढ़े चलो

× × × ×

स्वदेश प्रेम का हृदय
पवित्र भरा जोश हो

न हारना हिम्मत चहे
मंजिल हजार कोस हो
विनष्ट हो न सभ्यता
चरित्र में न दोष हो
हरेक युवक देश का
सुभाष चन्द्र बोस हो
ध्वजा 'प्रकाश' राष्ट्र की सुदृढ़ करों में थाम लो !
बढ़े चलो बढ़े चलो

मौत का शृंगार मत बन
(श्री ऋषिराज नौटियाल)

कांच के कीड़ों सदृश—क्यों जिन्दगी उपहास करता।
बुजदिलों का प्राण लेकर, ईश पर विश्वास करता।
हाथ पर है हाथ रक्खे, व्यर्थ फिर संताप करता।
भाग्य उसको पूजता है, जो मदद निज आप करता।
जीत बन कर जी अमर तू, मौत जैसी हार मत बन।
रे मनुज, भू-भार मत बन ! मौत का शृंगार मत बन ॥

卐 卐 卐 卐

मृत्यु-पथ पर चल रहे हैं, ये हजारों प्राण चंचल।
एक दिन तू भी उन्हीं में—जा मिलेगा मौन सा पल।
आज जिनको चूमता जग, कल उन्हीं को भूल जाता।
पर शहीदों के चरण में, युग युगान्तर सिर झुकाता।

आज के अंगार क्षण में, प्यार का संसार मत बन !
रे मनुज, भू-भार मत बन ! मौत का शृंगार मत बन !!

卐 卐 卐 卐

एक दिन जीवन तुझे — ले गोद में आता जगत में।
एक दिन कर मृत्यु निष्ठुर—छीन ले जाते विगत में
मृत्यु-जीवन दो दिनों के, मध्य ही क्षण एक तेरा।
तम भरे यम-नगर का, क्या ज्ञात कब फिर हो सवेरा।
क्षण एक ही में पूर्ण हो, सौ वर्ष का व्यापार मत बन !
रे मनुज, भू-भार मत बन ! मौत का शृंगार मत बन !!

—★—

हम हिन्दुस्थान निवासी हैं
प्यारा है हिन्दुस्थान हमें !

[र०—श्री प्रकाशचन्द्र 'प्रकाश']

हिम किरीट से सज्जित शोभित, जिसका कि हिमालय विशद भाल
बंगाल, और गुजरात प्रांत, जिसके दोनों बाहू विशाल
पंजाब वक्ष, 'संयुक्त' प्राण, है राजस्थान सुअन्तराल
दक्षिणी कूल, दोनों पद को धोती नित सिन्धु-तरंग-माल

ऐसा स्वदेश हो क्यों ? न स्वर्ग
से भी बढ़कर सुखदान हमें।
हम हिन्दुस्थान निवासी हैं
प्यारा, है हिन्दुस्थान हमें।

हम जिसकी जल वायु में पले, घुटनों के बल धूल में चले
जिसके हरियाले खेतों का खाकर अनाज फूले व फले
देखे हमने हैं मृदुल स्वप्न, जिसके उज्ज्वल आकाश तले
जिसकी गायों का मधुर दूध पी पी कर आनंद से उछले

उस जन्म भूमि प्रिय जननी पर
हो क्यों ? न सदा अभिमान हमें ।
हम हिन्दुस्थान निवासी हैं
प्यारा है हिन्दुस्थान हमें ।

किसको न ज्ञात इसके हित हमने खड्ग हाथ में तोली है
बहुबार शत्रु के शोणित से रण-थल में खेली होली है
बन शुद्ध अहिंसक, संगीनों के सन्मुख छाती खोली है
जब तलक देह में प्राण रहे जय मातृभूमि की बोली है

देते हैं आज मिटाने की
धमकी नाहक नादान हमें
हम हिन्दुस्थान निवासी हैं
प्यारा है हिन्दुस्थान हमें ।

जिसके हित राणा प्रताप ने थी, धूल जंगलों की छानी
जिसकी रक्षा के लिये चिता में जली पद्मिनी महारानी
जिसके हित वीर शिवा, बन्दा, गुरु गोविंद ने की कुरबानी
जिसकी रक्षा के हेतु लड़ी झांसी की रानी मरदानी

उसकी रक्षा के हित सब कुछ
करना होगा बलिदान हमें !

हम हिन्दुस्थान निवासी हैं
प्यारा है हिन्दुस्थान हमें ।

पी गये इसी की रक्षा हित विष-प्याला दयानन्द ऋषिवर
इसके ही लिये लाजपत ने फुड़वाया था लाठी से सर
इस पर बलि हुए यतीन्द्र, राजगुरु, बिस्मिल, भगत, चन्द्रशेखर
हो गये इसी पर तो सुभाष नेता गांधी जी न्यौछावर ।

इन वीर सपूतों की नाईं
मां की रखनी है शान हमें ।
हम हिन्दुस्थान निवासी हैं
प्यारा है हिन्दुस्थान हमें ।

राष्ट्र ही भगवान तेरा

[र० श्री ऋषिराज नौटियाल]

युग युगों से दीप-माला, भोग और नैवेद्य सजता ।
भावना में नयन मूंदे, कल्पना के लोक रचता ।
मन सरल अंचल पसारे, होती सदा ही वन्दना ।
तन-मन समर्पण कर सभी कुछ, शुद्ध पूजा—अर्चना ।
पर कभी क्या दे सका कुछ ये निठुर पाषाण तेरा ।
राष्ट्र ही भगवान तेरा ।
शंख, घण्ट, आरती के रव, गुंजे रोमांच दाता ।
मठ शिवालय मन्दिरों का चूम पद पाषाण आता ।
उस उपेक्षित दीन पर, प्राण तेरा कब पिघलता ।

भगवान, जो पथ में बिलखता, हड्डियों में प्राण-मय—
चूम ले क्षण भर उसे तो मोक्ष का वरदान तेरा।
राष्ट्र ही भगवान तेरा।

卐 卐 卐 卐

पूज्य स्थल ये विगत के, हैं आज के युग में पुराने।
छोड़ इनकी मोह-माया, इस जगह तुमको बिठाने—
राष्ट्र नायक, राष्ट्र योगी—राष्ट्र—देवी आज जीवित।
ले शपथ फिर धो चलो, तुम भी युगों का मुख कलंकित।
युग नियामक बना रहेगा, यह अमर बलिदान तेरा।
राष्ट्र ही भगवान तेरा।

विश्व आगे बढ़ चला, अभिमान-अम्बर चढ़ चला लो।
संकटों के कंटकों पर, हस्तियां निज मढ़ चला जो।
पूछ लो क्षण भर उसे तो, राष्ट्र का अभिमान क्या है।
राष्ट्र की रज, राष्ट्र मन्दिर, राष्ट्र का सम्मान क्या है।
धर्म ये ही, कर्म ये ही, योग—जय—तप ध्यान तेरा।
राष्ट्र ही भगवान तेरा।

मृत्यु-मुख में देश हो तो, गौण हैं व्यापार सारे
हो अमर मर कर इसी में कर सभी चिन्तन किनारे।
बन विमुख, युग—धर्म से जो, आज हैं इस ढोंग में रत।
वे सभी गद्दार, कायर, दूर—उनसे ईश का पथ।
भूल मत, है राष्ट्र-निधि यह, अस्थि, मज्जा, प्राण तेरा।
राष्ट्र ही भगवान तेरा।

—★—

पाटिलपुत्र की गंगा से

(र०—रामधारीसिंह "दिनकर")

श्री रामधारीसिंह दिनकर—बिहार के प्रसिद्ध वीररस के कवि हैं, जिन्होंने प्रेयसि और प्याले को नहीं अपितु अपने देश को सजीव कल्पना से देखा। पाटलीपुत्र की गंगा से कविता में प्राचीन भारत के इतिहास की झाँकी पाई जाती है।—सम्पादक]

संध्या की इस मलिन सेज पर
गंगे ! किस विषाद के संग
सिसक-सिसक कर सुला रही तू
अपने मन की मृदुल उमंग ?

उमड़ रही आकुल अन्तर में
कैसी यह वेदना अथाह
किस पीड़ा के गहन भार से
निश्चल-सा पड़ गया प्रवाह ?

मानस के इस मौन मुकुल में
सजनि ! कौन-सी व्यथा अपार
बनकर गन्ध अनिल में मिल
जाने को खोज रही लघु द्वार ?

चल अतीत की रंगभूमि में
स्मृति-पंखों पर चढ़ अनजान
विकल-चित्त सुनती तू अपने
चन्द्रगुप्त का क्या जय-गान

घूम रहा पलकों के भीतर
स्वप्नों-सा गत विभव विराट
आता है क्या याद मगध का
सुरसरि ! वह अशोक सम्राट् ?

संन्यासिनी-समान विजन में
कर-कर गत विभूति का ध्यान
रो रोकर गा रहा देवि ! क्या
गुप्त बंश का गरिमा-गान ?

गूंज रहे तेरे इस तट पर
गंगे ! गौतम के उपदेश
ध्वनित हो रहे इन लहरों में
देवि ! अहिंसा के संदेश

कुहुक-कुहुक मृदु गीत वही
गाती कोयल डाली-डाली
वही स्वर्ण-सन्देश नित्य
बन आता ऊषा की लाली ।

तुझे याद है ? चढ़े पदों पर
कितने जय-सुमनों के हार
कितनी बार समुद्रगुप्त ने
धोई है तुझ में तलवार ?

तेरे तीरों पर दिग्विजयी
नृप के कितने उड़े निशान

कितने चक्रवर्तियों ने हैं
किये कूल पर अवभृथ-स्नान
विजयी चन्द्रगुप्त के पद पर
सैल्यूकस की वह मनुहार
तुझे याद है देवि ! मगध का
वह विराट उज्जवल शृङ्गार ?

जगती पर छाया करती थी
कभी हमारी भुजा विशाल
बार-बार झुकते थे पद
ग्रीक, यवन के उन्नत भाल ।

उस अतीत गौरव की गाथा
छिपी इन्हीं उपकूलों में
कीर्ति-सुरभि वह गमक रही
अब भी तेरे बन-फूलों में

नियति-नटी ने खेल-कूद में
किया नष्ट सारा शृङ्गार
खँडहर की धूली में सोया
तेरा स्वर्णोदय साकार

तूने सुख-सुहाग देखा है
उदय और फिर अस्त, सखी
देखा आज निज युवराजों को
भिक्षाटन में व्यस्त, सखी !

एक-एक कर गिरे मुकुट
विकसित वन भस्मीभूत हुआ
तेरे सम्मुख महासिन्धु
सूखा, सैकत उद्भूत हुआ।

धधक उठा तेरे मरघट में
जिस दिन सोने का संसार
एक एक कर लगा दहकने
मगध-सुन्दरी का शृङ्गार।

जिस दिन जली चिता गौरव की
जय-भेरी जब मूक हुई
जमकर पत्थर हुई न क्यों
यदि टूट नहीं दो-टूक हुई ?

देवि! आज बज रही छिपी ध्वनि
मिट्टी में नक्कारों की
गूँज रही झन-झन धूलों में
मौर्यों की तलवारों की।

दायें पार्श्व पड़ा सोता
मिट्टी में मगध शक्ति-शाली
वीर लिच्छवी की विधवा
बायें रोती है वैशाली !

तू निज मानस-ग्रन्थ खोल
दोनों की गरिमा गाती है

प्रान्तीयप्रचारक

श्री मनोहर रावजी मोघे

मालवा प्रान्त के नायक

महप्रान्तीयप्रचारक

श्री मदन मोहन दूबे

प्रान्तसंघचालक

श्री बापू साहिब सोहनी

बरार प्रान्त

के

नायक

प्रान्तप्रचारक

श्री भगवान दास गुप्ता

वीचि - दृगों से हेर - हेर
सिर धुन-धुनकर रह जाती है।

देवि ! दुखद है वर्त्तमान की
यह असीम पीड़ा सहना
कहाँ सुखद इससे संसृति में
है अतीत की रत रहना।

अस्तु, आज गोधूलि-लग्न में
गंगे ! मन्द - मन्द बहना
गाँवों, नगरों के समीप चल
दर्द - भरे स्वर में कहना—

"सम्प्रति जिसकी दरिद्रता का
करते हो तुम सब उपहास
वहाँ कभी मैंने देखा है
मौर्य-वंश का विभव-विलास"।

अवतार बन संहार

[र० श्री ऋषिराज नौटियाल]

आज इस रावण कुटिलको राम बन संहार।
तू अवतार बन संहार! तू करतार बन संहार!!
भंग कर सुख, शांति औ, इस विश्व का सौन्दर्य सारा।
हंस रहा नभ पर अभी, हतभाग्य जो पुच्छल सितारा।

वह न छिप सकता कभी भी, अर्चनों से, पूजनों से।
शब्द के अवलम्बनों से, प्यार के भुज-बन्धनों से।
इस कुटिल को रुद्र की—हुंकार बन संहार।
तू अवतार बन संहार, तू करतार बन सहार॥
आज इस रावण कुटिल को—राम बन संहार।
नीति है, इस क्रूरता के, क्रूर बन कर प्राण लेना।
न्याय है निरशृंसता के, कण्ठ पर असि-धार देना।
पुण्य है, इन पापियों के-रक्त में निज हाथ रंगना।
धर्म है, उस रक्त को पी—राष्ट्र बन्धन मुक्त करना।
कृष्ण के, शिवराज के, अनुसार बन संहार।
तू अवतार बन संहार, तू करतार बन संहार।
आज इस रावण कुटिलको—राम बन संहार।
कुछ करो ऐसा, कि रवि पर—कालिमा का धन न छाये।
कुछ करो ऐसा, कि शशि को—राहु दानव ग्रस न पाये।
कुछ करो ऐसा, कि गंगा रज-कणों से पट न जाये।
कुछ करो ऐसा, कि काशी का हृदय मृदु फट न जाये।
बल सहित या छल सहित, या प्यार बन संहार।
तू अवतार बन संहार। तू करतान बन सहार॥
आज इस रावण कुटिल को—राम बन संहार।
अवतार बन संहार॥

स्वाभिमान चाहिये !

[र० श्री प्रकाशचन्द्र 'प्रकाश']

नवजवान चाहिये
नवजवान चाहिये
निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये !

दिन रात असुर कर रहे हत्याएं हानियां,
होती समाप्त हैं न दुखों की कहानियां
मिटती सुहागिनों की भाग्य की निशानियां
आयेंगी काम कब ये जवानो ! जवानियां;

होना हृदय में कुछ तो
स्वाभिमान चाहिये !
निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये ॥

दुष्टों की दुष्टता कभी जिसको नहीं खले
रूंदता हो शीश जिसका शत्रु-पांव के तले
बन दास और के सदा संकेत पर चले
सच जानो ऐसे मर्द से तो मुर्दे ही भले,

सूरत भी ऐसे की तो
देखना न चाहिये ।
निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये ॥

रह जायेंगी पड़ी ये नोट रुपयों की थैली
रह जायेंगी गाडी ये चांदी सोने की डेली
रह जायेंगी खड़ी ये नई हाट हवेली
जायेगी नही साथ कभी एक अधेली,

जीतेजी करना हाथ से
कुछ दान चाहिये।
निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये॥

सुनते ही हृदय, ज्वाला मुखी से भडक उठें
भुजदण्ड प्रबल मारे जोश के फडक उठें
तन जायें सीनें, बन्ध कवच के तड़क उठें
बदकार, वैरियों के कलेजे धड़क उठें,

कवि को सुनाना ऐसा
अग्नि-गान चाहिये।
निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये॥

ज्ञानी को यही स्वर्ग है, आनन्द है दूना
अज्ञानी को संसार ही है नर्क नमूना
रस्सी, समझ के सर्प को हाथों से न छूना
धोखे में दही के कहीं खालेना न चूना

खोटे; खरे की कुछ यहां
पहिचान चाहिये।

निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये ॥
साधन पवित्र जिसका लक्ष भी पवित्र हो
दुष्टों का जो कि काल सज्जनों का मित्र हो
व्यसनों से दूर जिसका कि उज्ज्वल चरित्र हो
गति जिसकी धर्म, राजनीति में विचित्र हो
नेता 'प्रकाश' ऐसा
गुण-निधान चाहिये।
निज देश की रक्षा को
नवजवान चाहिये ॥

आवाहन

(र० श्री अटल बिहारी)

श्री अटलबिहारी वाजपेयी रा० स्व० संघ के उत्साही कार्यकर्त्ता एवं हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रकार हैं। आप लखनऊ से प्रकाशित पाँचजन्य, राष्ट्रधर्म का सम्पादन कर रहे हैं। अटल जी की शैली का परिचय 'हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन' में मिल जाता है। यह कविता राष्ट्रधर्म से संग्रह की गई है।—सम्पादक

हिन्दु महोदधि की छाती में
धधकी अपमानों की ज्वाला
और आज आसेतु-हिमाचल
दीप्तिमान हृदयों की माला

सागर की उत्ताल तरंगों में
जीवन का जी भर क्रन्दन
सोने की लंका को मिट्टी लख
कर भरता आह प्रभंजन
शून्य तटों से सर टकरा कर
पूछ रही गंगा की धारा—
सगर-सुतों से भी बढ़ कर मृत
आज हुआ क्या भारत सारा ?

यमुना रोती कहां कृष्ण हैं
सरयू कहती राम कहां हैं
व्यथित गण्डकी खोज रही है
चन्द्रगुप्त का धाम कहां है ?
अर्जुन का गाण्डीव किधर है
कहां भीम की गदा खो गई ?
किस कोने में पांचजन्य है,
कहां भीष्म की शक्ति सो गई ?

अगणित सीतायें अपहृत हैं
महावीर ! निज को पहिचानो
अपमानित द्रुपदायें कितनी,
समर-धीर ! शर को सन्धानो
अलक्षेन्द्र को धूलि चटाने वाले
पौरुष फिर से जागो

क्षत्रियत्व विक्रम के जागो
चणक-पुत्र के निश्चय जागो

कोटि-कोटि पुत्रों की माता
कब से पीड़ित अपमानित है
जो जननी का दुख न मिटाये
उन पुत्रों पर भी लानत है
लानत उनकी भरी जवानी
जो सुख की नींद सो रहे
लानत है हम तीस कोटि हैं
किन्तु किसी के चरण धो रहे

कल तक जिस जगने पग चूमे
आज उसीके सन्मुख नत क्यों ?
गौरव मणि खोकर भी मेरे
सर्पराज ! आलस में रत क्यों ?
गत वैभव का स्वाभिमान ले
वर्तमान की ओर निहारो
जो जूठा खाकर पनपा है
उसके सम्मुख कर न पसारो

पृथ्वी की सन्तान भिक्षु बन
परदेसी का दान न लेगी
गोरी की सन्तति से पूछें,
क्या हमको पहिचान न लेगी ?

हम अपने को ही पहिचानें
आत्मशक्ति का निश्चय ठानें
पड़ी हुई जूठी शिकार को
सिंह नहीं हैं जाते खाने
एक हाथ में सृजन, दूसरे में
हम प्रलय लिए चलते हैं
सभी कीर्ति-ज्वाला में जलते
हम अन्धियारे में जलते हैं
आंखों में वैभव के सपने
पग में तूफानों की गति हो
राष्ट्र-सिन्धु का ज्वार न रुकता
आये जिस जिस की हिम्मत हो

—★—

हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा
गंगा तेरी यमुना तेरी, हिम आलय अभिमान तुम्हारा।
× × × ×
तक्षशिला, नालन्द नगर के भग्न-शेष, कंकालों से।
मथुरा, काशी के शंखों से, घन्टों से, घड़ियालों से,
कावेरी, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु सम, उज्जवलतम नद-नालों से,
पानीपत; हल्दी घाटी के—लाल-लाल असि भालों से!
नभ आंगन में अबभी गुंजित-रहता प्रति पल गान तुम्हारा
हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा।

महा काल की विषकन्या ने जब जब चाहा आलिंगन !
चला मचल कर तब तब ही, चिर विरही सा तेरा यौवन।
एक बूंद आंसू पर इसकी, भर आता तव दृग-सागर।
एक आह पर तू तो सौ सौ, बार हुआ है न्योछावर।
सुख के साथी पथ-कंटक ये, कर जाते मेहमान किनारा।
हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा।

卐 卐 卐 卐

तेरी निर्बलता ने तुझ से, कंगालों के पांव पुजाये।
तेरी कायरता ने ही मंगतों के, भी नाज़ उठाये,
आज धूलि के लघु-कण ने, शैलराज को आंख दिखाई !
आज सिन्धुके गर्वित शिरने, पतित बिन्दू, से ठोकर खाई !
सतत घृणा-धिक्कारों पर भी, जीवित है अभिमान तुम्हारा
हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा।

卐 卐 卐 卐

तेरी जूठन पर पल कर ही, श्वान आज गुर्राते हैं !
तेरे महलों में क्षण भर रह, निज अधिकार जमाते हैं !
निज हाथों ही तो तूने, सांपों को दूध पिलाया है !
क्षमा अहिंसा के पर्दे में—तिल का ताड़ बनाया है।
आज इसीका फल भीषण तम, भुगत रहा है प्राण तुम्हारा।
हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा।

आज पूर्व औ' पश्चिम की, गाथायें तुम्हें बुलाती हैं।
सिन्दूर-पुंछी, रतन विहीन मातायें तुम्हें बुलाती हैं।

देखो, बहिनों की लुटती, लज्जायें तुम्हें बुलाती हैं।
शिशुओं की निष्ठुर, निर्मम, हत्यायें तुम्हें बुलाती हैं।
इतने पर भी पिघल न पाता, हाय, हृदय पाषाण तुम्हारा।
हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा।

卐 卐 卐 卐

तुमको भीम भयंकर बन कर, शोणित गट गट करना है!
क्रुद्ध, रुद्र सा रुण्ड-मुण्ड से, भू औ' अम्बर भरना है!
तुमको दुर्वासा की ज्वाला, क्रूर कठिनतम बनना है!
सिंह शिव सा मृग-म्लेच्छ पर, टूट कर पड़ना है!
वरना भू पर शेष न होगा।
हिन्दू, नाम-निशान तुम्हारा!
हिन्दू, हिन्दुस्थान तुम्हारा।

हमारी केवल इतनी चाह

(र० श्री प्रकाश चन्द्र प्रकाश)

हम यही चाहते आज।
हम यही चाहते आज ॥
बच्चा बच्चा हो स्वदेश का देशभक्त बलशाली।
कटि में बर्छी भुजाली कांधे हो बन्दूक दुनाली।
गुण्डों के गरूर हो ढीले कांपे क्रूर कुचाली।
कभी न हो घटना पन्जाब, नौआखली वाली।
कटे न गाय गरीब,
लाल, ललना की लुटे न लाज।

हम यही चाहते आज।

हम यही चाहते आज।

× × × ×

भेद भाव के भूत भयंकर के सिर मारे गोली।
एक दूसरे के हों सब सच्चे-स्नेही हमजोली।
एक बने सब ब्राह्मण, क्षत्री, भंगी बनिया कोली।
एक इष्ट, आचार, एक व्यवहार, एक हो बोली।
एक संस्कृति, एक सभ्यता,
एक धर्म सिरताज।
हम यही चाहते आज।
हम यही चाहते आज॥

卐 卐 卐 卐

मातायें अभिमन्यु, कृष्ण सम वीर पुत्र जन्मायें।
तज विलासिता, आडम्बर निज जीवन सरल बनायें।
लेकर कठिन कृपाण निडर वे युद्ध क्षेत्र में आयें।
लक्ष्मी बाई, दुर्गा सम जग में जौहर दिखलायें।
बलि हो जाये निज सतीत्व, पर
गौरव गुमान के काज।
हम यही चाहते आज।
हम यही चाहते आज॥

卐 卐 卐 卐

भ्रष्टाचार दूर हो दुर्व्यसनों का हो दीवाला।
जीवन सदाचार, संयम के सांचे में हो ढाला।

सेवा करें सभी की पीकर देश प्रेम का प्याला।
रहे न कोई शत्रु, देश द्रोही का हो मुंह काला।
मानवता जी उठे, गिरे
दानवता का सिरताज
हम यही चाहते आज
हम यही चाहते आज।

卐 卐 卐 卐

भारत देश हमारा प्यारा, हम हैं इसके स्वामी।
कंगाली हो दूर न आने पाये कभी गुलामी।
बनें देश के वीर सिपाही स्वतन्त्रता के हामी
अन्न, वस्त्र हो खूब न हो घी दूध, दही की खामी
हो 'प्रकाश' सर्वत्र शान्ति,
सुख भोगे पूर्ण स्वराज
हम यही चाहते आज!
हम यही चाहते आज!!

अभिलाष एवं कर्तव्य

वृत पत्र में नाम छपेगा पाऊंगा स्वागत सुमनहार
छोड़ चले अब क्षुद्र भावना हिन्दू राष्ट्र के तारण हार
कंकड पत्थर बन कर तुमको राष्ट्र नींव को भरना है,
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के अमर पुजारी बनना है॥
सह्याद्रि के गिरि कुहरो के अति भीषण संकेतक नाद
गढ़ चित्तोड़ के रण पुर्वातिन के उत्तेजक करुण निनाद

सिन्धु तीर की गुरू गाथायें क्या कहती क्या करना है,
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना हैं॥

卐 卐 卐 卐

तुम हिन्दू हो हिन्दू जाति है, अमर तुम्हारा जीवन प्राण।
सम्प्रदाय की क्षुद्र भावना, अरे नही यह सत्य महान।
खुद जीवे उन्नत जग होवे, यही तुम्हें अनुसरना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

हम हिन्दू हैं, वीर पुत्र है, कहने में मत मानों लाज।
पूर्ण हिन्दू बन गौरवशाली, करो जगत का उन्नत काज।
नही किसी को भय देना अथवा भय न किसी से करना है।
ब्रह्म तेज के, क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

तुम हिन्दू हो न्याय सिन्धु हो परधर्मो के भिन्न उदार।
किन्तु नही हो शक्तिहीन की अब सुनता संसार पुकार।
विश्व विदित हिन्दुत्व-दीप फिर यह उद्दीपन करना है।
ब्रह्म तेज के, क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है॥

× × × ×

धर्म भाव अमरत्व भाव है, अरे नही है मदिरापान।
गति संचालक जगदीश्वर का, हार्दिक अनुभव तो कुछ मान।
इसी परम गति की लहरों में, हंसते हंसते मरना है।
ब्रह्म तेज के, क्षात्र तेज के, प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

हिन्दुओं तुम विश्वबन्धु हो त्यागी हो तुम अमर सुजान
नसों नसों में भरा तुम्हारे भगवत गीता का रणगान।
उसी वीरता योजकता को फिर आमन्त्रित करना है।
ब्रह्म तेज के, क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

जिसमें प्रिय हिन्दुत्व तुम्हारा सत्य सुरक्षित स्वाभिमान।
नही स्वराज्य तुम्हारा जिसमें सबका यश न्याय समान।
सभा बैठकों की चर्चा से अब नही संकट टलना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है॥

× × × ×

हिन्दुस्थान छोड़ दुनिया में नहीं हिन्दुओं तुमको स्थान।
वह भी बना नहीं हिन्दुस्थान और बना है पाकिस्तान।
वीर मृत्यु से मरो अरे इस भांति अगर मर मिटना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है॥

× × × ×

अरे पत्थरो उठो! तनिक तो करो वीरता का आह्वान।
पथ दर्शक होगा फिर भी, प्यारा भग्वा राष्ट्र निशान।
रोग भोग से वीर तुमको, नहीं कदापि मरना है।
ब्रह्म तेज के, क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

गर्दन उठा शील शोभा से निर्भय चलो सिंह की चाल।
निज पर रक्षाहित क्षण-क्षण में सज्जित रखो तन,मन ढाल।

वीरों का व्रत सावधान सज्जित आजीवन रहना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है

× × × ×

कृषक धनी पढ़ अपढ़ यहां पर ऊंच नीच का भेद नहीं।
हृदय बीज हिन्दुत्व प्रेम की ज्वाला जिनमें धधक रही।
कर सकता है कार्य वही कुछ, सिद्ध उन्हीं को करना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

एक हृदय हो एक पन्थ हो एक ध्येय हो एक जबान।
एक नियन्त्रण के शासन में हो सबके तन मन धन प्राण।
हिन्दू युवक कटिबद्ध बने बस, भाग्य इसी में खुलना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है।

× × × ×

भूल निराशा को मत छूना दिन दिन यश तप दूना है।
अरे हिन्दुओं वीर सपूतों तुम्हें न मरना जीना है।
जुटे रहो उज्ज्वल भविष्य का स्वर्ण युग फिर मिलना है।
ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के प्रखर पुजारी बनना है॥

जीवन की नश्वरता, सदा अटल सिद्धांत है। पहले मृत्यु अमरता फिर है :—सम्पादक

बलिवेदी पर

बीज जब मिट्टीमें मिल जाय, वृक्ष तब उगता है हे मित्र,
कलमकी स्याही गिरती जाय, पत्रपर उठता जाता चित्र
नदी नद सब जल के भण्डार, चढ़ा देते हैं अपना रक्त,
अहा तब कहीं मधुरता बूंद, मेघसे पाते वर्षा भक्त ॥१
सफलता पाई, अथवा नहीं ?
उन्हें क्या ज्ञान दे चुके प्राण।
क्या विश्व चाहता उच्च विचार,
नहीं केवल अपना बलिदान ॥
बिगुल बज गया चला जब सैन्य, धरा भी होने लगी अधीर,
खाईयां खोदा रिपु ने हाय, पार हो कैसे सैनिक वीर ॥
पूरदो इनको मेरे वीर, वारो इसके लिए शरीर,
इधर जो सेनापति ने कहा, उधर चढ़ गये सहस्रों वीर ॥
समय पर किया शत्रु का नाश,
देश को आज मिल गया त्राण।
शेर वीरों ने छेडी तान,
धन्य बलिदान धन्य बलिदान ॥

भारतीय संस्कृति की परम विशेषता, उसकी एक मात्र त्याग एवं बलिदान की भावना है। प्रत्येक भारतीय प्रत्येक युग में युग की आवश्यकतानुसार सदा तन, मन, धन से तैयार रहा है।

प्रांतीय प्रचारक
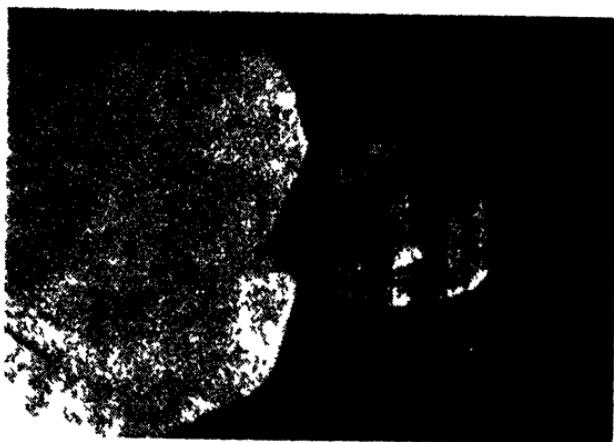
(श्री एकनाथ रानाडे)

बंगाल प्रान्त के नायक

सहप्रांत प्रचारक

(श्री मनोहर राव हरकरे)

प्रमुख कार्यकर्त्ता

(श्री कालीदास बसु)

बंगाल प्रान्त के नायक

प्रमुख कार्यकर्त्ता

(श्री हेमेन्द्र पण्डित)

बंधनों में केहरी कब तक रहोगे शान्त ?

ओ कैदी मृगराज ! हुआ हत प्रभु तू कैसा आज ?
बधा सींखचों में क्या तेरा, सारा बन का राज ॥

तेरी घन गम्भीर गर्जना गूंज गूंज चहूं ओर,
बन के पशुओं को कंपित कर भय सागर में रोर ।
मन कुंजरोंको दहलाती है, तू सब का सिर मोर,
बता २ क्या यह सब भूला, निरख जरा निज ओर ॥

आज कैद में जकड़े रहना, सड़ा गला कुछ खाना,
मत्र के हाथ सताया जाना, और केवल गुर्राना ।
कुत्तों सा दुत्कारा जाना, बोल तुझे क्या भाता,
अगर नहींतो मार्गमरणका, क्यों नहीं तू अपनाता ॥
जीवन हो मृगपति सा तेरा, करते बन का राज,
मिले अन्यथा मृत्यु सुखद पर ना हो कैदकी गाज ॥

पराधीन का जीवन पशुवर, नरक तुल्य होता है,
जीता रहता है शरीर पर, आत्मनाश होता है ।
मोत सिखाती है कुर्बानी, जीवन की याद दिलाती,
स्वाभिमानकी बुझीअग्निको, फिरसे फूंक जलाती ॥
मर कर भी तू अमर रहेगा परम्परा जीवेगी,
नष्ट दासता होगी आखिर बेड़ी टूट रहेगी ॥

सौगन्ध

[र० श्री बृहस्पति]

अट्टहासी रुद्र के विषपान की सौगन्ध, ओ मां
राम के अव्यर्थ श रसन्धान की सौगन्ध, ओ मां
चारणों के सिद्ध भैरव गान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

हँस दिया अभिमन्यु के अवसान पर आंसू न आये
खिंच गया गाण्डीव, फिर तूणीर में शर कसमसाये
पार्थ के उस दिव्य-गीता ज्ञान की सौगन्ध; ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

पूत-जौहर यज्ञ जिससे हिन्दुओं ने प्राण पाये
विश्व जिसको देखता है आज भी आंखें उठाये
पद्मिनी के उस महाप्रस्थान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

धन्य-धन्य प्रताप ! जिसने खेल दुष्टों को खिलाया
वज्रभेदी शूल जिसका जन्म भर नीचे न आया
उस अनोखे वीर के अभिमान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

नित्य जिसकी घाटियां धोई गईं पावन रुधिर से
धन्य वह मेवाड़ ! जिसने दी चुनौती उच्च शिर से
तीर्थ जैसे उस पवित्र स्थान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

मुसकराये, खिल गये दीवार बनकर काल आया
मैल, मरने के समय भी भौंह पर आने न पाया
सिंह शिशुओंके अमर बलिदान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

आज हम ज्वालामुखी हैं, क्रूर हत्या की कहानी
आग बनकर जल रही है इस हृदयमें, स्वाभिमानी
वीर बन्दा के अभय आह्वान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

विश्वका इतिहास जिसका जोड़ प्रस्तुत कर न पाया
श्रेष्ठ हिन्दु जातिमें जो ज्योति बनकर जगमगाया
श्री शिवाके उस विमल आख्यानकी सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

नित्य जिनकी प्रेरणा से हैं महासंग्राम जीते
गर्व से फहरा रही जो, हैं सहस्रों कल्प बीते
उस पताका के अचल उत्थान की सौगन्ध, ओ मां
हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां

भारतीय वीर अपनी आन के पक्के होते है। हम सभी भारतीय भारत के लिए सच्चे हृदय से आन निभायें।

चेतक को लड़ते देखा है

हमने गज मस्तक पर चेतक की टांगों को अड़ते देखा ।
राणा प्रताप और झाला को लाखों के मध्य लड़ते देखा ॥
हमने दिल्ली पर बार बार मरहट्टों को चढ़ते देखा ।
लाल किले पर दिल्ली में यह 'भगवा ध्वज' गढ़ते देखा ॥
है पूज्य श्री शेर शिवा का रक्त हमारी नस नस में

卐 卐 卐 卐

है याद हमें चौहान नृपति जिसने गोरी को ललकारा ॥
बन्दी होकर भी दुश्मनों को उसके ही घर पर मारा ।
है याद हमें गोरा बादल जिसने दिल्ली को दहलाया ॥
है याद हमें जयमल फत्ताका नाम अमर क्यों कहलाया ।
है शस्त्र रक्तका लिये साथ आज भी तीर हमारे तर्कस में ॥

卐 卐 卐 卐

गुरु तेगबहादुर गुरु अर्जुन गोविंदसिंह बलिदान हुए ।
दुर्गावती लक्ष्मी पद्मा महारानीने क्यों जीवनदान दिये ॥
क्यों तीर लगा था शिवा भाऊ से सेनापति के ।
क्यों युद्ध हुआ था; रावी तटपर श्रीचन्द्रगुप्त सेल्युकस में ॥

राजस्थान का प्रत्येक कण भारतीय त्यागसे रंजित है । यहां के पत्थर, झील, नदी सभी ने अपने सामर्थ्य के अनुसार वीरता में राजपूतों का साथ दिया है ।

हिन्दूपन की ज्वाला हो

हिन्दू वह है जिसके मन में हिन्दुपन की ज्वाला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर मरने को मतवाला हो।
हिन्दू थे गोविन्दसिंह के सुत चिने गये दीवारों में।
हिन्दू थी वह सती पद्मनी जली चिता अगारों में॥
हिन्दू था वह वीर वैरागी जला लोहित ऊंकारों में॥
हिन्दू था वह वीर हकीकत कटा शीश तलवारों से।
भरा हुवा हिन्दुत्व सुधा से जिसका जीवन प्याला हो।
हिन्दू वह है जिसके मन में हिन्दुपन की ज्वाला हो।
जिसके लिये प्रतापसिंह ने धूल जंगलों की छानी।
जिस पर निज सर्वस्व लुटा कर भामाशाह बना दानी।
शीश कटा कर वीर हकीकत ने रक्खा जिसका पानी।
बन्दा वैरागी ने हंस हंस कर दी जिस पर 'कुर्बानी'॥
आज हमारे रहते उसका हो सकता अपमान नहीं।
अखण्ड हिंदुस्थान कभी रह सकता 'पाकिस्तान' नहीं।

हिन्दू, साम्प्रदायिक नहीं अपितु भारत को मातृ भूमि, पितृ भूमि मानने वाले सभी हिन्दू हैं और यही है हिन्दुस्थान की परिभाषा।

भारत

[रामकुमार चतुर्वेदी]

श्री राम कुमार चतुर्वेदी मध्य भारत के तरुण कवि हैं। वीर रस की कवितायें लिखने एवं पढ़ने के लिये आपका हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध स्थान) है। आपकी रचनायें, प्रथम चरण, हिन्दुस्तान की आग, खून की होली है। उक्तरचना 'प्रथम चरण' पुस्तक से ली गई है —सम्पादक

कोटि-कोटि प्राणों का प्यारा;
कोटि-कोटि आंखों का तारा,
विचलित दु:खित क्षुधितवर्गोका,
शरण-निकेतन, मात्र सहारा!

किसने कहा अरे बतलादे?
"तू अशेष गौरव का पुतला!"
बना हिमालय ताज विश्व का!
नहीं हिंद-सागर जब उथला!

रोज सुबह जब सूरज आकर,
तुझको स्वर्ण-मुकुट पहनाता।
प्राची के अभिमान तुझे,
कहकौन दीन निर्बल बतलाता

अभी अयोध्या की धूलों पर
चरण-चिन्ह अंकित रघुपतिके,
वेद पुराण बने जीते जगते
प्रमाण बीती संस्कृति के!

पांचजन्य का घोर घोष वह,
गूंज रहा है कुरुक्षेत्र में,
अभी जल रहे हैं ज्वालामुखि,
शंकर के तीसरे नेत्र में!

अभी गूंजती उज्जयिनी में,
विक्रम की वे रण-हुंकारें,
इन्द्रप्रस्थ को हिला रहीं हैं,
अर्जुन धन्वें की टंकारें!

अभी मगध में चमक रही है,
चन्द्रगुप्त की लाल भुजाली!
खँडहर बनी सुप्त मरघट को,
जगा रही चंडी वैशाली!

देखो तो चित्तौड़ आज भी,
जलता जौहर की ज्वाला में!
रजपूतों के शीश गुंथ रहे,
महाकाल की जयमाला में!

वीरों के आवास! बतादे,
किसने तुझे बताया निर्बल?
सृष्टि बहा दी होती जिसने,
यहां बह रहा वह गंगाजल!

यहां कौनसी कमी, बतादे,
कोई दुनियां का धनवाला!

लिए यहां का चांदी-सोना,
पश्चिम आज बना मतवाला !

लोटा करता स्वर्ग यहां पर,
काश्मीर के चमन-चमन में।
जीवन का संदेश, जवानी भरी
यहां के पवन-पवन में!

फिर भी दुर्दिन और हमारे
विश्व-प्रेम का ही यह फल था।
जो हाथों में थी हथकड़ियां,
आंखों में आंसू का जल था !

निर्धन थे हम श्रमिक कृषक जन
फिर भी बने हुए हैं दाता।
हम यदि अन्न न देते तो,
शायद पश्चिम भूखों मर जाता !

और हमारी छाती देखो,
इस में कितने घाव हरे हैं।
लाल दृगों में जाने कितने ही,
लोहू के घूंट भरे हैं!

आज हमारा गला घुट रहा,
पशुतामय निर्दयता जागी,
किन्तु हमने शीश झुकाकर,
नहीं दया की भिक्षा मांगी ?

हम निर्मम अत्याचारों के,
गिरि पर निज पग बढ़ा रहे हैं,
बरसे आग, बहे प्रलयानिल,
पर हम सीना अड़ा रहे हैं !

जागा सोता शेर आज,
जागा मेरा मर्माहत भारत।
क्राँतिरूप भैरव के पद पर,
हुआ दमन-दानव का शिरनत।

कोटि-कोटि प्राणों का प्यारा,
कोटि कोटि आंखों का तारा,
जीवित भारत देश हमारा!
जागृत भारत देश हमारा

रोम मिटा, यूनान मिट गया,
टूटा जग-सँस्कृति का तारा।
किन्तुअडिम विधिके विधान-सा,
शाश्वत भारत देश हमारा !

[गीत २८]

प्रबुद्ध शुद्ध भारती

हिमाद्रि तुंग श्रंग से,
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्वला,
स्वतन्त्रता पुकारती ॥१॥

असंख्य कीर्ति रश्मियां
विकीर्ण दिव्य दाहसी
सपूत मातृभूमि के,
रुको न सूर साहसी ॥२।

अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
परास्त पुण्य पन्थ है,
बढ़े चलो बढ़े चलो ॥३॥

अरातो सिन्धु सैन्य में,
सुबाढ़वाग्नि से जलो
प्रवीण हो विजयी बनो,
बढ़े चलो बढ़े चलो ।४।

[गीत २६]

जाग उठा फिर

जाग उठा फिर भगवा लेकर,
हिन्दू निज हिन्दुत्व जगाने जाग उठा
जो स्वरूप को भूल चुका था, निज कर बल निर्मूल चुका था।
आज वही गत वैभव पाने, जाता है रण रंग मचाने ।
खुला स्वर्ग सोपान मनोहर,
ऋषियों की प्राचीन धरोहर,
मातृ भूमि की बलि वेदी पर, वीरों का आह्वान कराने ।
जाग उठा फिर भगवा लेकर हिंदू निज हिंदुत्व जगाने जाग उठा ॥

जब होता उद्योन्मुख सुमिहर,

स्वयं नष्ट होता महा तिमिर,

आज अजय संघठन शक्ति से, हिन्दू का सामर्थ्य बढ़ाने।

जाग उठा फिर भगवा लेकर, हिन्दू निज हिन्दुत्व बचाने॥

जिसके उर में मात्र भक्ति हो

संचित करनी जिसे शक्ति हो

माता के उद्धार हेतु वह, जाता है यह संघ बढ़ाने।

जाग उठा फिर भगवा लेकर, हिन्दू निज हिन्दुत्व बचाने॥

[गीत २०]

विजय पराजय से क्या

चल तू अपनी राह पथिक चल,

तुझको विजय पराजय से क्या ?

होने दे होता है जो कुछ, इस होनी का निर्णय क्या ?

भंवर उठ रहे हैं अम्बर में, मेघ उमड़ते हैं सावन में।

आंधी और तूफान डगर में,

तुझको तो केवल चलना है॥

चलना ही हो तो फिर भय क्या॥

और थक गया फिर बढ़ता चल

उठ सघर्षो से लड़ता चल।

जीवन विषम पथ बढ़ता चल।

अड़ा हिमालय हो यदि आगे,

चढ़ूं या लौटूं फिर निर्णय क्या ?

[गीत ३१]

वन्दनीय है भारत भूमि !

हिन्दू भूमि ये वन्दनीय है

समस्त विश्व में समृद्ध ये बनी रहे

मातृ भूमि ये, पितृ भूमि ये,

अन्न वस्त्र से हमें—

शांति से सौख्य दे

पंच रस, तथा केसरी महान

तोड़ तोड़ शृंखला मुक्त हो चला

धर्म भावना, राष्ट्र गर्जना

हिन्दू ध्येय, हिन्दू का ध्येय जीतना

हिन्दू राष्ट्र को बना विश्व जीतना

[गीत ३२]

वही पुरातन ज्ञान चाहिए

किसी वस्तु पर नया नहीं, अधिकार आज करने आए,

उसी पुरातन पुण्य भूमि का वैभव फिर चमकाने आए, ।

पिता पितामहों से चलती जो परम्परागत यह स्वकीय है,

वही पितृ भू, पुण्य मातृ भू, पावनतम् अति पूजनीय है ।

परम्परा से वंचित होकर नहीं पुरातन मान चाहिये ।

आज राष्ट्र की गिरा गिरा में वही पुरातन गान चाहिए ॥

नवजीवन का उदय पुरातन पर ही तो निर्मित होता है,

जीवन में ही तो नवीनता और विकास सम्भव होता है,

बता मृतक में भी क्या अबतक करी किसी ने है नवीनता ?

युग-युग से विकास पाई है वही पुरातन की असीमता,

उसी पुरातन का विकास है, नित नूतन यह ज्ञान चाहिए ।

आज राष्ट्रकी गिरा-गिरा में वही पुरातन गान चाहिए ॥

[गीत ३३]

होता उसी का नाश है

निर्बल है जो जहान में, होता उसी का नाश
उसका करेगा क्या कोई, बल-शक्ति जिसके पास है
हिन्दु तू वीर था कभी,
गाते थे तेरे गुण सभी,
शक्ति जो तेरी जा चुकी, होता तु क्यों निराश है।
हिम्मत कर और आगे बढ़,
शक्ति का फिर से संचय कर
संघ में कार्य आन कर, होता तू क्यों उदास है

———

[गीत ३४]

चले चलो जवान

देश मुक्ति-पन्थ पर चले चलो जवान।
चले, कि हम रचें नवीन क्रांति का विधान॥
सिंहनाद हम करें कि यह धरा हिले—
कदम-कदम बढ़ें कि देख शत्रु कर मले॥
एक संगठन मशाल सामने किए।
साथ राम कृष्ण का हाथ में लिए॥
कोटि पाँव बढ़ रहे हो यह पुकारते—
देश मुक्ति-पन्थ पर बढ़े चलो जवान।
चले, कि हम रचें नवीन क्रांतिका विधान॥

दूर कहीं आज तुम्हें मां पुकारती।
मुक्ति हेतु पुत्र-शीश दान मांगती ॥
रुको नहीं हटो नहीं, कि तुम महान हो।
मातृ-मुक्ति मांग पर स्वशीश-दान दो ॥
आज खून की पुकार खून कह रहा—
देश मुक्ति-पन्थ पर चले चलो जवान।
चले, कि हम रचें नवीन क्रांतिका विधान ॥
हो द्विविंश-कोटि पर कुपुत्र नाम क्यों ?
और चार कोटि के बने गुलाम क्यों ?
एक पन्थ हो कि सत्य एक मन्त्र हो।
लाडला स्वदेश हिन्द अब स्वतंत्र हो ॥
आज प्राण-प्राण में भावनायें बोलती—
देश मुक्ति-पंथ पर चले चलो जवान।
चले, कि हम रचें नवीन क्रांति का विधान ॥

[गीत ३५]

हिन्दू

साक्षात हिन्द धर्म का अभिमान है हिन्दू।
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिन्दू ॥
हृदयके छुपे घाव हैं, हम कैसे दिखायें।
राणा प्रताप के प्रताप की सुकथायें ॥
सतियों की आन बान की जौहर की चितायें।
हिन्दू की कहानी हंसे या रोकर सुनायें।

चित्तौड़ का गुमान मान आन है हिन्दू ॥
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिन्दू ॥

आंखें निकाल, बोटियां काटीं, खिचाई खाल।
है याद हकीकत की हकीकत का हमें हाल ॥
हैं याद गुरुगोविंदसिंह के दोनों सिंह-लाल।
अब भी पुकारती है उनके खून की दीवाल ॥

धर्म ध्वजा, ज्ञान की पहचान है हिन्दू।
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिन्दू ॥

सीना भिड़ाये मौत से शिवा अड़े गये।
धर्म नाशकों के शीश पर चढ़े गये ॥
विश्वासरात्र मरते- मरते भी लड़े गये।
दक्षिण से पूर्व; पश्चिम, उत्तर बढ़े गये ॥

जो रुक नहीं सका था वह तूफान है हिन्दु।
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिन्दु ॥

है नाप चुका पानीपत तलवार का पानी।
है याद उसे हमले हिन्दुओं के तूफानी ॥
मिटते गये, बढ़ते गये, पर हार न मानी।
कण-कण सुना रहा है वही एक कहानी ॥

संसार श्रेष्ठ देश का वरदान है हिन्दू।
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिन्दू ॥

उत्तर से हिमालय का शृंङ्ग देश सहारा।
दक्षिण से महासिंधु का अथाह किनारा ॥

पूरब में ब्रह्मा, ब्रह्मपुत्र, गङ्गा की धारा ।
पश्चिम से सोमनाथ के मन्दिर ने पुकारा ॥

हिन्दु है हिन्दोस्थान, हिन्दोस्थान है हिन्दु ।
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिन्दु ॥

तू देश का वैभव है, राष्ट्र का अमिट सुहाग ।
सदियों से सो रहा है, अरे अब तो नींद त्याग ।
हिन्दुत्व बुझ रहा है लगा इसमें पुनः आग ।
ओ विश्व के विधाता हिंदु ! जाग जाग जाग ॥

वह राष्ट्र हिंदुओं का, इसका प्राण है हिंदु ।
संसार पुजारी स्वयं भगवान है हिंदु ॥

—★—

[गीत ३६]

राष्ट्र–नाश का प्रतीक फूट द्वेष है ।
संगठन विहीन देश, हीन देश है ।
राष्ट्र-नाश का प्रतीक फूट द्वेष है ॥

विश्व पूज्य थे स्वतन्त्र - स्वाभिमान था ।
रीति नीति प्रीति का, गम्भीर ज्ञान था ॥
संगठन स्वदेश प्रेम विद्यमान था ।
आर्यावर्त ही तो, विश्व में महान था ॥
रे विश्व में महान था !
बन्दनीय - देश - वन्दना - अशेष है ।
राष्ट्र नाश का प्रतीक फूट द्वेष है ॥

प्रांत प्रचारक

(श्री यादव राव जोशी)

कर्नाटक प्रान्त
के
नायक

प्रांतीय नेता

(श्री मामा साहिब खेर)

आन्ध्र प्रांत के नायक

प्रांत प्रचारक

(श्री बापूराव मोघे)

कार्यकर्त्ता

(श्री लक्ष्मीनारायण शास्त्री)

देश भाग्य रूठ गये, फूट आगई ।

रोम - रोम स्वार्थ भावना समा गई ॥

सोगई स्वतन्त्रता स्वयश सुला गई ।

कुकृत्य-क्रूर - कालिमा - कराल छागई ॥

स्वदेश कीर्ति ढा गई !

दुर्भाग्य दासता का हो गया प्रवेश है ।

राष्ट्र - नाश का प्रतीक फूट द्वेष है ॥

वह विलास वासना शृंगार हमारे ।

दुःख दे रहे हैं, दया भाव हमारे ॥

देश पर चलाये गये दाव हमारे ।

भर नहीं सकेंगे कभी घाव हमारे ॥

नहीं घाव हमारे !

वरद वेश देश दीन करद वेश है ।

राष्ट्र नाश का प्रतीक फूट द्वेष है ॥

वैमनस्य के विशेले बीज बो दिये ।

आन-बान-शान-स्वाभिमान खो दिये ॥

शक्ति के समक्ष लक्ष हीन रो दिये ।

शक्ति शुभ सुकिंति सुख सदैव धो दिये ।

सुख सदैव धो दिये

व्यक्ति व्यक्ति शक्ति का न शेष लेश है ।

राष्ट्र नाश का प्रतीक फूट द्वेष है ॥

हो चुका हमारा हो चुका पतन ।

स्वतन्त्रता का है शुभागमन ॥

हो सकेंगे फिर हमारे विश्व भू रमन।
करले प्रीति प्रेम स्वेच्छा से संगठन॥
स्वेच्छा से संगठन !
विन्दु विन्दु से सदा बना जलेश है।
राष्ट्र नाशका प्रतीक क्रूर द्वेष है॥

[गीत ३७]

शिवराज बनाना है

अब दिल में उमंगे है आशा की निशानी है
मैं भूल गया बीती गाथा जो पुरानी है
अब मैं हूं महासागर सागर में तरंगे हैं
जीवन में ये टक्कर है यह मेरी उमंगे हैं
शत्र केलिये अब तो तलवार बना चाहता हूं
इस पाप की नौका को पतवार लिये चाहता हूं
आशा की तरंगो से उस पार हुआ चाहता हूं
लड़ते हुये जीवन को दुनियां में बिताना है
और द्रोपदी सीता की लाजों को बचाना है
घर घर में मुझे जाकर सोतों को जगाना है
हर हिन्दू के बच्चे को शिव राज बनाना है
भारत में मुझे घर घर रणभेरी बजानी है
शत्रु का लहू पीकर निज प्यास बुझानी है

दिल कहते नहो रुकना यह बात पुरानी है
अब ऋषियोंके चरणोंमें दुनियाको झुकानीहै

शिवराज गुरू गोविन्द बस इनका पुजारी हूं
मैं बन्दा बैरागी की तलवार दुधारी हूं
जौहर की भस्म हूं मैं पदमा की भस्म हूं मैं
सौगन्ध तेरी भारत मैं तेरा पुजारी हूं

शत्रु से लड़ूगा मैं करिकाल स्वयं बनकर
मृत्यु से लड़ूंगा मैं यमराज स्वयं बनकर
दुष्टों का दमन करते संसार मुझे देखेगा
भारत में फिरूंगा मैं अवतार स्वयं बनकर
मैं राम का सेवक हूं प्रताप का प्यारा हूं
उस धर्मी हकीकत की माता का दुलारा हूं
मैं योग हूं भारत की जाति की मैं आशा हूं
और डूबने वालों को तिनके का सहारा हूं

दुनियाके सभी झगड़े हंसहंसके मैं झेलूंगा
पर्वत की मुसीबत को कंधे पे मैं ले लूंगा
जीवनकी परीक्षा जब भांती भांती से हूंगी
ऐ मौत जरा रुक तू मैं तुझसे भी खेलूंगा

[गीत ३८]

कर सकते क्या

मैं सोता सिंह जगाऊंगा तुम उसे सुल्हा सकते हो क्या ?
मैं घर घर आग लगाउंगा तुम उसे बुझा सकते हो क्या ?
मैं हिन्दु राष्ट्र बनाऊंगा तुम उसे मिटा सकते हो क्या ॥१॥
मैंने देखा औरगंजेब और अकबर का हमने देखा
बादिर की नादिरशाही को शत बार यहां होते देखा
तैमूर लंग चंगैजों को प्रतिवार वार करते देखा
आखों देखा पंजाब कांड तुम उसे छिपा सकते हो क्या ॥२॥
पद्मनी हुई क्यों भस्म साथ रानी दुर्गा अंगारो में,
जंगल जंगल राणा घूमे, क्यों शिवा थे कारागारों में,
गुरु गोविन्द के दोनों बच्चे क्यों चुना दिये दीवारों में,
उन पृथ्वीराज के बधिकों को तुम मित्र बना सकते हो क्या ॥३॥
यज्ञोपवित्र अठहत्तर मन किसने तोले है ध्यान हमें,
दस कोटि यवन भारत भू पर, किस कारण है ध्यान हमें
यों उठा न रखा है कुछ भी पर हुआ बताओ क्या बोलो
मैं हिन्दू राष्ट्रबनाऊंगा तुम उसे मिटा सकते हो क्या ॥४॥

दमन एवं यातनाओं से किसी भी संस्कृति को नहीं मिटाया जा सकता। यातनाओं से तो और सुप्त जाति में चेतना उत्पन्न होती है। —सम्पादक

[गीत ३६]

चलने का वर दे दो

चलने का वर दे दो चाहे पथ कंटकमय हो,
मैं पुनीत पथ का बन राही,
सुख सम्पदा संसृति सुधि खोकर
जीवन ज्योति जलाऊ जल जल
जलने वर दे दो चाहे जलकर ध्यान न हो ॥

दावानल दह उठे प्रलय भी
आये सम्मुख मुझे हटाने,
हटूं नहीं, मर-मिटूं भले ही
मरने का वर दे दो, चाहे मरकर मान न हो ॥

दोषी हूं मैं पर हूं तेरा
पंथी भूला छोड़ बसेरा
तेरे पद अंको पर पद रख
बढ़ने का वर दे दो चाहे गिरने का ध्यान न हो ॥

कांटों से कट जाये चरण ही
चले उन्हीं कांटो पर पुनि पुनि
कट कट अंग गिरे धरती पर
सहने का बल दे दो चाहे जीने का आनन्द न हो ॥

[गीत ४०]

ताज वन कर जी

एक दिन भी जी मगर तू ताज बन कर जी
अटल विश्वास बन कर जी

आज तक तू बढ़ रहा, पद चिन्ह सा खुद को मिटा कर
कर रहा निर्माण जग में, एक सुखमय स्वप्न सुन्दर
स्वार्थी दुनिया मगर, बदला तुझे यह दे रही है
भूलता युग गान तुझ को, ही सदा तुझसे निकल कर
कल न बन कर जिन्दगी का आज बन कर जी
अटल बिश्वास बन कर जी।

जन्म से तू उड़ रहा निस्सीम इस नीले गगन पर
छांह मंजिल की मगर पड़ती नही फिर भी नयन पर
और जो तू लक्ष्य पर पहुंचे बिना मिट जायेगा ही
जग हंसेगा खूब तेरे, इस अचल निश्चल विफल पर
ए मनुज मत विहंग बन आकाश बन कर जी ॥—
अटल विश्वास बनकर जी।

आज तक तूने चढ़ाये आरती पर निज नयन ही
पर कभी पाषाण यह पिघल पाये एक क्षण ही
आज तेरी दीनता पर पड़ रही नजरें जगत की
भावना पर हंस रही प्रति भावन जन जागरण की
मत पुजारी बन स्वयं भगवान बन कर जी ॥—
अटल विश्वास बन कर जी।

———

[गीत ४१]

हम को आगे बढ़ना है

उठो रे वीरो कमर कस लो हम को आगे बढ़ना है।
मार्ग हमारा बहुत कठिन है फिर भी बढ़ते चलना है
प्रण केशव का पूरा करने; भगवा प्यारा ऊंचा करने
स्वतन्त्रता के हवन कुण्ड में हमको आगे चढ़ना है॥
हिन्दू धर्म का डंका बजाने-भूले हुओं को पथ पर लाने
हम यह सब कुछ करने को शीश हथेली पर धरना है
रणशंख बजा कर प्यास बुझानी
रण क्षेत्र में लहू से भिड़ कर घूट लहू से भरना है॥
घोर कष्ट जंगल के सहकर
दिन भर दिन भूखों ही रहकर
चेतक के स्वामी की भांति अपमान मान का हरना है॥

[गीत ४२]

कदम कदम बढ़े चलो

देश के लिये कदम कदम बढ़े चलो
आज शक्ति साधना, पुकार कह रही
भारतीय भावना पुकार कर रही
क्रान्ति के लिये कदम कदम बढे चलो
देश के लिये कदम कदम बढे चलो

शृंखलायें तोड़ दो बढ़ाओ मां का मान
होड़ लगी कौन करे, पहिले शीश दान
स्वाधीनता-समर के उपक्रम बढ़े चलो।
देश के लिये कदम कदम बढ़े चलो ॥

नौजवान देखो कहीं झुक न जाये भाल
स्वाधीनता तो मांगती है रक्त-लाल लाल
राष्ट्र-गीत के नये सरगम बढ़े चलो।
देश के लिए कदम कदम बढ़े चलो ॥

आज कोने-कोने से जयहिन्दू की ध्वनि उठी
बढ़ो चलो पुकार राष्ट्र, शक्ति बज उठी
तुम समुद्र हो अगम, उफन बढ़े चलो।
दे । के लिये कदम कदम बढ़े चलो ॥

(गीत ४३)

बसी नई एक दुनिया

बसी नई एक दुनियां है इम हिन्दू वीरों से
संघ है मन्दिर देवता भगवा धर्म अपना ध्येय
अपना ध्येय है सबसे उत्तम, राणा शिवा को था यह प्रियतम
गोबिन्द बन्दा यही चाहते प्राप्त करे निज ध्येय ॥
उनकी इच्छा रही अधूरी, हम सब मिल कर करेंगे पूरी
तन मन धन सब कुछ देकर प्राप्त करेंगे ध्येय ॥

राष्ट्र का हम सब कार्य करेंगे
और न किसी ध्यान धरेंगे

वेग से हम सब आगे बढ़ेंगे, हाथ में भगवा ले—

गर्मी सर्दी खुश्की पानी
किसी से होगी न ध्येय की हानि
आवो भारत वीरो आओ
अपनी अर्पणी भेंट चढ़ाओ

हम सब इसकी करेंगे पूजा, पूजा करें मिलके ॥

(गीत ४४)

संघ चाहता है

संघ चाहता है हिन्दु सब नींद तज दे घोर
दुर्गुण अनेक उनके जाये सपनों से भाग

भेद भाव फूट फाट दुर्बलता होय दूर
प्रबलतम संगठन वृत्ति जाये उनमें से जाग

धैर्यवान वीर्यवान सुगुणों की बनके खान
भारत को उन्नत बनाने में जाये लग

विपदा बवन्डर निराशा के अन्धकार
या शत्रुओं की खरग न रोक सके उनका भाग

卐 卐 卐 卐

संघ चाहता है हिन्दु संस्कृति अचल रहे
धर्म हिन्दुओं का इस जगत में अमर हो

हिन्दुओं का स्थान हिन्दुस्थान रहे हिन्दुओं का
सूर्य सम तेज हिन्दू राष्ट्र का प्रखर हो
जो है अहिन्दु सुख औ समृद्धि भोगे
देशद्रोह वृति नही उनमें मगर हो
हिन्दुओं के साथ सदा प्रेमभाव से रहें
शांतिपूर्ण हिन्दुओं का हिन्दुस्थान घर हो

(गीत ४५)

हिन्दी हिन्दु हिन्दुस्थान

कवि आज सुनादे वही तान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्थान।
युग युग से सोये हिन्दु की, वीर भुजायें फडक उठे।
हल्दी घाटी रण प्राणों की तलवारें, कड कड कडक उठे।
तेरे भीषण बौछारों से थरथरा उठे सारा जहान॥
कवि आज सुनादे वही तान........

युवकों की शुष्क धमनियों में नूतन बल का संचार किए।
नव रक्त बिन्दु फिर उमड़ पड़े बन्धुत्व प्रेम आधार लिए।
सुन्दर अतीत की स्मृति में, धधके वह ज्वालामुखी महान।
कवि आज सुनादे वही तान........

चित्तौड वह सारा गूंजउठे, पदमनी की वह ज्वाल लिए।
सोलह हजार ललनायें जागे, नित नूतन बलिदान लिए।

शिवराजवीर की दमक उठे वह म्लेच्छ दमनकारी कृपाण ॥
कवि आज सुनादे वही तान.........
वीर बन्दा की स्मृति में भारत के हिन्दू जाग उठे !
अकबर को दहलाने वाली राणा प्रताप की आन उठे।
झांसी रानी, नानासाहब का जागे फिर वह बलिदान ॥
कवि आज सुनादे वही तान.........
प्यारा हकीकत जाग उठे, बच्चे वाले दिवारों में।
सारा भूमण्डल गुंज उठे, जय भारत मां के नारों से।
उठ जाग जाग सोया हिन्दू, तू भी सीना तान ॥
कवि आज सुनादे वही तान........

—★—

(गीत ४६)

हिन्दू निज को पहिचान

निज को तू पहिचान हिन्दू, निज को तू पहिचान।
आदि गुरू दुनियां का था तू, तेरा भगवा निशान।
भारत में था शान से उडता, कहां गई वह शान ?
कहां गये राजा चक्रवर्ती, अशोक विक्रम महान।
गुरू गोविन्दसिंह वीर शिवाजी उनको तू सन्तान ॥
सदा सफल जग में होते हैं वह देते बलिदान।
जाति सेवा व्रत लिया है, तज मान अपमान।
सम्भल सम्भल बढ़ता जा आगे, चूक न जाय निशान।
लहराना है एक बार फिर, अपना राष्ट्र निशान ॥

क्यों तू चक्र में फंसा हुआ है हिन्दू नव जवान।
संघ के मार्ग से ही होगा भारत का उत्थान॥

—★—

[गीत ४७]

फिर जाग उठी वह सुप्त ज्वाल

फिर जाग उठी वह सुप्त ज्वाल,
अरियों को लगती कठिन काल !

पृथ्वी नृप की उन भूलों से
शुभ अनाचार के शूलों ने,
चित्तौड़ - चिता की भस्मी ने,
अति विकट शौर्य की रश्मी ने,
जयमल फत्ता के प्राणों ने,
सांगा के नित बलिदानों ने,
जो अंगारों पर राख जमी—
फिर उड़ा उसे कर दिया लाल !
फिर जाग उठी वह सुप्त ज्वाल !
अरियों को लगती कठिन काल !

卐 卐 卐 卐

चमकी प्रताप के भाले में,
अति-रक्त अरुण के नाले में।
कड़की फिर शिवा कटारी में,
चमकी औरंग-दल भारी में,

बन्दा गुरु के असि-बाणों में,
रानी झांसी के प्राणों में,
वह आज अखण्ड-प्रचण्ड घटी,
बन संघ-शक्ति कर ऊर्ध्व भाल !
फिर जाग उठी वह सुप्त ज्वाल !
अरियों को लगती कठिन काल !

[गीत ४८]

वही है भारत की सन्तान

जाति व्रत परम्परा, इतिहास, धर्म संस्कृति हो—एक समान,
सदा हो एक ध्येय की दृष्टि
करे कर्तव्य भावना सृष्टि
भरा हो जिसमें सर्वस्व त्याग
जिसे हो निश्चय से अनुराग
देश से प्रेम, प्रेम में त्याग, त्याग में स्वार्थका बलिदान,
वही है भारत की सन्तान
भरे हो नियमितता साहित्य
समर्पित करदे निज अस्तित्व
करे राष्ट्रीय कृति में भक्ति
रहे सहयोग सहन की शक्ति
कार्य से प्रेम प्रेम से सदा हो आज्ञा पालन का ध्यान
वही है भारत की सन्तान

स्वयं प्रेरित हो जिसके प्राण
दिखाऊं वृति न हो अभिमान
हो जिसका अन्तकरण विशाल
वही है भारत मां का लाल
एक हो ध्येय, ध्येय हो संघ, संगठन का हो सत्य महान,
वही है भारत की सन्तान

[गीत ४९]

सब जग को हिन्दू बनाना है

हम हिन्दू हैं-हम हिन्दू हैं, सब जग को हिन्दू बनाना है
बिखरे मोती एक सब्र लडी में पिरोकर हार बनाना है
महाभारत का सन्देश यही—गीता का सन्देश यही
वह ही सच्चा हिन्दू होगा, जिसने भगवा गुरु जाना है
जग को विद्या सिखलाने वाला, भारत वर्ष हमारा था
उसकी उन्नति के मार्ग पर, अब भारतवर्ष को लाना है
भारत माँ की जंजीरों में, जंजीर डालने वालों को
इस पुण्य भूमि से, दुष्टों को मार भगाना है।
वह ऊंचा है यह नीचा है इन भेदों से क्या मतलब,
सब हिन्दू भाई भाई हैं हम सबको यही सिखाना है
मेवाड के कौने कौने से, आवाज यही एक आती है
तुमने अपने बलिदानों से, राणा का काम निभाना है—

(गीत ५०)

हमारा संघ

उदय हुआ इक तारा संघ का,
जब तक श्वांस है तब तक आस है।
फहराये भगवा प्यारा ॥
उदय हुआ एक तारा…

मैं भी न डोलूं तू भी न डोले
भाई से भाई प्रेम से बोले,
सगठना लक्ष्य हमारा ॥

वीर पताका हाथ में ले ले,
आशा तुम्हारी हाथ में खेले।
दूर नही है किनारा ॥

आओ वीरो धर्म समर में
लेकर अपनी खडग कमर में।
रणभूमि का इशारा ॥
उदय हुआ एक तारा…

(गीत ५१)

वन्दी क्या करेगा प्यार ?

जेल का जीवन संभव है, मृत्यु में बहता प्रणय है।
खेल, यौवन को मिली है, बेड़ियां उपहार ॥ वन्दी ॥
अब तू इनसे प्रेम करले और इसका साथ करले।
नित्य स्वागत को खडी, है जेल की दीवार ॥ वन्दी ॥
गम को खाकर और खिला कर, आंसुओं को भी पिलाकर

काटले दिन काटने हैं, काफी तुझे आहार ॥ वन्दी ॥
क्या करेगा बन सजाकर क्या करेगा घर बसा कर ।
देख फांसी का गले में, मिल रहा है हार ॥ वन्दी ॥

(गीत ५१)

ऐसा संघ हमारा हो

हिन्दू जाति का सकल विश्व में, गूंज रहा जयकारा हो ।
ऐसा संघ हमारा हो ॥

स्वयं बने राष्ट्रीय पूर्ण हम अपने गुण सब में भर दे ।
सदियों से सोये हिन्दू को, आज पुनः जाग्रत कर दे ।
शूरवीर बन हिन्दु जाति का, मस्तक हम उन्नत कर दे ।
पावन हिन्दुस्थान हमारा बना आंख का तारा हो ।
ऐसा संघ हमारा हो ॥

हिमगिरि से टक्कर लेने की यदि कोई मन में ठाने ।
सागर की अनन्त लहरों से यदि कोई लड़ना ठाने ।
स्वाभिमान से हम कह दें पहिले अपने को पहिचाने ।
हिन्दू वीर के सिंहनाद से भारत का जयकारा हो ।
ऐसा संघ हमारा हो ॥

आज पद्मिनी रानी के जौहर की आग पुनः धधके ।
देख देख हल्दीघाटी को भुजा राजपूती फड़के ।
आज सुप्त मेवाड भूमि का ज्वालामुखी महा धधके ।

महा कौशल

प्रान्त नायक

प्रांतीय प्रचारक

श्री राजभाऊ दिवाकर

सहप्रान्त प्रचारक

श्री विभास चन्द्र बैनर्जी

हमारे अन्य प्रांत नायक

राजस्थान प्रान्त प्रचारक

श्री लेखराज शर्मा

प्रान्तीय प्रचारक गुजरात

(श्री मधुकरराव भागवत)

भस्म इसी में हो पिशाच दल हिन्दू का जयकारा हो।
ऐसा संघ हमारा हो।

हिन्दु फिर से परमपूज्य निज, भगवा ध्वज को पहिचाने।
राणा और शिवा के वंशज होने में गौरव माने।
वेद और गीता अध्ययन से परम आत्मा को जाने।
हंसते हंसते बलिवेदी पर, मिटना ध्येय हमारा हो।
ऐसा संघ हमारा हो॥

स्वयं शक्ति के संचय से हम शत्रु हृदय दहला देंगे।
हिन्दू प्रभाव को उन सबके हृदयों में ठहरा देंगे।
अपने प्रिय भगवे निशान को दिगदिगन्त फहरा देंगे।
मातृ भूमि के प्रखर तेज का जगती में उजियारा हो।
ऐसा संघ हमारा हो।

[गीत ५३]

मन्त्र जीवन व्याप्त हो

एकता अज्ञाकिंता का मन्त्र जीवन व्याप्त हो।
श्वांस औ' निश्वावास में निज नेता पर विश्वास हो॥

श्वेच्छा से जीवन अपना राष्ट्र के आधीन किया,
कार्य शक्ति को एक हृदय से संघठना का दान दिया।
इन प्राणों का तो केवल निज नेता ही अधिकारी हो॥

वायु द्वारा चिंगारी से दावाग्नि जल उठती हो,
जल विन्दु की प्रचण्ड धारा सृष्टि प्रलय कर सकती हो।

संघठना में विजय शांति पूर्ण विकसित होती है ॥
स्नेह भरे उत्साह भरे नस नस में भारत मां की,
सतत जलाये दीपमालिका ज्वलन्त अन्त करणों की।
संकेतों की राह देखती असंख्य ज्योति घर घर हो ॥

卐 卐 卐 卐

स्वतन्त्रता की उपासना, निश दिन घर घर होती हो।
पंक्ति पंक्ति इतिहास शौर्यमय उर रोमांचित करती हो ॥
भावी रण में निर्भय थाती अनुपम दृश्य दीखती हो।
संघठना का रुप देखने एकत्रित नित हुआ करें ॥

[गीत ५४]

राष्ट्र की अखण्ड पूजा

यह अखण्ड राष्ट्र कीपूजा है, कोई बच्चों का खेल नहीं
है त्याग प्रतिज्ञा का जीवन कोई बन्धन या जेल नहीं
उन बन्दी सिंहों की पुकार—अपमानित वीरों की कटार
जिनके तीरों का प्रहार, यमराज सकेगा झेल नहीं
इस कटंक पथ का पथिक वही, जिनको प्राणों से प्यार नहीं
यह द्वन्द निराशा आशा का चौसर सतरँज का खेल नहीं
चाणक्य से त्यागी वीर वैरागी वंशज वन्दी हैं इसमें
पद लोलुप गति विहीन भक्त, बगुलों की ठेलमठेल नहीं
यह प्रचण्ड झोंके वायु के रखते सामर्थ्य बुझने का
दुष्टों का वह दीपक जिसमें, गंदी बाती या तेल नहीं

[गीत ५५]

आजादी के मतवाले हैं

हम मातृभूमि के सेवक हैं, आजादी के मतवाले हैं,
बलिवेदी पर हंस हंस कर, अपना शीश चढ़ाने वाले हैं।
केसरिया बाना पहन लिया तबफिर प्राणोंका मोह कहां?
जब बने देश के सन्यासी नारी बच्चों का मोह कहां,
जननी के वीर पुजारी हैं, स्वार्थ लुटाने वाले हैं।
हम मातृ भूमि के सेवक हैं आजादी के मतवाले हैं॥

卐 卐 卐 卐

अपने देश प्रेम की रंगत में, रंग गया हमारा यह जीवन,
इसलि..ये तो समर्पित है सब कुछ अपना तन मन धन।
आगे चरण बढा रण में, पीछे न हटाने वाले हैं॥
सन्तान शूर वीरों की है, हम दास नहीं कहलायेंगे,
या तो स्वतन्त्र हो जायेंगे या रण में मिट जायेंगे।
अमर शहीदों की टोली में, नाम लिखाने वाले हैं॥

[गीत ५६]

शक्ति के लिये

शक्ति नव जीवन भर दो!
पिला करके यौवन प्याला
बना दो मुझ को मतवाला
मिटा दो अन्तर तम काला

एक हुंकार सबल कर दो !
शक्ति नव जीवनमें भर दो !
जलादो अग्नि हृदय बन में
लगादो लपटें मां, तन में
जगादो ज्वाला कण कण में

मात ऐसी विद्युत वर दो !
शक्ति नवजीवनमें भरदो !
सुहायें हम प्रलयंकारी
उड़ायें विप्लव चिनगारी
क्रांतिमय हो दुनियां सारी

निज कर मम मस्तक पर धर दो
शक्ति नवजीवन में भरदो !

संघे शक्ति कलियुगे

भारतवासी शक्ति की उपासना, किसी प्रतिक्रियात्मक दृष्टि कोण से नहीं, अपितु स्वयं संघटन के लिए करते हैं। शक्ति विश्व कल्याण एवं शान्ति में, सहायक होती है, बाधक नहीं।

—सम्पादक

(गीत ५७)

भारत को स्वर्ग बनादुंगा

शत्रु को आज दिखादूंगा, भारत को स्वर्ग बना दूंगा।

मैं उस राणाका वंशज हूं, अकबर को जिसने विजय किया॥

हल्दी घाटी में यवनों को बकरे की भांति खेत किया।

मैं उनके प्यारे खांडों की फिर से प्यास बुझा दूंगा॥ शत्रु॥

क्या अमरसिंह राठौर की तुम, वह तेज कटारी भूल गये।

शर काट सलावत का डाला क्या किला आगरा भूल गये॥

मैं जयमलफत्ते की भांति, सीनेको आज अड़ा दूंगा॥ शत्रु॥

श्री तेगबहादुर बन्दे ने हिन्दुत्व दिखाया था तुम को।

दिवार में स्वयं में चिनवाकर बच्चों ने धर्म सिखाया था तुमको

मैं बाल हकीकत से हिन्दू भारत में पुनः दिखा दूंगा॥ शत्रु॥

क्या हरीसिंह नलवे की तोपें काबुल वाली भूल गये

जिसके भय से वह आज तलक बस नाम मात्र से रोते रहे॥

मैं यशवन्त सिंह का पुत्र रामसिंह, जैसा वीर दिखा दूंगा।

कई बार मोर्चे आसफ के दुर्गावति ने हटा दिये

ल्हाशों पर ल्हाशें जल गई मुगलों के, छक्के छुड़ा दिये॥

मैं फिर ऐसी मातायें रण भूमि में, आज दिखा दूंगा॥शत्रु॥

जरा अकबर से पूछा होता उस किरण मई की शक्ति को।

गुलज़ार ने सब को दिखा दिया, उस दुर्गा दास की भक्ति को।

मैं उस पद्मनी रानी के जौहर को आज दिखा दूंगा,

— — —

(गीत ५८)

हिम्मत को मत हार

हिम्मत को मत हार ऐ पंथी,
हिम्मत को मत हार
तोड दे चप्पू छोड दे नैय्या,
बन जा अपना, आप खिवैया।
हो जायेगा पार पंथी,
हिम्मत को मत हार।
शहर, नगर और गांव में जाकर
संगठन का चर्चा फैला के ॥
संघ का कर प्रचार पन्थी,
हिम्मत को मत हार---
किस्मत से मत मांग सहारा
हिम्मत का हल्का सा इशारा
जोड़ ले टूटे तार पंथी,
हिम्मत को मत हार-
पहाडों से टकराने को,
और शत्रु से भिड जाने को।
हर दम रह तय्यार पन्थी—
हिम्मत को मत हार—

(गीत ५९)

चाँद हमारा

चमक उठेगा पूर्णतः मेरा
चांद उजाला करने को।

देख जगत चौंध उठेगी
इस अपूर्व एकता को ॥
अभी चुप है किन्तु मेरा
चुप कार्य्य नहीं बैठा है ।
बढ़ना सन सन वायु जैसे
चुप कार्य्य नहीं बैठा है ॥
भरा हुआ है, जोश हृदय में
कार्य एकता करने को ॥ चमक

卐 卐 卐

कमी अभी है उसी काम की
पूर्ति करेंगे हम सब मिलकर ।
दिखा जगत को देंगे कि हम
क्या क्या करते हैं सब मिलकर ॥
है स्वतंत्र पर स्वतंत्रता का
मूल हम ही चुकायेंगे ।
जय-जय की नारों को
सुन रिपु सारे भग जायेंगे ॥
मंत्र सीखाया वही है मुझे
एक एकता करने को ॥ चमक

[गीत ६०]

बदलने दो हमें क्या है ?

नृप बदला प्रजा बदली, बदलने दो हमें क्या है
सच्चाई पर ही चलने से प्रभु भी साथ देता है !!
कभी जेलें कभी मारें कभी दुनियां की फटकारें

धर्म पर चलने वालों को यही फिर हाल होता है
धर्म प्रचार करने में भी हो जाती है चिढ़ जिनको
अधर्मी कंस जैसों का आखिर में नाश होता है॥

प्रभु का नाम लेने पर भी
लग जाती हैं हथकड़ियां
वह कष्ट कित्तंन में भी
संघ प्रचार होता है।
प्रभु के घर में देरी है
नहीं अन्धेर है लेकिन
जो फेकें चान्द पर मिट्टी
उसी के मुंह पर आता है
नृप बदला प्रजा बदली—

[गीत ६१]

जागरण गीत

नींद तोड़ो जाग जाओ, जागरण की यह घड़ी है।
आज सुनलो बंधु तुम निज जाति में कितनी कमी है॥
मिट रहे आदर्श सारे लुट रही निधियां हमारी।
झूमते जाते स्वयं हम देश में छाई खुमारी॥

卐 卐 卐 卐

वृद्ध का कुविवाह रच वर प्रणाम देश विरान होता।
सांस की अन्तिम घड़ी में छाया मंगल गान होता॥

बालिकायें और! विधवा देश में अब रो रही हैं।
हैं विवश हम हाय! उनकी यह दशा क्यों हो रही है॥

卐 卐 卐 卐

हो गया क्या मांग पर, अब शोभती क्यों नहीं लाली।
मां! अभागिन नारियों के चूड़ियों से हाथ खाली॥
थैलियों के मोल बिकते जा रहे तेरे युवक गण।
कुप्रथा यह तिलक की अब कर रही बरबाद जीवन॥

卐 卐 卐 卐

देखलो पूरब दिशा में ललिमा अब छा रही है।
विहङ्ग बालायें मधुर सुर में सुमंगल गा रही है॥
ऋषिवरों के वंशधर युवकों वहां फिर ज्योति लाओ॥
उच्चस्वर गुंजार कर यह जागरण का गीत गाओ॥

[गीत ६७]

शहीदों की टोली

सिर पर बांध कफन चला, था जहां शहीदों की टोली।
तड़प उठा पंजाब न भूला जलियां वालों की गोली॥
भक्तसिंह की बुझी चिता की राख बुझाने आया हूं।
हो गये देश के खण्ड खण्ड मैं यही सुनाने आया हूं॥
ब्रह्मा के मैदानों में या सिंगापुर से जाकर पूछो।
सो गये लाल मां के कितने नेताजी से जाकर पूछो॥
दे रही दुहाई बारबार ये लालकिले की दीवारें।
देखो फिर जंग न खा जाये नेताजी की तलवारें॥

कितनोंने निज शिर काट २ भर दी मां की खाली झोली।
होटों पर हंसी खेलती थी, जब लगी कलेजे से गोली ।।
अमर शहीदों की समाधि पर फूल चढ़ाने आया हूं।
लुट गया आज कितना सुहाग इन इस्लामी तूफानों से ।।
विधवा करती हैं आर्तनाद चहूं ओर खड़ी विरानों में।
जल रहा मेरा स्वदेश चहुं ओर खड़ी है बर्बादी ।।
टपकाती है खूनी आंसू जो मिली आज है आजादी।
सच्ची स्वतन्त्रता की ज्वाला को मैं भड़काने आया हूँ ।।

[गीत ६३]

हम है नव जवान

हम हिन्दू जवान जिन्दा हैं
कुछ करके दिखा देंगे, दुनिया को बता देंगे
कहते नहीं हम मुंह से
कुछ करके दिखा देंगें ।।
प्रताप की तलवार का हर वार है जिन्दा
अर्जुन के अग्नि बाणों की रफतार है जिन्दा
शिवाजी के मरहटों की ललकार है जिन्दा
जो सामने आयेगा हस्ती से मिटा देंगे ।। हम
था राम जिस ने पापियों का खून बहाया
ले चक्र सुदर्शन कृष्ण भगवान भी आया

था जालिमों से जाति को जा कर छुड़ाया
हम उन ही की सन्तान हैं कुछ कर के दिखा देंगे। हम !!
ब्राह्मण गुरु की सेवा कभी बन्द न होगी
मन्दिर से गीता की कथा भी बन्द न होगी
गुरुद्वारे में नानक की सदा ज्योति जगा देंगे
जो इस को मिटायेगा हम उस को मिटा देंगे !! हम
दुर्गा पद्मिनी जैसी हुई है माता
और जिनके सरों पे था सदा धर्म का छाता
प्रताप शिवा जी की हुई है जैसी माता
हम इन ही देवियों की याद दिला देंगे
हम कुछ कर के दिखादेंगे
हम हिन्दू जवान जिन्दा हैं—
कहने नहीं हम मुंह से—कुछ करके...

(गीत ६४)

भारत राष्ट्र हमारा

हम हैं सारे राष्ट्र के प्यारे, भारत राष्ट्र हमारा।
संघठना का ध्येय हमारा अंतिम एक ही तारा।
आवो सब मिल खेले कूदें आपस में हम भाई।
बालक हम सब माता है वह भारत राष्ट्र हमारा।
हम सब हिन्दू बन्धु बन्धु, आपस ना झगड़ेगे।
चमकायेंगे इस भारत को सब दुनिया से न्यारा।

निश्चय ही उत्थान करेंगे हम तेजस्वी वीरा।
माता वह है जय जय उसकी गूंज उठे जग सारा।
तेरे पूजन के लिए हम खड़े हुए हैं सारे।
मातृभूमि हे प्रणाम तुझको तू ही वत्सल माता।
एक दीप दूसरे जले तब ऐसे अगणित होवे।
एक एक कर जागे सारे, संघ मन्त्र के द्वारा।

(गीत ६५)

फैली अन्धेरी रात है

वैभव गया सुख खो गया फैली अन्धेरी रात है।
चिन्ता चिता तेरी अभागे देखती अब बांट है।
जड़ दास्य की जंजीर से पकड़े खड़े जल्लाद रे।
चल छोड़ भगवा धार रे, जवान भारत जाग रे।

जड़वाद के भीषण भवन में विश्व नौका जा रही।
बलहीन पर बलवान की रण गर्जनायें हो रही।
आशा न तज तेरे ही पथ पर, आ रहा संसार है।
आशा किसी की कर न तेरा तुही, तारन हार है।

तेरे ही हाथों में छिपा है पूर्ण गौरव भाग रे।
जल गया विश्व धार और विराट भारत जाग रे।

तू अब नहीं गजकेसरी किंचित तो पलकें खोल रे।
हिन्दुत्व ही मानव है रे, यह मन्त्र फिरसे बोल रे।

बल छटा संजीवनी से हो जगत में प्रकाश रे।
हे विश्व शान्ति के विधान अखंड भारत जाग रे।

———

[गीत ६६]

है हिन्दूपन की कसम तुम्हें

ओ हिन्दू आंखों के सम्मुख,
कटती तेरी भोली गायें।
यवनों के अत्याचारों से,
पीड़ित हैं सारी ललनायें।
यह अत्याचार मिटा देना, भगवान राम की कसम तुम्हें।
नौआखाली की कसम तुम्हें॥

है डोल रहा देखो हिमगिरि,
भारत की करुण पुकारों से।
उस हिन्दु सिन्धुमें ज्वार उठा,
हिन्दू की हाहाकारों से।
भारत के सारे वीर जाग, गंगा यमुना की कसम तुम्हें।
जलते बिहार की कसम तुम्हें॥

छिनती है तेरी कृपाणें
लुटते मन्दिर तेरे प्यारे।

लुटता है तेरा अमृतसर,

लुटते हैं तेरे गुरुद्वारे ।

ओ केश कड़े कंघे वाले, गुरु गोविन्दसिंह की कसम तुम्हें ।

दोनों पुत्रों की कसम तुम्हें ॥

लुटतीं हैं तेरी मातायें

लुटते हैं तेरे स्वर्ण सदन ।

लुटते तेरे भोले बच्चे,

लुटते हैं तेरे वन उपवन ।

हिन्दू तू भी संगीन तान, है शिखा सूत्र की कसम तुम्हें ।

है मातृभूमि की कसम तुम्हें ।

(गीत ६७)

आगे बढ़ो आगे बढ़ो

रुकना न तुम हिन्दू वीरो आगे बढ़ो आगे बढ़ो ।

आंधी हो या तूफान हो हम आगे बढ़ते जायेंगे ।

विपदायें यदि बाधा डालें हम ठुकराते जायेंगे ।

छोड़ दिया जब प्यार पसारा हमने जीवन जीना है ।

दास शृंखला तोड़ के एक दिन भारत नया बसाना है ।

भगवा ध्वज है प्राण हमारा जीवन उसको देना है ।

सेनापति की आज्ञा सुन कर कदम कदम बढ़ जाना है ।

आगे बढ़ो आगे बढ़ो ॥

(गीत ६८)

देशहित सदा विचारा है

देशभक्त है वही कि जिसने,
देश हित सदा विचारा है।
राम रोम से यह स्वर निकले,
भारत राष्ट्र हमारा है।
निकल हिमालय से जो आई,
गंगा जी की धारा है।
धार धार से यह स्वर निकले,
भारत राष्ट्र हमारा है।
कोयल जब आमों पै बैठती,
पीती रस की धारा है।
कुहू कुहू से यह स्वर निकले,
भारत राष्ट्र हमारा है।
पर्वत की घाटी में बहता,
बहता झरना प्यारा है।
झर झर झर से यह स्वर निकले,
भारत राष्ट्र हमारा है।
बादल जब आकाश पै चढ़ता,
छुटता जल फव्वारा है।
बूंद बूंद से यह स्वर निकले,
भारत राष्ट्र हमारा है।

जब तक बजता जग में संघ का,
अलबेला इक तारा है।
तार तार से यह स्वर निकले,
भारत राष्ट्र हमारा है

(गीत ६६)

मेरा अंगारों से परिचय

किसने रोका दीवानों को,
किसने रोका दीवानों को।
जो नित आगे बढ़ते जाते,
भूधर पर भी चढ़ते जाते।
किसने रोका जग को कम्पित,
करने वाले तूफानों को।
जिनका अंगारों से परिचय,
उनको जलने का भी क्या भय ?
रोका है किसने दीपक से,
मिलने वाले परवानों को।
बचा बचा कर जो फूलों को,
चूमा करते थे शूलों को।
कभी समझ पाई क्या दुनियां,
उनके तीखे अरमानों को।

प्रान्तसंघ चालक

बारस्टर ग्यानचन्द गोपाल दास

भूतपूर्व सिन्ध
के
प्रान्त नायक

प्रांतप्रचारक
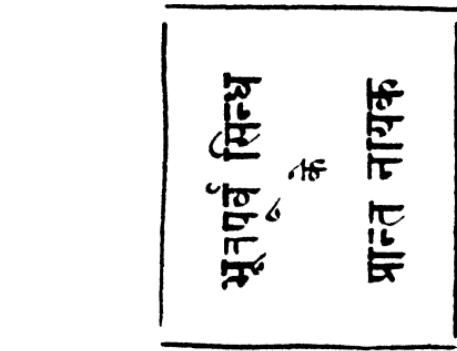
श्री राजपालजी पुरी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रतिबन्ध उठने के पश्चात, संघ की ओर से, उसका एक विधान केन्द्रीय सरकार को प्रस्तुत किया गया था। विधान के अनुसार केन्द्रीय कार्यकारिणी मण्डल के निम्न पदाधिकारी घोषित किए गए थे। वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर अ० भारत- वर्ष में निम्नांकित परिवर्तन हुए हैं।

दिल्ली में समस्त यू० पी० के जिले, दिल्ली प्रांत से हटा कर यू० पी० में दे दिए गए हैं। दिल्ली को अलग प्रांत न रख कर उसको पंजाब प्रान्त में विलीन कर दिया गया है।

केंद्रीय कार्य कारिणी मण्डल

श्री माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर 'गुरूजी'		सर संघ चालक
श्री भैय्या जी दाणी		सर कार्यवाह
श्री वसन्तकृष्ण ओक, भू० पू० दिल्ली प्रांत प्रचारक		शारीरिक प्रमुख
प्रो० महावीर, पंजाब		बौद्धिक प्रमुख
श्री बालासाहब देवरस, नागपुर		निधि प्रमुख
श्री उमाकान्त आप्टे, नागपुर		प्रचारक प्रमुख
श्री ला० हंसराज,	दिल्ली	सदस्य
बैरिस्टर नरेन्द्रसिंह,	यू० पी०	,,
श्री ठाकुर प्रसाद तिवारी,	बिहार	,,
,, रामस्वरूप	राजस्थान	,,
,, भैय्यालाल सर्राफ	महाकौशल	,,

अन्य नाम बाद में घोषित किये जायेंगे।

हम इस दुनियां को छोड़ चले,
कोई दुनियाँ और बसानी है।
मां बाप से रिश्ता तोड़ चले,
किसी और से प्रीत लगानी है।
बलिदान बिना कभी नहीं होगा,
उद्धार इस हिन्दू जाति का।
अब तुक बहुतों ने शीश दिये,
अब की मेरी कुर्बानी है।
यह राह मेरी पहिचानी है॥

[गीत ७०]

तन मन निसार करना

भगवे का मान करना, माता के गीत गाना,
सीखा है संघ से यह तन मन निसार करना॥
यह हिन्द हिन्दुओं का, दिन रात रट लगाना,
भारत हमारी मां है, इसके सपूत बनना॥
शिवराज छत्रपति के नक्शे कदम पै चलना,
भारत स्वतन्त्र करना, भगवा बुलन्द करना॥
जब हम में एकता थी दुश्मन भी काँपते थे।
दुश्मन को यह खबर थी, हम जानते हैं मरना।
बस है पवित्र अवसर पर करलो तुम व्रत निश्चय।
फंस गई भंवर में नैया मिलजुल के पार करना

(गीत ७१)

सोतों को जगाये जा

उठ रे हिन्दू नौजवान हिन्द को बचाये जा।
हिन्दु जाति के लिए शीश तक कटाये जा॥
हिन्दु तू बलवान है तेरी ऊंची शान है।
तेरा हिन्दुस्थान है, ऊंचा सर उठाये जा॥
जोश से गाये जा॥१॥

वक्त है नाजुक बड़ा, सामने दुश्मन खड़ा।
अर्जुन बनके तीर उसकी छातीपर चलायेजा।
धरती पर सुलाये जा॥२॥

प्रतापकी औलाद तू जिस्म तेरा फौलादहै,
गीता ज्ञान याद हो, भगवे को लहराये जा।
सोतों को जगाये जा॥३॥

[गीत ७२]

ऊट मटोल्ला हो जायगा

बिना मेल के हिन्दु जाति तेरा ऊट मटोल्ल हो जायगा।
राम कृष्णका खूनजो नसमें वह सब ढील्ला हो जायगा
तेरे बड़ा ने किसी वक्त में टूटे आईने जोड़ दिए।
सोलह सत्रह बार पकड कर मोहम्मद गोरी छोड़ दिए।
अहिंसा परमो धमके अब तो बिलकुल कान मरोड़ दिए।

जिस कारण बरबाद हुए, उस जात पात को तोड़ दिए।
वरना गैरों के कब्जे में तेरा कुटुम्ब कबिल्ला हो जायगा ॥१॥

परिवर्तन होने वाला जो जाति अब भी सोवेगी।
अपनी नौका अपने हाथों अपने आप डुबावेगी।
जो कुछ तेरे घर में बाकी, सब अपने हाथों खोवेगी।
एक दिन फिर आवेगा ऐसा सिर को पकड़ कर रोवेगी।
सवाल करना भीख मांगना तेरा वसील्ला हो जायगा ॥२॥

बारह वर्ष के बाद यहां मर्दुम शुम्मारी आती है।
हिन्दु जाति बुरी तरह से अपना नाम लिखाती है।
कोई वैश्य कोई जैन और कोई जाट बतलाती है।
यही कारण है मार गैरो की बुरी तरह से खाती है।
अबभी सम्भलो भाइयो नहीतो नामयह हिन्दुमिट जायगा।३।

———

[गीत ७३]

वह तेरी फुंकार कहां ?

जो भस्म करती थी रिपुओं को,
वह गई तेरी फुंकार कहां ?
विश्व विजयी तू ऐ हिन्द
वह गई तेरी ललकार कहां ?
यह देश कभी जो तेरा था,
वह औरों का स्थान बना।

स्वतन्त्रता का मान था तू,
अब आप ही बन्दीवान बना।
जो त्रिलोक तक गूंज उठा,
वह गई तेरी गुंजार कहां ?
दुष्टों के सर पर जो चमकी थी,
वह गई तेरी ललकार कहां ?

(गीत ७४)

मैं महान सरिता का जल कण

मैं महान सरिता का जल कण,
मेरा काम है अविरल बहना।
मैं न जोश में बहने वाले,
बरसाती नाले का पानी।
वर्षा में ही रह बीती हो,
जिसकी केवल अस्तित्व कहानी।
सर्दी गर्मी वर्षा में,
कल कल करता मेरी वाणी।
कैसी भी विपरीत परिस्थिति,
हो मैंने उसको नहीं मानी।
मैंने सीखा है जीवन भर लक्ष्य और ही बहते रहना ॥१॥
मैं महान सरिता का जलकण मेरा काम है अविरल बहना ॥१॥

उस महान समुद्र में मिल जाना,
ही एक मात्र मेरा उद्देश्य ।
मेरे जल से जल कण लेकर,
बहते जाना अर्थ विशेष ।
कभी नहीं मुझको रुकना है,
आगे कुछ भी आ जाये ।
क्षुद्र नाले की भांति न सीमा,
का भी उल्लंघन हो पाये ।
मैंने सरिता धारा में,
अपना अस्तित्व मिलाया है।
धारा के दृष्टिकोणों को,
एक मात्र अपनाया है ।
जिस प्रबन्ध में बहते जाना
अपना मार्ग बनाया है।
मुझको है विश्वास नदी में,
जिसने मुझे बहाया है।

अपना बाना तज मैंने सरिता समाज का बाना माना ।
मैं महान सरिता का जलकण मेरा काम है अविरल बहना ॥२॥

ऊपर से हूं शांत किन्तु,
किसने देखा मेरा अन्तर ।
बहा उग्र चट्टानों को भी,
ले जाती मझधार प्रखर ।

उस धरती को मैं ही समबल,
और सुडौल बनाता हूं।
तीखे और नुकीले पत्थर,
को मैं गोल बनाता हूं।
बिजली और तूफान अग्नि की सबकी चोट मुझे है सहना।
मैं महान सरिता का जलकण मेरा काम है अविरल बहना॥३॥

भारत के सारे कुमार

(गीत ७५)

आओ आओ भारत के सारे कुमार।
गाओ गाओ माता की जय २ पुकार॥
मीठी मीठी मुरली मोहन ने बजाई॥
संघठना की तान सुनाई
किया था राष्ट्र उद्धार—
बानर सेना संग्रहित करके,
दुष्ट दैत्य निर्बल गण करके॥
संघटना की तान सुनाई
किया था जाति उद्धार—
चन्द्र गुप्त और हर्ष राज्य ही।
विक्रम राजा भोज राज्य ही॥
पूर्वराष्ट्र शूरता को ही था संघ का भार—

(गीत ७६)

सहारा छोड़कर

हिन्दू वीरो एक हो जाओ सहारा छोड़कर।
कैसे लगेगी पार नैया संघ किनारा छोड़कर ॥
गैरों ने हमसे ले लिया ताज और तख्त भी।
जाओगे अब कहां पै तुम, देश प्यारा छोडकर ॥
ईश्वर ने हमको देदिये केशव व माधव सूत्रधार।
शिवा की तरह करो काम बन्धन सारे तोडकर ॥
गीता का उपदेश है, वीर धीर तुम बनो।
भारत को स्वाधीन बनाओ स्वार्थ मोह छोडकर ॥

(गीत ७७)

उज्ज्वल काल है आता

हिन्दू राष्ट्र का उज्ज्वल काल है आता।
रैन गई अब हुआ सवेरा
जागो जागो मिटा अन्धेरा
संघ सूर्य से हृदय हमारा नवजीवन है लाता ॥
निराश मन पर आशा छाई
भूले पथ पर विपदा आई
हित अनहित का ज्ञान हुआ जब बढ़ा प्रेम का नाता ॥

—卐—

(गीत ७८)

पीले संघ नाम का प्याला

इस प्याले को पी सकता है, क्या अदना क्या आला ।
हिन्दू मात्र केवल हो प्यारे क्या गोरा क्या काला ॥
धर्मी कर्मी बन जाता है इसको पीने वाला ।
डरा सकता नहीं फिर उसको तीर तमंचा भाला ॥
वीर शिवा ने इसको पीकर मां का बन्धन टाला ।
अन्धकार अज्ञान मिटाकर भारत क्या उजाला ॥
इसको पी पंजाब केशरी बना लाजपत लाला ।
लेखराम ने इसको पीकर अपना देश सम्हाला ॥

(गीत ७९)

यही दिलमें समाई है

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है ।
करे आजाद भारत को यही एक धुन लगाई है ॥
नहीं है ज्ञान क्या उनको कि भारत वीर भूमि है ।
करे बर्बाद हम उनको यही दिल में समाई है ॥
कटा देंगे गला बेशक मगर ये भूल ना जाना ।
मरेंगे हम मिटा करके यही सौगन्ध खाई है ॥

———

[गीत ८०]

भारत की यह अमर कहानी

सुनो २ ऐ दुनियां वालो

भारत की यह अमर कहानी ॥

जगत गुरु कहलाता था यह

सुखी थे सब नर नारी

त्यागी और ब्रह्मचारी नेता

होते थे अधिकारी

योधाओं की कमी नहीं थी

शूर वीर बलधारी

योगी और तपस्वी नेता

कर्मवीर और ज्ञानी ।१।

सुनो सुनो ऐ दुनियां वालो........

कठिन तपस्या भागीरथ की

गंगा जी को लाए

गऊ ब्राह्मण प्रतिपाल भूपति

दिलीप राज कहलाए

गंगा जी का शीतल जल

अब सुख शान्ति बरसाए

प्रलय तलक नहीं भूल सकेंगे

गंगा का निर्मल पानी ।२।

सुनो २ ऐ दुनिया वालो........

दानवीर हरिश्चन्द्र सा राजा

सत सेवा व्रत धारी

पुत्र नारी दिये बेच धर्म पर

आ गई अपनी बारी

आप भी बिक गए भंगी के घर
हो कर हीन भिखारी
सदा जगत को याद रहेगी
उन की अमर कहानी ॥३॥
सुनो २ ऐ दुनिया वालो.........
लंकाधीश जब रावण जैसे
बन बैठे व्यभिचारी
राम प्रभु आए थे जग में
धनुष बाण के धारी
भक्तों के वे हितकारी थे
पापियों के संहारी
एक बाण से रावण मारा
लंका हुई वीरानी ।४।
सुने २ ऐ दुनिया वालो.........
पाप बढ़ गया दुर्योधन का
कृष्णचन्द्र घबराए
लेकर चक्र सुदर्शन माधव
रण भूमि में आए
हे अर्जुन उठ कर्मवीर बन
यह सन्देशा लाए
कौन किसी का है इस जग में
सारा जग है फानी ।५।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वाले.........
समय २ पर लाखों योद्धा
भारत भू पर आए
कभी राम बन कभी कृष्ण बन
यह सन्देशा लाए

इसी सन्देश को ले कर
माधव ने सोते वीर जगाए
उठो वीर अब जाग उठो
तुम मां की लाज बचानी ।६!
सुनो २ ऐ दुनिया वालो
भारत की यह अमर कहानी

(गीत ८१)

आगे बढ़े कदम आगे बढ़े कदम

आगे बढ़े कदमतेरा आगे बढ़े कदम, आगे बढ़े कदम ।
अपना न देश कीजिये गैरों के हवाले ।।
यह माँ की आबरू है इसे मर के बचाले ।
तेरा ही खून होगा तेरे जख्म का मरहम ॥ आगे० ॥
वतन पै सर कटाने से होता है सर बुलन्द ।
बत्ती कटे चिराग की हो रोशनी दुचन्द ॥
लिखता है कलम खून जब होता है सर कलम, उठाले—

(गीत ८२)

प्यारा भारत स्वर्ग समान

प्यारा भारत स्वर्ग समान ?
विजय करी लंका राम ने,
कहा सम्भालो हनुमान ने
इस पर नहीं अधिकार हमारा,
बोले राम भगवान !! प्यारा भारत०

दोनों हाथों में दो तलवारें
रानी झांसी मारे हलकारे
सम्राज्ञी जब निकली रण में
किया साफ मैदान !! प्यारा भारत०

शेर शिवा जी जोश में आया
जंगे आजादी बिगुल बजाया
ताना जी ने आगे बढ़ कर
गवांदी अपनी जान ! प्यारा भारत०

आओ वीरों हिन्दु जवानों
फिर अपना कर्तव्य पहिचानो
मांग रही है माता तुमसे
प्राण करो बलिदान ॥
प्यारा भारत स्वर्ण समान

[गीत ८३]

निशान भगवा फड़क रहा है

हम हिन्दुओं के हृदय में हरदम निशान भगवा फड़क रहा है
अग्नि शिखा सम कान्ति सुहाये, त्याग भाव का गान सुहाये
चित्तौड़गढ़ की याद दिलाता निशाना भगवा फडक रहा है।
छत्रसाल शिव प्रताप गुरु के दुर्गावती रानी लक्ष्मी के
बलिदानों की याद दिलाता निशान भगवा फडक रहा है
हल्दी घाटी के भीषण रण में पानीपत के घोर समर में
वीरों का आदेश सुनाता निशान भगवा फडक रहा है
निशानिराशा अन्त दिखाये, भेद दास्य की कृष्ण घटाएं
त्याग राग की पक्तियां लिये यह निशान भगवा फडक रहा है ।

मंद पडी अंगार हृदय में छिपी निराशा की रचा में
राख उडा अंगार जलाये - निशान भगवा फडक रहा है।
बढ़े चलो हिन्दू मिलकर के देखें ध्येय मार्ग तय करके
हिमगिर के अति उच्च शिखर से निशान भगवा फडक रहे हैं

———

(गीत ८४)

मुकद्दर को जगा दे

सोये हुए भारत के मुकद्दर को जगादे
फिर दर्द भरे दिलसे जमाने को हिला दे
जमाने को हिला दे। सोए हुए—

क्यों पांव थक गये तेरे दिल हुआ चकनाचूर
ऐ भोले मुसाफिर तेरी मंजिल है अभी दूर
जाग जल्दी से जरा तू पांव उठा दे
फिर दर्द भरे दिल से जमाने को हिला दे

तू मर्द है तू शेर है मैदां में अकड़े जा
आजायें मुकाबिले से तो तूफान से लड़े जा
हर खौफ को हर डरको तू अब दिल से मिटा दे
फिर दर्द भरे दिलसे जमाने को हिला दे

आंधी हो या तूफान हो दरिया कि हो सागर
जो आये तेरी राह में पामाल उसे तू कर
इन्सान किसे कहते हैं दुनियां को दिखा दे
फिर दर्द भरे दिल से जमाने को हिला दे
सोये हुए भारत के मुकद्दर को जगा दे
फिर दर्द भरे दिलसे जमाने को हिलादे
जमाने को हिला दे। सोए हुए—

———

(गीत ८५)

अब तो क्या बनायेंगे

उठ पड़े अब हम हिंदु तो क्या बनायेंगे
शेर थे हम शेर हैं हम यह दिखायेंगे
संघ में आकर एक हो शक्ति बढ़ायेंगे
शत्रु हमको संगठित पा भाग जायेंगे
तन भी देंगे मनभी देंगे धन लगायेंगे
'बन्धनों से हिंदु भूमि को छुडायेंगे
लडने को तैयार हो हम लडभी जायेंगे
मरने के पश्चात हम मर भी जायेंगे
वीर हैं रण धीर हैं हम बल दिखायेंगे
भगवा ध्वज संसार में ऊंचा लहरायेंगे

(गीत ८६)

सुख से रहती आई

जिस जाति में मेल होगा
सुख से रहती आई
भाई जिसकी लाठी भैंस उसीकी
दुनियां कहती आई
जिस जाति में फूट हैजी
मिट जाय ना झूट है जी
उसके घर में लूट होगी
दुनियां कहती आई
भाई जिसकी लाठी भैंस उसीकी
जो जाति तू मेल करले
जो चाहे सो खेल करले

सब हिन्दुओ का मिल करके
केशव ने फरमाई ॥
भाई जिसकी लाठी भैंस उसीकी

बिलाऊ आंखें मीचता
कबूतर आंखें मीचता
कबूतर तेरी नीचता यह
यह तुझको आई ॥
भाई जिसकी लाठी भैंस उसीकी

(गी ८७)

लड़ाई जब होने लगी

क्षत्री वीर उठे ललकार
लड़ाई जब होने लगी
कोई २ लेरहया कर में भाले
कोई लेरहया तलवार
क्षत्री वीरों की आंखों से
झड़ २ पड़े अंगार
लड़ाई जब होने लगी........
उधर की फौजें डेढ़ लाख थी
इधर की बीस हजार
पानीपत के समरांगण में
बाजी थी तलवार
लड़ाई जब होने लगी
युद्ध देख कर मुहम्मद गोरी
करने लगा विचार

अब की गलती खाई मैंने
आया सोलहवीं बार ॥ लड़ाई
कट २ मूंढ़ गिरे धरती पर
बहें खून की धार
मारते जावें बढ़ते जावें
क्षत्री राज कुमार ॥ लड़ाई

(गीत ८८)

खुल गये द्वार काराओं के

टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के !
जय घोष व्योम में गूंज उठा, भर गये गले मालाओं से !

मिल गये गले चिर-बिछुड़ों के
मधुमय बसन्त फिर से आया
झंकृति हो उठे मूक हृदय,
नव-विजय-गर्व पुर में छाया ।
बन्दी उमड़ें काराओं से,
खिल उठे सुमन लतिकाओं के ।

टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के ।
जयघोष व्योम में गूंज उठा, भर गये गले मालाओं से ॥

वह राष्ट्रप्राण, वह अधिवासी,
वह एक ज्योति हम प्राणों की ।
कारा से निकली जाग उठी,
वह प्रलयकाल की ज्वाला सी
प्राचीर झुक गई कारा की,
जब बढ़े तेग धाराओं के ।

टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के।
जयघोष व्योम में गूंज उठा, भर गये गले मालाओं से॥

भारत माता का भाल उठा,
खुल गई नींद तरुणाई की
हिमगिरि सा हिन्दू-राष्ट्र उठा,
सागर ने भी अंगड़ाई ली।
स्वागत में नवयुगधारी के—
खुल गये बांध सरिताओं के।

टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के।
जयघोष व्योम में गूंज उठे, भर गये गये मालाओं से॥

केशव की कल कीर्ति गूंजी,
वह ध्वनित हुई दिशाओं में।
अब संघ साधना सफल हुई,
ढह गये दुर्ग बाधाओं के।

टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के।
जयघोष व्योम में गूंज उठे, भर गये गले मालाओं से॥

हम आज कर चुके हैं अंकित,
बलिदान शान्ति के रंगों से।
भावी-भारत इतिहास-सृजन—
होगा इन रक्त तरंगों से।
मुखरित भारत का यश होगा—
सब सप्त-सिन्धु धाराओं से।

टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के।
जयघोष व्योम में गूंज उठे, भर गये गले मालाओं से॥

ललनाओं ने पाये प्रियतम।
भ्राता मिल गये भगिनियों से।

हो गई विजय मानवता की—
दानवीय दुष्ट बाधाओं से।
घर घर में गूंजे मिलन-राग,
मिल गये पुत्र माताओं से।
टूटे बन्धन शृंखला खुली, खुल गये द्वार काराओं के।
जयघोष व्योम में गूंज उठे, भर गये गले मालाओं से॥

—शिवनाथ 'शैलेय'

(गीत ८६)

वीरता

जागृति का शंख फूंक भरो हृदय के बीच
सोते से जगा कर पहुंचा दो जोरों में।
धर कर त्रिशुल अग्निकण उमड़ा दो मां।
प्रलयंकर ज्वाला जला दो हिय कोरों में॥
हमको पिलाओ, इस अमिय सुशक्ति युत
विप्लवी हम सब भर शौर्य करोड़ों में।
मां मेरे यौवन समुद्र में उठा दो लहर
भाग जाये शत्रु दल एक ही हिलोरों में॥

(गीत ६०)

रो रो के पुकारे

हिन्दू हिन्दू तेरी माता मुझे रो रो के पुकारे।
है कौन जो बिगड़ी दशा मेरी संभारे ॥
सन्तान तू उन वीरों की बलिदान हुये जो ॥ बलिदान० ॥
सर्वस्व निछावर कर गये वे तेरे दुलारे ॥ है कौन० ॥
धोके में आके गैरों को भाई न समझना ॥ भाई न० ॥
वह पुत्र नहीं है मेरे तेरे शत्रु हैं सारे ॥ है कौन० ॥
जीवन का अन्त एक दिन करना ही है तुझको ॥ एक दिन। ॥

(गीत ६१)

कबड्डी और जीवन

क्यों डरता है अरे खिलाडी खेल खेल तू निभय है।
देख कबड्डी कह कर प्रति द्वन्द्वी पाला देने आया
मार गया तेरे साथी को पकड नहीं कोई पाया
तनिक सहारा जो तू देता शत्रु नहीं जाने पाता
स्वयं शत्रु भी मर जाता तेरा साथी भी रह जाता
खेल वीरता चतुराई का तेरा सब को परिचय है ॥
देखो शत्रु अकेला भी कितना अन्दर घुस आया
उसे न मरने का भय है साहस की सारी माया है
पकडो उसे न जाने देना वापिस बढ़ जाओ आगे
शत्रु मोर्चे में घुस आया आया योग्य तुम्हारा है

ऐसा कौशल दिखला दे तू जिससे जग को विस्मय हो ॥—
धूम मचादे रण कौशल की प्रति द्वन्द्वी घबरा जाये
तुझे पकड कोई नहीं पावे एक एक कर मर जावे
सीना सम्मुख रख निर्भयता से पाला देने जाना
पीठ नहीं देना शत्रु को साहस से वापिस आना
रहे अकेले ही अब तुम हो, साथी गये तुम्हारे मारे।
साथ दिया जो तुमने होता जाते कभी न मारे।
कायरता का बाना पहिने कब तक जीते रह पाओगे।
एक अकेले रह कर भी तुम आखिर में मारे जाओगे।
आलस को दे छोड़ खिलाड़ी जीवन तेरा मंगलमय हो ॥
मर जाओगे तो क्या होगा पुनरपि जीवन पाओगे।
खेल खेल कर ही जीवन का सच्चा कर्तव्य निभाओगे।
व्यक्ति अमर है अरे तुम्हारी छाया केवल मरती है।
और खेल कबड्डी खेल अमरता भाव हृदय में भरती है।
त्याग, मरने का भय व्यक्ति, फिर सेखेल में तेरी जय हो ॥

पुष्पों का नहीं अर्चन

मेरी जलती हुई चिता पर कभी न फूल चढ़ाना।
मैंने कभी न जीवन भर में कोई पुण्य किया है ॥
मैंने कभी न शीश काट कर मां को अर्घ दिया है।
मैंने कभी न आशा की मां को माला पहिनाई।

मैंने कभी न प्राणों के मन्दिर में ज्योति जगाई।
मेरे इस मिट्टी के शव पर कभी न हाथ लगाना॥
मेरी जलती हुई........

मैंने कभी न हंस हंस कर कांटों पर बैठना सीखा।
मैंने कभी न फांसी के तख्ते पर चढ़ना सीखा॥
मैंने कभी न आहों से ही निज जीवन की राह चुनी है।
मैंने कभी न हाथों में हथकड़ियों की झंकार सुनी है।
मेरे मस्तक पर लोहू का कभी न तिलक लगाना॥
मेरी जलती हुई.........

मैंने कभी न जीवन में मजदूरों का इतिहास सुना है।
मैंने कभी न कृषकों के नवशिशुओं का परिहास सुना है॥
देख न पाया जीवन में मैं जलती दीप शिखायें।
देख न पाया जौहर कर जलने वाली ललनायें॥
मरते समय न मेरे मुंह में गंगा जल टपकाना॥
मेरी जलती हुई.........

मैंने कभी न अभिमानी के मद को चूर किया है।
मैंने कभी न अपमानित हो अप यश दूर किया है॥
मैंने कभी न सोये मुर्दों में जीवन डाला है।
मैंने कभी न दुखियों के संग अपना तन पाला है॥
मरते समय न मुझको गीता का उपदेश सुनाना।
मेरी जलती हुई........

मैंने कभी न जीवन भर जग में विद्रोह मचाया ॥
मैंने कभी न शोषित हो शासक नाम मिटाया ।
मैंने कभी न जीवन में वीरों के यश गाये हैं ॥
मेरे कर गिरते मानव पर कभी न झुक पाये हैं ।
राम नाम की सत्य भावना कभी न मुझे सुनाना ॥
मेरी जलती हुई........

मेरे शव को तूफानी रजनी में कहीं लिटा देना ।
सबकी दृष्टि बचा कर मुझसे फटे चिथड़े ढक देना ॥
मेरी जलती हुई.........